carefully. If the book is disfigured or marked or written on while in your possession the book will have to be replaced by a new copy or paid for. In case the book be a volume of set of which single volumes are not available the price of the whole set will be realized

पृथ्वी थियेटर्स रचित



कलाकार

लेखक

श्री रामानंद सागर

श्री पृथ्वीराज कपूर

कला देश की सेवा में

पृथ्वी थियेटर्स

पृथ्वी थियेटर्स प्रकाशन, बम्बई

प्रथम संस्करण, सितम्बर १९५१
1951

मूल्य ३) रु.

प्रकाशक
श्री पृथ्वीराज कपूर,
अध्यक्ष, पृथ्वी थियेटर्स,
बम्बई ४

मुद्रक
र. अ. मोरमकर,
श्रीलक्ष्मी-नारायण प्रेस,
३६४ ठाकुरद्वार, बम्बई

This is a very good book such a good book that the reader forgets & is unconscious about himself. He is

समर्पण

उन सब कलाकारों को

जिन्होंने

This is a ...

कला को पूज्य माना

और

This is a very ...

पूजनीय बनाया।

कलाकार की कहानी

एक नायक है जिसमें freedom of ...

वहा एक नवयुवक सरजू है जो औरों का ...

है। गानों में एक कलाकार as a ...

होता है। इसके द्वारा किताब में ...

" कलाकार "

यह ड्रामा ८-९-१९५१ को पहली बार रॉयल ऑपेरा हाऊस, बम्बई के स्टेज पर खेला गया और निम्न लिखित कलाकारों ने उसमें भाग लिया-

— स्टेज पर —

(यह सूची प्रवेश के अनुसार है)

१. पुजारी ... ... ब्रजमोहन व्यास
२. बिशना ... ... काशीनाथ
३. सरजू ... ... श्रीराम
४. गौरां ... ... उज़रा मुमताज़
५. चौधरी ... ... सोहन लाल
६. लखमी ... ... सती देवी
७. लक्खी ... ... मंसाराम
८. बंसी ... ... सत्य नारायण
९. गांव की लड़कियां पुष्पा, कुमुदिनी, कुलदीप, इन्दुमती, ... अम्बिका, रानी आज़ाद, लीला, ... शौकत कैफ़ी, शीतल
१०. गांव के लड़के राजेन्द्र, सुरेश, रवीन्द्र, सुन्दर, चन्द्रमणि, विशी, प्रयाग, सुदेश, सुदर्शन, बांकेविहारी, ... राजन, नायडू, कन्हैयालाल
११. मास्क डांस ... ज़ौहरा सैगल तथा सत्य नारायण
१२. कलाकार ... ... पृथ्वीराज कपूर
१३. नत्थु ... ... एम. इस्माईल
१४. मोहनी ... ... आरमलीन
१५. रमेश ... ... शम्मी कपूर

" कलाकार "

— स्टेज के पीछे —

कहानी, वार्ता व गाने	पहला व दूसरा अंक—रामानन्द सागर
	तीसरा अंक—पृथ्वीराज कपूर
संगीत	दीन मुहम्मद तथा फ़ज़ल मुहम्मद
नृत्य	ज़ोहरा सैगल तथा सत्य नारायण
सेटिंग्ज़	जहाँगीर मिस्त्री
सहायक	नारायण तथा विठोबा
चित्रकारी (पार्श्वभूमि)	गणपति भाई
सहायक	विमल कान्त तथा वसन्त
तस्वीरें	व्यास कपूर
ध्वनि तथा मंच प्रबंधक	धनजी शाह
सहायक	रामकृष्ण
प्रकाश	विठ्ठल जोशी तथा रामदास
सहायक	वसन्त
वेषभूषा	व्ही. एस्. आठवले
सहायक	पी. टी. कपरे तथा एच. सी. कर्णे
वेष परिवर्तन	माधव पै तथा जी. एल. देशमुख
सहायक	सावंत
सामग्री वितरक	शंकर भोंसले
निर्माण व्यवस्थापक	नन्दकिशोर कपूर
	प्राणनाथ खन्ना
सहायक	धर्मवीर खन्ना
कला	उज़रा मुमताज़

निर्माता तथा दिग्दर्शक पृथ्वीराज कपूर

सहायक दिग्दर्शक मानिक कपूर
योग मित्र

कलाकार

पहला अंक

पहला सीन

[स्टेज पर बिलकुल अंधेरा । मंदिर में जलने वाले एक चिराग़ और पहाड़ों में चमकने वाले सितारों के अलावा]

[पुजारी मंदिर और उसके सामने वाले थड़े को धोता हुआ गुनगुना रहा है ।]

[गीत ख़तम होते होते पहाड़ों के पीछे सुबह की रोशनी आती है । बिशना नहा कर झोंपड़ी और मंदिर के बीच के रास्ते में से दाख़िल होता है । नंगे बदन, धोती पहने वहां आकर अंगोछा झाड़ कर सूखने के लिये अपनी झोंपड़ी के साथ लटका देता है ।]

पुजारी : (सीढ़ियां धोते हुए) गोरां जागी नहीं अभी ?

बिशना : अभी तो न जागी दीखी।

पुजारी : पूजा का समय हो गया, फूल भी नहीं आये ।

बिशना : ठहरिये मैं जगाता हूं ।

[इतने में दाहिने हाथ की छोटी पहाड़ी पर से बंसरी की आवाज़ आती है और सरजू बंसरी लिये चोटी पर आता है और वहीं बैठता है ।]

बिशना : (झोंपड़ी के पास बदन पोंछते हुए जाता है) गोरां ! बेटी अब जागने का समय आ गया ।

गोरां : (अंदर से) ऊँ हूं ।

बिशना : नहीं बेटा प्रभात हो गई—आरती का समय होने वाला है ।

[सरजू पहाड़ी से भागता हुआ नीचे उतरता है और दूर से ही कहता चला आता है ।]

सरजू : बापू मैं बताऊँ-मैं बताऊँ बापू, नहीं उठती है तो इस पर पानी डालिये।

गौरां : (छम से बहार आकर) इस पर पानी डालिये, बड़ा आया सवेरे उठने वाला।

सरजू : और नहीं तो तुम्हारी तरह हूं-सुबह दस मील पैदल चलकर भी आरती से पहले पहुंच गया हूँ।

गौरां : तो न आते, किस वैद्य ने कहा था रात में चलने को। अंधेरे में पहाड़ से गिर जाते तो ?

सरजू : न आता तो भगवान की आरती कैसे सुनता !

पुजारी : (मंदिर के थड़े से) देखा जिन्हें भक्ति की लगन होती है उन्हें न नींद आती है, न किसी बात से डर।

सरजू : यह किसे सुनाते हो पुजारी जी, ये तो बस यही चाहती है कि भगवान की मूर्ति की तरह हर वक्त सोई ही रहे। जिसे ज़रूरत हो वह खुद ही आए और इसकी आरती उतार कर जगाये।

विशना : (लाड़ के अंदाज़ से) नहीं, मेरी बेटी को तुम क्या जानों, कितना काम करती है।

गौरां : (अल्हड़पने से) बाबा ये हर रोज़ प्रभात इतनी सवेरे क्यों हो जाती है ? सूर्य भगवान को क्या और कोई काम ही नहीं होता कि बस दिन निकलते ही रथ पे चढ़ के आ जाते हैं।

[पुजारी और विशना हंसते हैं]

विशना : यही तो उनका काम है बेटी ! अच्छा अब तू जा, जल्दी से नहा के पूजा के लिये फूल तोड़ ला।

गौरां : (सरजू की तरफ़ देखकर जैसे जाना नहीं चाहती) इतनी जल्दी क्या है बाबा, अभी तो गांव की एक भी लड़की पानी लेने नहीं आई।

विशना : (पहाड़ियों के पीछे की तरफ़ देखकर) गांव वाले भी बस आते ही होंगे, तू जा जल्दी कर, देख पुजारी जी इंतज़ार कर रहे हैं।

[गौरां बे मन बाईं तरफ़ जाती है]

[सरजू अपना थैला कन्धे से उतार कर दाहिनी तरफ़ डाक बंगले के बाहरी जंगले का दरवाज़ा खोल कर अंदर जाने लगता है तब विशना पूछता है]

विशना : किस ढोक पर गये थे सरजू ? नाले वाली ढोक पर या ऊपर दरंग में ?

सरजू : ऊपर गया था दरंग में। नालेवाली ढोक पर तो अकेले चौधरी की गैयों के लिये भी घास पूरा नहीं होगा।

पुजारी : (पहाड़ों की तरफ़ देखता हुआ) लेकिन ऊपर तो अभी चोटियों पर बर्फ़ दिखाई देती है, क्या वहां घास निकल आई है ?

सरजू : हां पुजारी जी, उधर गंगासर के दाहिनी तरफ़ जो छोटा सा मैदान का टुकड़ा है वहां से तो बर्फ़ बिलकुल पिघल गई है।

पुजारी : फिर तो गांव के ढोर खूब मज़े में होंगे। अब के तो किसी की गैयों को कोई बीमारी भी नहीं हुई।

सरजू : नहीं कोई ख़ास नहीं, हां कल जब मैं शिब्बू चौधरी की गैयां वहां छोड़ने जा रहा था तो रस्ते में सतपुड़े के पास सन्तू मिला था, उसकी एक गाय को मुंहखुरा आ गया है सो उसे नीचे गांव में छोड़ने आ रहा था।

विशना : हूं ! वह उसकी लाखी गाय सदा ही बीमार रहती है।

पुजारी : शिवशंकर की दया चाहिये। (सरजू अंदर जाने लगता है)

विशना : क्यों मंदिर में नहीं आते हो ?

सरजू : (अंदर दाख़िल होता हुआ) आया बस यह थैला रख लूं ज़रा।

विशना : मगर तुम पैदल क्यों आये हो, घोड़ा ढोक पर ही छोड़ दिया क्या ?

सरजू : हां जाते हुए उसके दो नाल निकल गये थे। मैंने सोचा वापसी में

अंधेरा है, कोई पत्थर वत्थर लग गया तो ज़ख्मी हो जायगा बेचारा। आज नए नाल बना के भेज दूंगा। रहमाना ढोक पर ही है, ठोक देगा।

[पुजारी जी ने सर हिला के गोया ठीक है कह दिया। बिशना माला लिये मंदिर की तरफ़ जाता है। सरजू डाक बंगले के अंदर घुसता है, वह बड़े Rustic (गवांरु) अंदाज़ में गुन गुनाता है]

लोकोतां दें देने तुहाडा मैना-माये मैं वैरागिन होइयां

[पुजारी और बिशना मंदिर में जाते हैं। सरजू डाक बंगले से निकल मंदिर की सीढ़ियां चढ़ घण्टा बजाता है, हाथ जोड़ शिवजी को दण्डवत करता है, तभी गौरां फूल लिये आती है। हाथ में सुई धागा है]

गौरां : (हार पिरोती हुई) बड़े भगत हो गये हो।

सरजू : मगर उससे क्या फ़ायदा।

गौरां : क्यों ?

सरजू : देवी तो हमसे खुश होती नहीं।

गौरां : पूजा शिवशंकर की करते हो और खुश करना चाहते हो देवी को ?

सरजू : पूजा तो देवी ही की करता हूं मगर उसके लिये जाना पड़ता है शिव मंदिर में।

[सरजू उसके फूलों को छेड़ता है और एक फूल उठाकर उसके सर में लगाता है]

गौरां : क्या कर रहे हो ? ये पूजा के फूल हैं।

सरजू : इसीलिये तो इन्हें देवी पर चढ़ा रहा हूं।

गौरां : Blush (झेंप करके) ठहरो, मैं पुजारी जी से जाकर कहती हूं कि सरजू शिव मंदिर में किसी और की पूजा करने आता है।

[गौरां उठकर मंदिर में जाने लगती है तभी दाहिनी तरफ़ से चौधरी, लक्खी, लखमी और छोरे छोरियां शिवशंकर शिवशंकर आरती गाते आते हैं। पुजारी जी श्लोक बोल रहे हैं।]

आरती :—

शिवशंकर–शिवशंकर–जगदम्बे जगदम्बे
शिवशंकर–शिवशंकर–जगदम्बे जगदम्बे

आत्मा त्वं गिरिजा मतिः सहचराः, प्राणाः शरीरं गृहम्।
पूजा ते विषयोपभोग रचना, निद्रा समाधिस्थितिः ॥
सञ्चारः पदयोः प्रदक्षिणविधिः, स्तोत्राणि सर्वा गिरो।
यद्यत्कर्म करोमितत्तदखिलं, शम्भो तवाराधनम् ॥
कर चरण कृतं वा, कायजं कर्मजंवा
श्रवण नयन जंवा, मानसं वा ऽपराधम्।
विहितमविहितंवा, सर्वमेतत्क्षमस्व
जय जय करुणाब्धेः श्री महादेव शम्भोः ॥

[आरती खत्म होने के बाद गौरां और सरजू सब को प्रसाद बांटते हैं। सब बैठ जाते हैं, तब बातें होती हैं]

चौधरी : क्यों भई सरजू गैयां पहुंचा दीं ढोक में ?

सरजू : हां चौधरी जी।

चौधरी : वहां सब लोग राज़ी खुशी थे न ? बरखा वरखा ने तो तंग नहीं किया ?

सरजू : सब ठीक ठाक है, सिर्फ़ सन्तू वापस आ गया है, अपनी लाखी गाय लेकर।

चौधरी : हां वह कल रात ही मिला, कहता था कि वहां गांव के छोरे छोरियां मिलकर बड़ा ऊधम मचाते हैं।

सरजू : उसका क्या है, वह तो चाहता है कि बस सारे उसी की तरह मुंह सी कर गूंगे हो जायं। न कोई हंसे, न वहां कोई कबड्डी खेले और न कोई गीत गाये। भला ढोक पर इस तरह चल सकता है ?

१ लड़का : ढोक पर क्या गांव में भी नहीं चल सकता, अब हम उसके लिये गीत छोड़ देंगे, क्यों बंसी ?

बंसी : वाह गीत गाना तो हम भगवान के कहने पर भी न छोड़ें।

सरजू : वह खुद बेसुरा हो गया है न, इसीलिये।

सब लड़के : हां, यही बात है। (सर हिलाते हैं)

चौधरी : मगर अजीब बात है, एक ज़माना था कि वह खुद सबसे अच्छे गीत गाया करता था, अब भगवान जानें उसे क्या हो गया है ?

पुजारी : यह उसका दोष नहीं चौधरी, दर असल जब से बन्तो मरी है उसे सब कुछ भूल गया है।

लखमी : कौन गौरां की मां ?

चौधरी : हां ! बन्तो वो गीत कितना अच्छा गाती थी—(बे सुरे अन्दाज़ में गाने की कोशिश करता है)

पीलू पकियां ते घर आ सजना

लखमी : ये गाना उसने मुझसे सीखा था। इसके साथ वह नाचती कितना अच्छा थी।

चौधरी : बस इसी गीत के सामने तो सन्तू भी हार गया था।

लखमी : खुद ही नहीं हार गया था बल्कि अपना दिल भी हार बैठा था।

पुजारी : इसीलिये तो वह बन्तो को पा न सका। औरत को पाने के लिये उसे जीतना पड़ता है लखमी। (विशने की तरफ़ देखकर) इस विशने को देखा था न, किस तरह अपनी बंसी के सुरों पर उसे नचाया करता था, इसने बन्तो के गीत से हार नहीं मानी बल्कि अपनी बंसी के ज़ोर पर उसे जीत लिया।

चौधरी : हाय, कितनी अच्छी जोड़ी थी उनकी भी। नागराज के उत्सव पर कैसी धूम मचाया करते थे दोनों। अगर वह ज़िन्दा रहती तो आज गौरां को भी गीतों में कोई न हरा सकता। उसे इतने गीत याद थे।

विशना : (गौरां के सर पर हांथ फेरते हुए) क्यों पुरान जख्म हरे करते हो चौधरी, मेरी बेटी जीती रहे, ये किससे कम है।

लक्खी : भई जीती रहे—नाचने में इसका जोड़ कई पहाड़ों में नहीं मिल सकता।

बंसी : नाचना तो उसे सरजू की बंसी ने सिखाया है लक्खी चाचा (सरजू शरमा जाता है)

चौधरी : (सरजू की पीठ पर हाथ मार कर) अबे शरमाता क्यों है, ठोक तो है !

२ लड़का : दिल तो ये भी हार चुका था चौधरी।

चौधरी : नहीं हारेगा नहीं छोरा, ये तो जीतने वाला है, जीतने वाला।

१ लड़का : चौधरी जी, चौधरी जी तुम लखमी चाची से हारे थे या जीते थे (लखमी शरमा कर उस लड़के को प्यार से एक धप्पा मारती है।)

लक्खी : अरे ये भी तो लखमी भाभी के उस गीत पर मर मिटा था—

पीलू पकियां ते घर आ सजना

[पहाड़ी सुरों पर खतम—लखमी शरमाती है]

चौधरी : भई हम तो हार में ही अपनी जीत समझते थे।

[लड़के लड़कियां क़हक़हा लगाते हैं, काना फूंसी होती है]

पुजारी : ऐसी बात है, भई हमने तो कभी भाभी का गाना ही नहीं सुना।

विशना : यह आज की बात थोड़े ही है पुजारी जी, इसे तीस बरस हो गये हैं बीबी का गुलाम हुए। तब तो तुम न जानें किन शहरों की ख़ाक छानते फिर रहे थे। तुम्हें तो यहां आए अभी कुछ ही साल हुए हैं।

पुजारी : हां मैं जब आया था तो नागराज का उत्सव हो रहा था, सारे गांव में क्या धूम मची हुई थी।

लक्खी : वह तो बहुत बाद की बात है पुजारी जी, तुमने चौधरी की जवानी नहीं देखी। उस वक्त ये पठा ऐसा था कि इस पहाड़ का एक भी

गांव ऐसा न था जिसकी लड़कियां इसके पीछे पीछे न भटकती फिरती हों। जिस ढोक में ये पहुंच जाता-आसपास के सब गांव की लड़कियां किसी न किसी बहाने अपनी गाय बकरियां लेकर वहां पहुंच जातीं। खुद मेरी बीबी शादी होने के बाद तक भी इस कम्बख्त के पीछे पीछे फिरती रहती थी।

पुजारी : तो फिर तुम्हारा क्या हाल हुआ होगा ?

लक्खी : मैं क्या कर सकता था पुजारी जी, तुम तो जानते ही हो कि हमारे यहां किसी पर कोई बंधन नहीं होता। यहां तो जो किसी से प्यार करता है उसे कोई रोक नहीं सकता। वह तो तुम अपने उन शहरियों की बातें सुनाया करते हो जहां अपनी मर्ज़ी से शादी भी नहीं हो सकती, और अगर शादी हो जाती है तो गोया फांसी का फंदा गले में पड़ जाता है, जिससे या तो फन्दा ही टूट जाय या अपनी ही जान निकल जाए, तब कहीं जाके छुटकारा मिलता है। हमारे यहां तो प्रकृति के विरुद्ध अगर कोई ऐसा ख्याल भी करे तो भगवान शंकर का कोप सारे गांव को भस्म कर डाले। एक बार इसी तरह हुआ तो था।

[लड़के लड़कियां जिज्ञासा से देखते हैं]

पुजारी : क्या ?

[सब लोग लक्खी को घेर लेते हैं]

लक्खी : हमारे दादा सुनाया करते थे कि एक बार उनके पुरखों में किसी ने इसी तरह अपने गांव की एक लड़की को दूर के किसी पहाड़ के लड़के से प्यार करने पर रोक दिया था, बस—फिर क्या था भगवान शंकर को क्रोध आ गया। ये सारे पहाड़ दरख्तों की टहनियों की तरह—इस तरह इस तरह झूलने लगे, धरती के अंदर से एक भयानक गड़गड़ाहट की आवाज़ आने लगी और उस अहरबल की चोटी से ये दो

बड़े बड़े पत्थर आकर गिरे जिनके नीचे सारा गांव दब कर मर गया। सिर्फ़ वह लड़की बच गई। यह जो दो टीले तुम्हें दिखाई देते हैं यह वह ही दो पत्थर हैं। फिर आसपास के गांव से लोगों ने आकर उनकी पूजा की और ये मंदिर यहां स्थापित किया और उस लड़की को दुल्हन बना कर यहां से चार पहाड़ परे उस लड़के के घर पहुंचा कर आए, तब कहीं वह गड़गड़ाहट बन्द हुई। (सब लड़के लड़कियां शिव शम्भू कह कर अपनी अपनी जगह बैठ जाते हैं, थोड़ी देर ख़ामोशी) इसीलिये तो कहता हूं कि मैं क्या कर सकता था। वह तो लखमी भाभी ने इस शैतान को इस तरह क़ाबू कर रखा था कि बस इसकी निगाह किसी दूसरी तरफ़ उठी ही नहीं।

सरजू : तब तो पुजारी जी देख लो चौधरी ने हार कर भी चाची को पा लिया।

पुजारी : इसे हारना नहीं कहते सरजू, चौधरी तो ख़ुद Champion (चेम्पीयन) था।

बंसी : यह चम्पन क्या होता है पुजारी जी?

पुजारी : उधर शहरों में Champion (चेम्पीयन) उसे कहते हैं जो मुक़ाबले में सबको हरा दे, सो वह ही चौधरी ने किया, उसने सब लड़कियों के दिल जीत कर चौधरानी के क़दमों में रख दिये-कि ले अब बता।

लखमी : मगर पुजारी जी भाभी थी भी इसी लायक़। गीत वह गाती थी कि एक टोक पर गाए तो दस टोकों में लोग बैठ कर सुनें। जब यह गाती थी तो इसके साथ इन पहाड़ों की चोटियां गाती थीं, यहां के झरने गाते थे।

पुजारी : और तुम लोग?

लखमी : ये तो ख़ुद मेरे पीछे पीछे पागलों की तरह फिरा करता था।

[सब हंसते हैं]

सरजू : तो चाची हमें भी वह गीत सुनाओ न कभी।

सब : हां चाची सुनाओ न, हां चाची सुनाओ न।

चौधरी : सुना दो न, हम भी फिर से जवान हो जाएगें।

लखमी : (बिगड़ कर) रोज़ तो सुनते हो फिर भी कहते हो !

सरजू : अच्छा तो चाची रोज़ छुप छुप कर चौधरी जी को गीत सुनाती है, अब तो हम नहीं छोड़ेंगे।

सब : हां हां नहीं छोड़ेंगे, ज़रूर सुनेंगे, नहीं छोड़ेंगे, ज़रूर सुनेंगे।

लखमी : (तंग आकर) अच्छा अच्छा सुनाऊंगी–अगले हफ्ते उत्सव तो है– तब सुनाऊंगी।

[खुश होकर कुछ लड़के नाचने लगते हैं–सब खुश होते हैं।]

सब : उत्सव पर चाची गीत सुनाएगी–आहा चाची गायगी।

[पुजारी जी उठते हैं]

चौधरी : (चिलम का कश लगाकर) अरे हां पुजारी जी, नागराज का उत्सव तो सर पर आ गया, अब के क्या क्या तैयारी करनी होगी ?

पुजारी : भगवान शंकर की दया से तैयारी तो सब हो चुकी है चौधरी। सिर्फ़ लड़कों को भेज कर अपनी सारी ढोकों पर ख़बर कर देनी होगी ताकि सब छोरे छोरियां समय पर पहुंच जांय।

चौधरी : मंदिर के लिये नया कलश बन गया क्या ?

पुजारी : हां तुलसी कल ही देकर गया है, बड़ा सुंदर कलश बना है अबके। अब तो इन छोरे छोरियों से कहो कि अपनी तैयारी कर लें।

सब : (एक साथ) हम सब तैयार हैं।

सरजू : और चाची भी तैयार हैं।

[चाची लज्जा से मुस्कराती है। सब हंसते हैं]

२ लड़का : मगर चाची के गीत पर नाचेगा कौन !

चौधरी : वह नया बाबू आ रहा है न शहर से, वह नाचेगा।

लखमी : (चौधरी से) हटो वह मुआ मेरे गीत पर क्यों नाचेगा। तुम न नाचोगे ?

चौधरी : अरी मैं तो तीस साल से नाच रहा हूँ तेरे इशारों पर--इस बार और सही।

लखमी : (नवेली की तरह) जाओ मैं नहीं गाऊंगी।

[सब हंस पड़ते हैं]

पुजारी : यह नया बाबू कौन आ रहा है चौधरी ?

चौधरी : पता नहीं, कल रियासत का एक प्यादा आया था कि कोई बड़ा साहब यहां आने वाला है, कुछ मूरत बूरत बनाएगा। मेरी समझ में तो कुछ नहीं आया। अरे हां सरजू, भई डाक बंगला साफ़ करके रखना है और घोड़ा वगैरह सब तैयार रखो।

[सारे मजमे में उत्सुकता व सन्नाटा]

१ लड़का : वह कैसा होगा चौधरी जी ?

चौधरी : मुझे क्या मालूम।

गौरां : वह शहर से आएगा ?

चौधरी : सुना तो है।

बन्सी : क्या करेगा ?

चौधरी : भगवान जाने। हमारे होश में तो सिर्फ़ एक बार इस डाक बंगले में परदेसी ठहरे थे। कोई २५ साल हो गये, क्यों लखमी ? यह लम्बे लम्बे फ़ीते लेकर अहरबल की चोटी पर जाया करते थे। पता नहीं क्या नक़शे वक़शे बनाते थे, ये भी वैसा ही होगा।

गौरां : तुमने देखे थे परदेसी चौधरी ?

चौधरी : हां देखे क्यों नहीं थे ! मैं और सरजू का बाप दोनों उनकी टोकरियां उठा कर साथ जाया करते थे।

बन्सी : अच्छा उनकी शक्ल कैसी थी बापू ?

चौधरी : (हैरत से) हमारे जैसी और कैसी ?

सरजू : उनकी पूछ वूंछ नहीं थी ?

चौधरी : नहीं तो, अच्छे भले आदमी थे। सिर्फ़ कपड़े पता नहीं कैसे पहनते थे यूं कसे कसाये जैसे घोड़े की ज़ीन कसी हो। क्यों बिशने ?

बिशना : हां।

गौरां : तो तुमने भी देखे थे शहर वाले बाबा ? उनके शहर किधर हैं ?

बिशना : उधर को सुना है, वह उस हरमुख की चोटी के पीछे कहीं कहते हैं कि कोई मैदानी देश है, वहां।

सरजू : तो वहां पहाड़ नहीं होते ?

चौधरी : नहीं होते होंगे, इसीलिये तो वह पहाड़ देखने यहां आते हैं।

गौरां : हम इनके शहर देखने क्यों नहीं जाते ?

सरजू : अरी वहां क्या रखा होगा, जब वहां पहाड़ नहीं होते तो लंबी ऊसर ज़मीन ही ज़मीन होगी और बस न झरने होंगे, न ढोकें होंगी, न बरफ़ होगी। बस एक जगह खड़े हो गये तो आख़िर तक सारी ज़मीन नज़र आ जाती होगी, न छुपने की जगह, फिर आँख-मिचोली भी कैसे खेल सकते होंगे। इसीलिये तो घोड़े की ज़ीन की तरह कसे कसाये कपड़े पहनते हैं कि सपाट मैदान में बस घोड़ों की तरह भागते ही चले जाते होंगे। क्यों चौधरी ?

चौधरी : भई ये सब तो मुझे पता नहीं—पुजारी जी से पूछो, वह तो वहां के हैं और हर साल हो के आते हैं।

गौरां : पुजारी जी तुम बताओ ना, वहां क्या होता है ?

पुजारी : अच्छा दोपहर को बताऊंगा—इस वक़्त तो इन सबको घर जाने दे, इन्हें तो पानी ले जाना और रोटी पकाना भी भूल गया है।

चौधरी : अरे बातों में आज कितना वक़्त चला गया, अच्छा भई चलते

हैं, बन्सी देखो तुम लोग जाकर अपनी सारी ढोकों पर खबर दे आओ कि पूरे चांद की रात तक यहां पहुंच जाएं, दूसरे दिन उत्सव शुरु हो जाएगा। अब के उत्सव पर कबड्डी का मुक़ाबला न हो जाए। क्यों लक्खी ?

लड़के : हां हां ज़रूर हो जाए।

सरजू : क्या लाख रुपये की बात की है तुमने चौधरी।

विशना : हां भई रंग जम जाएगा।

चौधरी : तो है क्या मुक़ाबिले की हिम्मत ?

विशना : क्या हम लोग भी खेलेंगे—इन सफ़ेद वालों के साथ ?

चौधरी : क्या हर्ज है ज़रा पुरानी घातें हो जाएंगी।

लक्खी : अरे विशने तू इसकी बातें छोड़—इसे तो लखमी भाभी ने दूध पिला पिला कर फिर से जवान कर रखा है। हमारा इसका क्या मुक़ाबला।

[सब हंसते हैं]

लखमी : (लक्खी को धप्पा मारकर चौधरी से) चलो अब तुम्हें भी तो मज़ाक़ कराने में कुछ मज़ा आता है।

चौधरी : चलो भई जो हुक्म।

[सब बातें करते हुए दर्रे से जाते हैं—सरजू डाक बंगले की तरफ़ जाता है, तब चौधरी पीछे से कहता है]

चौधरी : भई देख लेना ज़रा—अपने डाक बंगले की सफ़ाई वग़ैरा, कल रियासती प्यादा कह गया है कि साहब को कोई तकलीफ़ न हो—यह कोई राजा जी का दोस्त है।

सरजू : आप कोई फ़िक्र न करें चौधरी जी—मैं सब ठीक कर दूंगा।

[डाक बंगले के अंदर जाता है]

[गौरां अपनी सहेलियों के साथ रह जाती है]

१ लड़की : क्यों गौरां अब के तो उत्सव के नाच की बड़े ज़ोर से तैयारी की होगी ?

२ लड़की : और सरजू ने बंशी बजाने की।

गौरां : और तेरे बन्सी ने क्या किया है ?

३ लड़की : वह बिचारा क्या करेगा–ये गायेगी तो वह नाचेगा।

२ लड़की : और तेरे गुग्लू की तरह थोड़े ही है कि न नाचना आए न गाना।

३ लड़की : देख गुग्लू का ताना मती देना। उस जैसा सुंदर तो निकाल सारे पहाड़ में से।

सब : अरे चिढ़ गई रे, चिढ़ गई रे।

(सरजू एक थैला उठाये बाहर निकलता है और एहरन रख कर घोड़े की नाल बनाना शुरु करता है)

[सब लड़कियां हंसती हुई तान छेड़ती जाती हैं]

चन मेरा चढया ऐ चीढ़ां दे ओहले
चीढ़ पटाओ मेरा चन मुहों बोले

[सरजू नाल ठोके जा रहा है–गौरां डाक बंगले की तरफ़ बढ़ती है।]

गौरां : पहले कुछ खा तो लेते–सवेरे सवेरे ये ठक ठक लेकर बैठ गए हो

सरजू : देवी के हाथों का प्रसाद खा चुका हूं, अब और क्या चाहिए ?

गौरां : भूख नहीं लगी, सुबह दस मील पैदल चलकर आए हो।

सरजू : भूख लगी तो बहुत थी, मगर तुम्हें देखते ही मिट गई।

गौरां : आख़िर नाल बनाने की इतनी जल्दी भी क्या है ?

सरजू : तुमने सुना नहीं चौधरी क्या कह गया है, उस नए बाबू के लिये घोड़ा तैयार रखना होगा।

गौरां : तो क्या हुआ, घोड़ा कौन सा यहां है जो अभी गढ़ के ठोक दोगे।

सरजू : वह सन्तू अपनी गाय छोड़कर अभी जाने वाला है। नाल बना के

उसे दे दूंगा तो रहमाना ठोक पर ठोक देगा।...यहां आजा न मेरे पास, वहीं खड़ी खड़ी बातें बना रही है।

गौरां : (पास आकर) वह नया बाबू कब आएगा?

सरजू : क्या पता किस दिन आजाए, मुझे तो तैयारी करनी होगी।

गौरां : वह कैसा होगा?

सरजू : मुझे क्या पता।

गौरां : शहर कैसे होते हैं?

सरजू : यह पुजारी जी से पूछो।

गौरां : अच्छा! जब तुम्हारा बाबू आएगा तो तुम मुझे दिखाओगे?

सरजू : मैं अभी वायदा नहीं करता।

गौरां : क्यों?

सरजू : पता नहीं वह कैसा हो। क्या पता उसे बांध कर रखना पड़ता है। चौधरी कहता है कि वह घोड़े की ज़ीन की तरह कसे कसाये कपड़े पहनते हैं। क्या पता उसी तरह हर वक़्त भागते ही फिरते हों। शायद लातें भी मारता हो। क्या जाने वह इन बड़े बड़े पहाड़ों को देख कर डर जाय और बाहर ही न निकले। इसलिये जब तक मैं देख न लूं तुम्हें कैसे बताऊं। हां अगर कोई असील हुआ—बहुत ख़तरनाक न हुआ तो तुम्हें दूर से एक बार दिखा दूंगा।

[पुजारी जी यह सब सुन रहे थे—अब उनसे न रहा गया]

पुजारी : क्यों मैं तुम्हें असील दिखाई देता हूं कि नहीं?

सरजू : वाह आप तो हमारी ही तरह के आदमी हैं।

पुजारी : तो बस वह भी आदमी है मेरी तरह के। आख़िर मैं भी तो शहर का हूं।

गौरां : तो शहरों में भी हमारी ही तरह के आदमी बसते हैं!

पुजारी : हां।

गौरां : तो फिर शहरों में क्या होता है जो यहां नहीं होता?

पुजारी : वहां बहुत कुछ होता है जो यहां नहीं होता।

गौरां : तो बताओ ना पुजारी जी क्या होता है वहां? बताओ ना पुजारी जी!

पुजारी : अरी बताऊँगा बताऊँगा—पहले कुछ खाने के लिये भी तैयार करेगी कि आज बिशने को व्रत ही रखना पड़ेगा?

गौरां : अरे हां, मैं तो भूल ही गई। अच्छा अभी तैयार करती हूं फिर बताओगे?

पुजारी : हां।

[गौरां झोंपड़े में जाती है। सरजू पुजारी के पास आकर]

सरजू : वाह आपने कैसे कह दिया कि वह भी हमारी ही तरह के आदमी होते हैं। आप खुद ही तो सुनाते थे कि वह लोग एक दूसरे से धोखा करते हैं, झूठ बोलते हैं, एक दूसरे को मार डालते हैं, एक दूसरे के देश पर जाकर कब्ज़ा कर लेते हैं, वहां के लोग औरतों से छुप कर बातें करते हैं और प्यार तो वह जानते ही नहीं। कुत्तों की तरह वासना के दास होते हैं और अगर कोई प्यार करे भी तो उनके रास्ते में रुकावटें डालते हैं, कमीनी बातें करते हैं। वहां आधे से ज्यादा लोग भूखों मरते हैं और सारे अनाज को थोड़े से लोग छीन ले जाते हैं। वहां किसी के पास कितने कितने मकान होते हैं और किसीके पास सर छुपाने की जगह नहीं होती। कोई अतिथि-महमान घर में आ जाए तो उसकी पूजा तो कहां उसे घर से निकाल देते हैं। उनके एक नहीं कितने ही भगवान होते हैं और हर एक का भगवान दूसरे के भगवान से लड़ता रहता है। वह अपने अपने भगवान के नाम पर दूसरों के बच्चे मार डालते हैं। उनकी औरतों के साथ सबके सामने व्यभिचार करते हैं, फिर वह आदमी कैसे हुए? हमारे यहां के तो जानवर भी ऐसा नहीं करते।

पुजारी : तुम ठीक कहते हो सरजू, फिर भी वह हैं आदमी ही, मगर भटके हुए, इसीलिये तो मैं उन्हें छोड़ कर इस देश में चला आया।

सरजू : बहुत अच्छा किया, और भी वहां सचमुच के आदमी हों तो उन्हें यहां बुला लीजिए। यहां शांति से हमारे साथ रहेंगे।

पुजारी : एक दिन ऐसा ही होगा सरजू, आज वह सब अहंकार और लोभ में फंसकर प्रकृति के खिलाफ़ जा रहे हैं और एक दिन अपने ही पाप के हथियारों से उनका सर्वनाश हो जाएगा। फिर केवल उन्हीं देशों के लोग रह जाएंगे जिनका जीवन प्रकृति और कुदरत के क़ानूनों के अनुसार होगा, जो सच्चे आदमी होंगे, जो भगवान की सृष्टि को प्यार, सुंदरता और संगीत से भर देंगे।

गौरां : (बाहर आकर) पुजारी जी अंदर आना, बाबा बुलाते हैं।

पुजारी : आया बेटी, अच्छा इसे अब सारी बातें सुने बग़ैर चैन थोड़े ही आएगा। (पुजारी गौरां की झोंपड़ी में जाते हैं)

गौरां : (सरजू से) अब तुम भी जल्दी से नहा धो लो, तब तक खाना तैयार हो जाएगा। आज चौधरी ने नई सब्ज़ पत्तियां भेजी हैं—उसी की चाय बनेगी (झोंपड़ी में जाती है)

सरजू : अच्छा तो लो मैं अभी आया, बस ये आधी गढ़ने वाली रह गई है (नाल ठोकने के साथ गाता है।)

चन मेरा चढ़या ऐ चोढ़ां दे ओहले
चीढ़ पटाओ मेरा चन मुहों बोले

[धीरे धीरे पर्दा आता है]

Please don't forget to Read this book.

क. २

[परदा उठते ही गांव के सब नर नारी एक लोक नाच में मग्न हैं। पहाड़ी वेशभूषा में लड़के लड़कियां प्रसन्न दिखाई दे रहे हैं।]

लड़के गाते हैं:—

गाना

लहर मारे हो-लहर मारे हो
जैसे गंगा मे जमना लहर मारे हो

[पुजारी जी पूजापाठ में मग्न हैं। मंदिर के सामने दीपक जल रहे हैं। मंदिर की सीढ़ियों पर चौधरी, लक्खी, लखमी वग़ैरह बैठे हैं]

लड़के : लहर मारे हो-लहर मारे हो।

लड़कियां : गोरी कन्ता के संग मा लहर मारे हो।

सब : लहर मारे हो-लहर मारे हो।

[गौरां जो कि लड़कियों में शामिल है बारबार सर उठा कर डाक बंगले के पीछे की तरफ़ देख रही है]

लड़के : (क़तार में) नीली नीली झीलों में गोरी गोरी मछली।

सब : गोरी गोरी मछली।

लड़कियां : नीले नीले पर्वत पे गोरा गोरा पंछी।

सब : गोरा गोरा पंछी।

लड़के : राधा की गोदी में नीले नीले कान्हा—नीले नीले कान्हा।

लड़कियां : नीले नीले शिवजी और गोरी गोरी गौरां—
गोरी गोरी गौरां—

सब : हो गोरी गोरी गौरां।

लड़का : जैसे बादल में चंदा लहर मारे हो।
लहर मारे हो–लहर मारे हो।

[एक लड़की और एक लड़का अपना अपना जोड़ा बनाकर तालियों के सहारे नाचते हैं]

सब : लहर मारे हो–लहर मारे हो।
जैसे गंगा में जमना लहर मारे हो।
गोरी कन्ता के संग में लहर मारे हो।
लहर मारे हो–लहर मारे हो।

[सब जोड़ों को नाचते देख चौधरी को भी जोश आता है और वह लखमी भाभी का हाथ पकड़ बीच मैदान में सबके साथ नाचने लगता है। अंत में चाची थक कर गिर जाती है–सब हंसते हैं।]

सब : वाह चाची ने तो कमाल कर दिया।

[सब हंसी मज़ाक़ करते हैं–उधर गौरां डाक बंगले के पास आ दूर पगडण्डी की तरफ़ देख रही है।]

पुजारी : क्यों आ गया क्या सरजू?

गौरां : नहीं बाबा, चौधरी ने पता नहीं कहां भेज दिया है उसे?

चौधरी : पता नहीं क्या बात हो गई है, उन्हें तो कल ही यहां पहुंच जाना चाहिये था।

गौरां : उस मुए बाबू को भी आज ही आना था, तुम्हें पता तो था कि आज उत्सव है, किसी दूसरे को भेज देते, घोड़ा पहुंचाने के लिये।

बन्सी : हां वह सन्तू तो उत्सव पर आता ही नहीं, उसे भेज देते।

२ लड़का : सरजू की बंसी के बग़ैर नाच का मज़ा अधूरा रह जाता है।

लक्खी : भई ऐसी बात है तो बंसी मैं बजा देता हूं।

चौधरी : हां हां लक्खी बजा लेगा।

बन्सी : लेकिन लक्खी चाचा की बंसी पर तो गौरां नहीं नाचेगी।

पुजारी : बेटी घबराती क्यों है-भगवान शंकर की दया से बस अब आता ही होगा।

१ लड़का : लो वह सरजू आ गया (दूर इशारा करता है, सब देखते हैं)

सब : सरजू, ओ सरजू, आ जाओ जल्दी से।

सरजू : (आकर) आया, यह काठी रखलूं ज़रा।

गौरां : (भागकर आती है) यहीं रख दो न अभी, फिर संभाल लेना।

सरजू : बहुत नाराज़ दीखती हो।

गौरां : और नहीं तो क्या, सारा उत्सव बेमज़ा हो रहा था। कहां है वो मुआ बाबू-मैं ज़रा उससे पूछूं तो सही। (बढ़ती है)

सरजू : (रोक कर) वह उधर से ही डाक बंगले के अंदर चला गया। मैं उधर मैदान में घोड़ा खोलने चला गया था।

गौरां : घोड़ा खोलने चला गया था (हाथ पकड़ कर) चल अब जल्दी से।

सरजू : (बंसरी निकाल कर) चलो देवी जी, चलो। हां भई, हो जाए गीत।

[सरजू और गौरां को घेर कर सब नाचते गाते हैं]

विरहन उसका देश न जाने
न परदेसी का नांव
विरह बसे मोरे मन में साजन
मन डोले तब गाऊं
कौन लाया खबर तेरे आवन की
याद आई घड़ी तेरे जावन की
लहर मारे हो-लहर मारे हो

अबके जो आओ तो अंखियन में रख लूं
प्रीत कसौटी पे तुझको परख लूं

ऊँचे ऊँचे पर्वत पे दीपक जलाऊंगी
अपने कान्हा के गीतों को गाऊंगी
कौन लाया ख़बर तेरे आवन की
लहर मारे हो-लहर मारे हो

[सब नाच रहे हैं, साथ ही गा भी रहे हैं। डाक बंगले से कलाकार आता है, उसे देख लड़कों में फुसफुसाहट होती है।]

चौधरी : आओ बाबू, हमारे देश के गीत भी सुनो (सब गाते हैं, कलाकार देखता है)

लखमी : (गाती है) पिया पिया करती मैं हो गई पीली, लोग कहे इसे रोग।
जिन तन लागी न पीर क्या जाने, मोहे सताए वियोग ॥

लड़का : पीलू पकियां ते घर आ सजना।
तुझ बिन असां बिन चखियां ॥

लखमी : पीलू पक गये खाओ तो खाने न दूं।
यहां आओ तो तुमको मैं जाने न दूं ॥

[गौरां कलाकार की तरफ़ आकर्षित होती है—सरजू मस्त हो बंसरी बजाता है। गाते गाते लड़के लड़कियां चक्कर लगाते हैं। उधर गौरां भागकर कलाकार का हाथ पकड़ कर बीच में ले आती है और नाचती है। इसी नाच नाच में परदा आ जाता है।]

Please don't forget to read this book.

पहला अंक समाप्त

पहला अंक समा

First part finished.

[कलाकार अपने आंगन में Easel (चित्र रखने का तख्ता) लगाये कन्वास पर कुछ पेंट कर रहा है, पहाड़ी की चोटी ग़ौर से देख रहा है। गौरां हाथ में कटोरा लिये कलाकर के सामने आती है। कलाकार को देख कर मंदिर में चली जाती है। कलाकार इसे विघ्न अनुभव करता है। गौरां फिर थोड़ी देर बाद मंदिर से बाहर आती है]

कलाकार : उं हूं, एक तरफ़ हो जाओ। (वह पीछे हट जाती है, थोड़ी देर बाद कलाकार फिर गौरां की तरफ़ देखता है) इधर आओ मेरे सामने। (गौरां रुक गई) मेरे सामने आओ। (गौरां डरते डरते बढ़ती है)

गौरां : मैं .. मैं तो तुम्हारे...लिये...दूध लाई थी। (पास आ जाती है)

कलाकार : बस यहीं खड़ी हो जाओ।

गौरां : हमारी लाखी गाय कल ब्याई थी, बापू ने कहा था जा बहुला दूध परदेसी को भी दे आ।

कलाकार : (अपने ध्यान में) तुम कितनी सुंदर हो।

[गौरां चुप है, कलाकार उसके पास आता है]

Beauty too rich for use, for earth too dear.

(ब्यूटी टू रिछ फ़ॉर यूज़, फ़ॉर अर्थ टू डियर)

गौरां : (हिम्मत कर के) तुम यह बहुला दूध खाओगे ? इसका पनीर बड़ा मज़ेदार होता है। (दूध पेश करती है, कलाकार कटोरा अपने हाथ में लेता है मगर सरदी से हाथ ऐंठ गये हैं इस लिये कटोरा उसके हाथ से गिरने लगता है-गौरां कटोरा अपने हाथ में ले लेती हैं) क्या हुआ ?

कलाकार : कुछ नहीं, सुबह से ब्रुश पकड़े हुए हूं, इसलिये थकान और सर्दी के मारे हाथ ऐंठ गये हैं।

गौरां : तुमसे यहां की सर्दी नहीं सही जाती तो इस तरह बाहर क्यों निकलते हो, [गौरां उसके हाथ दबाती है और मसलती है] अब हुए कुछ गर्म ?

कलाकार : तुम कौन हो जो इस तरह मनुष्य और प्रकृति के दरम्यान आके खड़ी हो गई हो कि इंसान और कुदरत दोनों तुम्हारें सामने झुके दिखाई देते हैं। तुम कौन हो ?

गौरां : मैं गौरां हूं।

कलाकार : गौरां ! हिमाचल की बेटी ! पहाड़ों की आत्मा ! गौरां ! कितना प्यारा नाम है !

[गौरां शर्माती है, कलाकार दूध पीता है]

गौरां : क्यों मीठा है न ? कम है तो मैं गुड़ ले आऊँ ?

कलाकार : नहीं।

गौरां : (कन्वास की तरफ़ इशारा करके) तुम इस कपड़े पर क्या बना रहे हो ?

कलाकार : तुम्हारी तस्वीर।

गौरां : मेरी तस्वीर क्यों ?

कलाकार : मैं इस पहाड़ की महानता का चित्र बना रहा था और सोच रहा था कि इस सौभंय सुंदरता को किस रूप में चित्रित करूँ, तब तुम दूध का प्याला लिये मेरे और इस पहाड़ के दरम्यान आ के खड़ी हो गई और मैंने पहचान लिया कि तुम इन पहाड़ों की आत्मा हो—सौन्दर्य और महानता की वही तस्वीर।

गौरां : लेकिन तुम्हें ग़लती हुई है, मैं तो सुंदर नहीं हूँ।

कलाकार : कौन कहता है ?

गौरां : सरजू, यहां मुझे से कहीं ज्यादा सुंदर और लड़कियां हैं, शायद तुमने अच्छी तरह नहीं देखा बाबू !

कलाकार : मैंने तो तुम्हें अच्छी तरह देखा है शायद उन्होंने नहीं देखा। उन्होंने तुम्हारा सिर्फ़ बाहरी रूप देखा है गौरां ! तुम्हारी आत्मा कितनी सुन्दर है, यह जो दीनता, और विनम्रता तुममें दिखाई देती है इसमें पहाड़ों की कितनी महानता रची हुई है–इसे वह नहीं देखते। तुम मुझे सुबह की पहली किरण की तरह सुन्दर दिखाई देती हो, जो भोर के सुरमई अंधियारे में से फूट कर निकल आती हैं। तुम इन पहाड़ों की बेटी हो जो अपनी छाती का दूध नदियों की शक्ल में हज़ारों लाखों मील दूर बसने वाले प्यासे इंसानों के घर पहुंचा देते हैं, तुम इन पहाड़ों की आत्मा हो गौरां ! तुम ही तो वह हो जो हमारे शहरों में नहीं मिलती और जिसकी वहां ज़रूरत है।

सरजू : (आकर) बाबूजी तुम्हारी चाय तैयार हो गई।

कलाकार : (चौंककर) हैं...अच्छा, यहीं ले आओ...हां गौरां के लिये भी लाना।

गौरां : नहीं, नहीं मैं...

कलाकार : नहीं क्या, पियो न एक प्याला।

सरजू : अरी पी के तो देख, क्या लपट आती है उसमेंसे, बाबू शहर से लाया है।

कलाकार : जाओ जाओ, जल्दी से ले आओ।

सरजू : (खुश खुश) बहुत अच्छा। (अन्दर चला जाता है)

[तभी पीछे से बंसी की ध्वनि सुनाई देती है]

कलाकार : (आकर्षित होकर) कहां से आ रही है यह आवाज़ !

गौरां : उस सामने वाले टीकरी पर बंसी होगा, बकरियां चराता हुआ।

कलाकार : बन्सी !

गौरां : हां, खामख्वाह बजाता फिरता है, सरजू जैसी बजानी तो आती नहीं, लेकिन दिन भर सर खाता रहता है।

कलाकार : (हैरत से) सरजू, बहुत अच्छी बंसरी बजाता है क्या ?

गौरां : और नहीं तो, उस दिन सुनी नहीं थी उत्सव में ?

कलाकार: भई उस दिन तो मैंने कुछ नहीं सुना और कुछ नहीं देखा, सिवाय तुम्हारे।

गौरां : नहीं सुनी इसीलिये तो, कभी सुनो तो होश ठिकाने आ जायं, (सरजू चाय लेकर आता है) इसीलिये तो मैं सिर्फ़ इसी की बंसी पर नाचती हूं।

कलाकार : अच्छा, सरजू के कमाल का तो हमें पता ही न था। (सरजू से) कभी हमेंभी सुनाओ भई।

सरजू : जब तुम कहो बाबू, सुना दूंगा।

कलाकार जब क्या आज ही सही, अभी चाय पीकर उस बड़े झरने पर चलेंगे, वहां मैं गौरां की एक तस्वीर बनाऊंगा, झरनों की रानी के नाम से, तुम बंसी बजाना।

सरजू : और गौरां नाचेगी ?

कलाकार: हां हां गौरां नाचेगी क्यों नहीं, झरनों की लहरें भी तो सदा नाचती रहती हैं।

सरजू : तब तो तुम बहुत अच्छे हो बाबू, मैं ज़रुर बंसी बजाऊंगा, तुम्हारे प्रताप से मान जाए तो और बात है, मेरे कहे से तो उत्सव के बगै़र मानती ही नहीं।

कलाकार : नहीं नहीं, मानेगी क्यों नहीं, मैं तस्वीर ही नाचती हुई की बनाऊंगा। तुम जाओ सरजू अंदर से मेरा नीला बक्स उठा लाओ।

[सरजू जाता है]

गौरां : नई तस्वीर क्या बनाओगे, अभी तक तो यह दिखाई ही नहीं

कलाकार : मैंने कब इन्कार किया है, लो पहले तस्वीर ही देख लो... लो। (गौरां तस्वीर देखने आती है, देखने के बाद) क्यों अच्छी है न?

गौरां : बहुत अच्छी है, क्या मैं सचमुच ऐसी हूं ?

कलाकार : नहीं, इससे कहीं ज़्यादा सुन्दर, इतनी कि मैं तुम्हारी सारी सुन्दरता को इसमें समो नहीं सका, मैं तो सिर्फ़ बाहर की सुन्दरता दिखा सकता हूं, काश मुझे विधाता के हाथों का वह ब्रुश मिल सकता जिससे उसने तुम्हें बनाया था, तो एक बार मैं उस से भी टक्कर ले लेता, लेकिन मेरे ब्रुश मुर्दा बालों के हैं और मेरी निगाहों का दामन बहुत छोटा है जिसमें तुम्हारा सारा हुस्न नहीं समो सका।

गौरां : झरनों की रानी कैसी बनाओगे ?

कलाकार : बस झरनों की तरह नाचती और गाती हुई जो किसी ना मालुम मुक़ाम की तरफ़ चली जा रही हो।

गौरां : मगर मैं तो कहीं नहीं जा सकती, भला यहां से कहां जा सकती हूं ?

कलाकार : वहां, जहां यह झरने जाते हैं, इन पहाड़ों से बाहर जो संसार बसता है, वहां तुम भी जा सकती हो।

गौरां : मगर वहां जाकर क्या करूंगी ?

कलाकार : वहां तुम्हारी ज़रूरत है गौरां !

गौरां : क्या ज़रूरत है ?

कलाकार : जिस तरह वहां के इंसान को ज़िंदा रहने के लिये तुम्हारे यहाँ की नदियों के पानी की ज़रूरत है उसी तरह......

सरजू : (बक्स लेकर आता है) यह लो बाबू अपना नीला बक्स।

कलाकार : अरे अंदर ही रखो इसे, इसमें से गौरां के लिये कपड़े निकालने हैं।

गौरां : (घबरा कर हैरत से) क्यों कपड़े तो मैंने यह पहन रखे हैं न ?

कलाकार : नहीं इस तस्वीर के लिये तुम्हें नए कपड़े पहनने होंगे और ज़ेवर भी।

गौरां : तो मैं अपने घर से नया फरग़ल पहन आती हूं, हंसली और कंठी भी ले आऊं क्या ? (गौरां अपनी झोंपड़ी में जाने लगती है)

कलाकार : नहीं नहीं, मैं देता हूं तुम्हें, ज़रा यहीं ठहरो।

[सरजू और कलाकार अंदर जाते हैं, गौरां तस्वीरके तख़्ते को हाथ लगा कर चित्र देखती है। तख़्ते का समतल बिगड़ता है, वह गिरने लगता है, गौरां घबराती है। कलाकार रेशमी कपड़े लेकर आता है।]

कलाकार : कोई बात नहीं। लो तुम यह जाकर पहन आओ, मैं इन्हें ठीक कर लेता हूं। (गौरां जाती है) सरजू ! ज़रा मेरा वह सफ़री थैला लाना, उसमें साथ ले जाने वाली चीज़ें डाल लें।

[सरजू थैला लेकर आता है, कलाकार एक एक चीज़ डालता है।]

तुम अपनी बंसरी ज़रूर साथ ले लेना।

सरजू : हां वह मैंने पहले ही रख ली है। (बंसरी निकाल कर दिखाता है)

[गौरां आती है रेशमी कपड़े पहने, छमछम करती, उसने अजीब ढंग से कपड़े पहन रखे हैं। गले के गहने कोई कहीं, कोई कहीं पहने हुए हैं। उसके हाथ में एक परों वाली जूती है जिसे वह नहीं समझ रही है।]

गौरां : (जूती दिखाकर) यह क्या है, मेरी समझ में नहीं आता, यह पर क्या यहां लगाने हैं।

[जूती को कभी कंधे से, कभी सर पर लगाती है]

कलाकार : तो गोया बाक़ी सब चीज़ें तुमने ठीक तरह से पहनी हैं ?

गौरां : क्यों ? नहीं पहनी हैं क्या ? यह धोती क्या सर में बांधते हैं ? और यह पटका, और यह कानों के झुमके, तुम समझते हो जैसे हमें कुछ पता ही नहीं, सिर्फ़ यह चीज़ है जिसकी मुझे समझ ही नहीं आती कि क्या है ?

कलाकार : यह जूती है।

गौरां : जूती ! इसको तो पर लगे हुए हैं। (जूती फेंक देती है, सरजू जूती उठा लेता है)

कलाकार : हां झरनों की रानी परों वाली जूती पहन कर उड़ती है।

गौरां : अच्छा (सरजू से) देखा किस तरह बनती है झरनों की रानी ?

[गौरां सरजू से जूती लेकर पहनने की कोशिश करती है और ज़मीन पर बैठ जाती है]

कलाकार : अरे रे रे रे यह क्या कर रही हो, सब चौपट हो जायगा, मैं वहां चल कर ठीक कर दूंगा।

गौरां : (कलाकार से) क्यों कैसी लगती हूं ?

कलाकार : बहुत अच्छी। अब चलो। सरजू, वह बैग और अन्दर जो नया कन्वास रखा है उठा लाओ।

[गौरां और कलाकार जाते हैं, सरजू अंदर जाता है। पुजारीजी आते हैं।]

पुजारी : कहां जा रही हो बेटी ! आज शाम की पूजा के फूल नहीं लाने क्या ?

गौरां : मैं तो बाबू से तस्वीर बनवाने झरने पर जा रही हूं।

पुजारी : तुम्हारा बापू कहां है ?

गौरां : ढोक पर गया हुआ है, शाम तक आ जायगा। (जाने लगती है)

कलाकार : (आकर और पुजारीजी को देख कर) नमस्ते !

पुजारी : नमस्ते (कलाकार चला जाता है, सरजू को आते देखकर) यह सब क्या है सरजू ?

सरजू : पुजारी जी ! बाबू गौरां की तस्वीर बनाएगा, उसी का सामान है। उसने फूलों की रानी बड़ी अच्छी बनाई है, वापिस आकर आपको दिखाऊंगा।

पुजारी : सरजू ! तुम्हारा बाबू कुछ ठीक नहीं दिखाई देता, मुझे उसके यह लक्षण कुछ पसंद नहीं।

Dont forget to ... Book

सरजू : अरे नहीं पुजारी जी, वह बहुत अच्छा बाबू है, आपको पता है आज मैं झरने पर बंसी बजाऊंगा और गौरां नाचेगी, वह आज बहुत खुश है। अच्छा, वह आगे चले गए हैं, वापिस आकर आपको वह तस्वीर ज़रूर दिखाऊंगा।

[सरजू भी चला जाता है]

पुजारी : अच्छा शंकर भगवान दया करेंगे। अच्छा तो फिर फूल मैं ही तोड़ लाऊं। (जाता है)

[लड़कियां हंसती हुई अन्दर आती हैं]

१ लड़की : पुजारीजी अभी तक नहीं आए ?

२ लड़की : अभी तो इतना दिन बाकी है, अभी से काहे को आ जाएं।

३ लड़की : मगर रोज़ तो वह जब धूप अभी उस टीकरी पर होती है—तब ही आ जाते हैं।

१ लड़की : और उन्हें काम भी क्या है, कोई गैयां तो चरानी नहीं।

२ लड़की : वाह काम क्यों नहीं, उनकी झोंपड़ी में जाके देख इतने बड़े बड़े पुस्तक रखे हुए हैं उनके यहां, और खुद भी लिखते रहते हैं।

३ लड़की : अच्छा, तो तू उनकी झोंपड़ी में भी गई थी ?

२ लड़की : हां, क्यों इसमें क्या है ?

३ लड़की : कुछ नहीं, हां मगर अब बंसी बेचारा गया काम से।

२ लड़की : कलमुंही, जले मुंह से अच्छी बात तो किया कर।

१-३ लड़की : अरे चिढ़ गई रे, चिढ़ गई रे।

१ लड़की : अरी यहीं रात काटनी है क्या ? घर में खाना वाना नहीं बनाना ?

२ लड़की : मगर तुझे इतनी जल्दी क्या है। हीरा तो ढोक पर गया हुआ है, घर में कौन है ?

१ लड़की : घर में वह है जो बड़ा होकर तेरी बेटी से ब्याह करेगा। समझी, चल अब भगवान पर जल चढ़ाएं।

should not be read

२ लड़की : (पहाड़ी की तरफ़ देख कर) अरे पुजारी जी तो वह आ रहे हैं, फूल तोड़ कर।

३ लड़की : फूल तोड़कर ! गौरां ने नहीं लाए आज ?

१ लड़की : अरी गौरां अब कहां। उसे उस परदेसी बाबू से फ़ुरसत मिले तो न।

३ लड़की : फिर सरजू का आजकल क्या हाल है ?

१ लड़की : बिचारा !

२ लड़की : ज़रा ठहरो तो, अब तो पुजारीजी भी आ रहे हैं–प्रसाद लेकर चलेंगे।

१ लड़की : हां इसलिये तो तुम्हें छोड़े जा रहे हैं, पुजारीजी का इंतज़ार करने के लिये।

[हंसती हुई सब भागती हैं, सामने से चौधरी, लक्खी वग़ैरा आते हैं।]

चौधरी : क्या बात है भई छोरियो ! इतना क्यों हंस रही हो ?

लक्खी : आज गीत वीत कुछ नहीं गाने क्या ?

लड़कियां : (गाते गाते जाती हैं)

चन मेरा चढ़या पे चीढ़ां दे ओहले
चीढ़ पटाओ मेरा चन मुहों बोले

[पीछे से पुजारीजी फूल लेकर आते हैं]

चौधरी : पायं लागें पुजारीजी !

पुजारी : जय हो चौधरी ! (मंदिर में चला जाता है)

चौधरी : (चिलम का कश लगाकर) आज बाबू नहीं दीखा, बंगले में नहीं है क्या ? (आवाज़ देता है) सरजू ! ओ सरजू !!

लक्खी : अरे भई वहां तो नहीं दीखते, कहीं सैर सपाटे को गये होगें, लो वह बिशना आ गया। (बिशना आता है)

चौधरी : होइ आए ढोक पर, बैठो, देना भई चिलम इनको......

विशना : हां भई, बहुत थक गया हूं, अब तो चाय का एक प्याला मिल जाय तो बात बने। (गौरां को आवाज़ देता है) गौरां...... ओ गौरां !

चौधरी : कहां गए सब लोग, इधर सरजू भी नहीं, उधर गौरां भी आवाज़ नहीं देती।

विशना : सो रही होगी, बस सोने के सिवाय और उसे कोई काम थोड़े ही है, ठहरो मैं जगाता हूं। (झोंपड़ी के अंदर से) गौरां! ओ गौरां !! (बाहर आकर) अंदर तो नहीं है, कहां गई ?

पुजारी : (मंदिर से बाहर आकर) गौरां तो बाबू के साथ गई हुई है।

विशना : बाबू के साथ। क्यों ?

पुजारी : वह उसे पता नहीं कहां ले गया है।

विशना : मगर क्यों ?

चौधरी : भई इधर उधर के पहाड़ और चश्में दिखाने गई होगी। सरजू भी तो गया हुआ है।

पुजारी : नहीं सरजू पीछे गया था, वह पहले अकेली गौरां को साथ लेकर गया है।

चौधरी : तो ऐसी कौन सी बात है पुजारी जी जो इतने घबराये हुए हो, अपने यहां लड़कियों को अकेली किसीके साथ जाने पर क़ैद तो नहीं ?

पुजारी : अपने यहां तो नहीं है, मगर तुम नहीं जानते चौधरी इन शहर-वालों को, इनके मामले में क़ैद ही रखनी चाहिये।

चौधरी : क्यों ?

पुजारी : यह बड़े ख़तरनाक होते हैं।

चौधरी : तो हमारी लड़कियां भी क्या तुम्हारे शहर की लड़कियां हैं जिनके बारे में तुम सुनाया करते हो कि उन्हें परदों में बंद करके छुपाये छुपाये फिरते हैं। हमारी लड़कियां तो शेरों और भालुओं से भी नहीं

डरती और अकेली जंगलों में घूमती फिरती हैं, फिर बेचारे इस शहरी से क्या डरेंगी?

[सब हंसते हैं]

पुजारी : तुम लोग हंसते हो, क्यों कि तुम शहर के मर्दों को नहीं जानते, कितने लुच्चे होते हैं।

बिशना : लुच्चे होंगे तो अपना ही कुछ बिगाड़ेंगे। तुम्हें पता नहीं अभी दो चार साल ही की तो बात है, क्यों चौधरी, वह सुनी थी न, तराल के पहाड़ वाली बात?

चौधरी : हां, हां, वह जो एक लड़की ने दो शहरियों को पहाड़ से फेंक दिया था?

१ लड़का : हां, हां, वह—उन्होंने लड़की को अकेली समझ कर ज़रा छेड़ा, बस सीधे दूसरे लोक पहुंच गए।

लक्खी : इस पहाड़ की बेटियों को छेड़ना कोई मज़ाक नहीं है पुजारी जी! मगर तुम यह छेड़ने छिड़ाने वाली बात क्या जानों, तुम अपने भजन गाओ भगवान शंकर के, वह खुद ही सबकी आबरू रखते हैं।

पुजारी : मगर मेरी बात भी सुनोगे या नहीं?

चौधरी : हाँ, हाँ, क्यों नहीं सुनेंगे—सुनाओ सुनाओ।

पुजारी : वह कोई कच्चा शहरी होगा जिसने इस तरह लड़की को छेड़ा होगा, मगर जो चालाक होते हैं......

२ लड़का : हाँ, हाँ, वह चालाक और पक्के शहरी क्या करते हैं?

पुजारी : वह मुहब्बत के जाल बिछाते हैं।

चौधरी : हां, मुहब्बत की बात करते हो पुजारी जी! वहां हम बे बस हैं। वहां कोई क्या कर सकता है, क्यों बिशने?

बिशना : वहां हमारा क्या बस है। जब भगवान दोनों के दिलों में प्यार डाल देते हैं तो हम रोकनेवाले भला कौन होते हैं। हां अगर ज़बरदस्ती

करने की बात कहो तो तुम जानते हो पुजारी जी! हम इन पत्थर की चट्टानों के बने हुए हैं—पहाड़ टूट जाएगा लेकिन उसकी चोटी का सर नीचा नहीं किया जा सकता।

पुजारी : यहीं तो तुम जैसे भोले लोग उनसे मात खा जाते हैं। अच्छा इसकी तुम्हें क्या खबर है कि ऐसे आदमी का प्यार सच्चा है?

लक्खी : वाह! प्यार कभी कैसे झूठा हो सकता है...... और फिर अगर किसी को शक हो तो हम लड़के का इम्तहान नहीं ले लेते? हम उसे कड़े से कड़ा कोई जान जोखम का काम दे देते हैं, अगर कर ले तो उसका प्यार सच्चा, और झूठा हो तो भगवान शंकर उसका काम पूरा नहीं होने देते, अपनी मौत खुद मर जाता है।

पुजारी : अच्छा, शंकर भगवान तुम्हीं भली करोगे।

लक्खी : तुम्हें तो खामख्वाह चिंता हो रही है पुजारी जी! अब आखिर वह हमारा महमान है, उसकी हर तरह से दिलजोई करना हमारा फ़र्ज़ है। क्यों भई?

विशना : हां भई, अतिथि भगवान का रूप होता है।

१, लड़का : लो वह सरजू आ गया।

[सब उधर देखते हैं। सरजू एक हाथ में Easel (तस्वीर का तख्ता) और एक हाथ में गौरां के कपड़े लिये आता है]

विशना : अरे यह क्या है तेरे हाथ में?

सरजू : गौरां के कपड़े।

विशना : (घबरा कर) गौरां के कपड़े! गौरां कहां है?

सरजू : वह आ रही है।

[गौरां रेशमी कपड़े पहने परदेसी के साथ आती है]

गौरां : बापू तुम आ गए?

विशना : यह क्या बनी हुई हो गौरां?

Tribhuwan Nath Kaul 10/5/55

गौरां : झरनों की रानी, देखो तो बापू मेरी कैसी अच्छी तस्वीर बनाई है बाबू ने।

कलाकार : (कन्वास दिखा कर) देखिए कितना अच्छा कन्वास पेंट किया है।

[सब Painting (चित्र) देखते हैं]

लखी : (गौरां से) सचमुच रानी दीखती हो बेटी, जैसे परियों की रानी। [ज़मीन से मिट्टी उठा कर गौरां के सर पर लगाता है]

गौरां : यह क्या चाचा ?

लखी : तुम्हें नज़र न लग जाय किसीकी– वाह बाबू।

सब : बहुत अच्छी तस्वीर बनाई है–क्या कहने।

चौधरी : भई तुम लोगों के पास गुण है गुण।

कलाकार : यह तो आपकी नवाज़िश है। (जाने लगता है)

चौधरी : बैठो बाबू, ज़रा दो घड़ी हमारे पास भी बैठो, कुछ अपने देश की बातें ही सुनाओ।

कलाकार : अभी हाज़िर हुआ (डाक बंगले की तरफ़ जाता है)

गौरां : तुम्हारे लिये चाय बनाऊँ बापू ?

लखी : हां, हां, वह तो पहले ही मांग रहा था।

विशना : अरी सब पियेंगे, जा जल्दी से बना।

[कलाकार आता है और चौधरी, लखी, विशना सब मंदिर में जाते हैं। स्टेज पर गौरां और सरजू रह जाते हैं]

गौरां : कितना मज़ा आया ?

सरजू : (उसका हाथ पकड़ कर) और मैंने बंसरी कितनी सुरीली बजाई थी ?

गौरां : (हाथ छुड़ाकर) हटो, कितने ज़ोर से पकड़ते हो, तुम्हें तो हाथ लगाना भी नहीं आता। देखा बाबू किस नज़ाकत से हाथ लगाता है। [सरजू को बुरा लगता है। अपने हाथ की हथेली पर ज़ोर से बंसरी

मार कर डाक बंगले के अंदर चला जाता है। गौरां को कुछ भी अहसास नहीं होता। वह चाय बनाने अपनी झोंपड़ी में चली जाती है।]

[सब मंदिर से बाहर आते हैं]

लक्खी : अच्छा तो तुम्हारे देश में आदमियों ने बहुत तरक्क़ी कर ली है?

कलाकार : इतनी कि तुम उसका तसव्वर भी नहीं कर सकते।

लक्खी : अच्छा जी?

कलाकार : हां, उसके मुक़ाबले पर तो तुम लोग अभी पत्थर और धातु के ज़माने में रहते हो, जहां इंसान पैदा हुआ, जवान हुआ, गाय भेड़ें चराईं और मर गया।

लक्खी : यह तो ठीक है।

बंसी : तो क्या बाबू तुम्हारे वहां आदमी पैदा होकर मरता नहीं?

कलाकार : मर तो वहां भी जाता है लेकिन जबतक जीता है ज़िंदगी से पूरी तरह सैर होकर जीता है, वहां वह समन्दर की लहरों और आसमान की हवाओं पर चल सकता है। उसने बादलों से बिजली छीन कर अपनी रातों को रौशन कर लिया है और हवा की लहरों को बस में करके अपनी फ़िज़ाओं में संगीत बखेर दिया है। वहां वह तस्वीरों को चलाता है और मशीनों से आदमियों का काम लेता है। वह कामयाबी की एक से एक ऊंची चोटी फ़तह करता चला जा रहा है। चोटियों के साथ ऊपर देखता है और एक दिन उन सितारों को फ़तह करने की ख़्वाहिश भी रखता है, और अगर उन सितारों से आगे जहान और भी है तो उसको भी। टैगोर ने कहा था :—

I would ask for still more
If I had the sky with all the stars
And the world with its endless riches

('आई वुड आस्क फ़ॉर स्टिल मोर, इफ़ आई हैड दी स्काई विथ

आल दी स्टार्स एण्ड दी वर्ल्ड विथ इट्स एण्डलेस रिचेज़)

चौधरी : (हैरत से) क्या कहा तुमने ? (गौरां चाय लेकर आती है और बांटती है)

कलाकार : टैगोर हमारे देश का एक बहुत बड़ा कवि हुआ है, जिस तरह... तुम यह गीत गाते हो वह भी इसी तरह गीत लिखा करता था। उसीने यह लिखा था कि अगर मुझे आसमान अपने तमाम सितारों के साथ मिल जाय और सब ख़ज़ानों से भर पूर सारी धरती भी दे दी जाय तब भी मैं मुतम्इन नहीं होऊंगा, फिर भी मैं और ज़्यादा मांगूगा, (यहाँ गौरां कलाकार को चाय देती है) और, और...

लक्खी : वाह !

कलाकार : हां, वहां का इंसान खुशी की इन्तहा चाहता है, वह आज़ादी की चरम सीमा तक पहुंचना चाहता है ।

पुजारी : लेकिन शायद उसी गीत में तो टैगोर ने यह भी कहा था :—

"अगर मैं सिर्फ़ उसे पा सकूं, जो मेरा सच्चा प्यार है, तो इस विशाल धरती का छोटा सा कोना भी मेरे लिये काफ़ी है ।"

क्यों ! इस हिसाब से यहां के इंसान के मुत्तािल्लक़ तुम्हारा क्या ख्याल है, जिसके पास सच्चे और मासूम प्यार का बेपनाह ख़ज़ाना मौजूद है । उसी टैगोर ने यह भी कहा था :—

"खुशी शबनम के क़तरे की तरह नाज़ुक और अस्थायी वस्तु है, जो अपनी हंसी मे ही टूट जाती है लेकिन ग़म में शक्ति है और अमरता । इसलिये अपनी आखों में एक ग़मगीन प्यार को जगा ओ ।"

कलाकार : तो आपने टैगोर को पढ़ा है ?

पुजारी : हां, शायद तुमसे ज़्यादा अच्छी तरह ।

कलाकार : कहां ?

पुजारी : तुम्हारे शहरों में ।

कलाकार : वहां क्या करते थे ?

पुजारी : कालेज में फ़िलोसफ़ी का प्रोफ़ेसर था ।

कलाकार : इसीलिये उल्टी सीधी बातें करते हैं, शायद फ़िलोसफ़ी ने आपको चीज़ों का ग़लत रुख़ देखना सिखा दिया है, इसीलिये आप टैगोर की लाइनों से पज़मुर्दगी और Pessimism (पेसिमिज़्म) ढूंढ रहे हैं, जब कि इन्सान इन्हीं जज़्बाती बंधनों और वहमों से आज़ाद होने की कोशिश कर रहा है । फ़िलोसफ़र साहब ! एक छोटे से कोने में बंद हो जानेका नाम आज़ादी नहीं है बल्कि आज़ादी का मतलब वह है जो Shakespeare (शेक्सपिअर) ने लिखा था—

I must have liberty
withal as larger a charter as wind

[आई मस्ट हैव लिब्रटीं विथआल ऐज़ लारजर ए चार्टर ऐज़ विन्ड]

यानी मुझे आज़ादी चाहिये, वह बे रोकटोक आज़ादी जो हवाओं को हासिल है । मगर इन पहाड़ों की कन्दराओं में बैठकर आप उस आज़ादी का तसव्वर ही कैसे कर सकते हैं ?

पुजारी : ठीक है, आज़ादी यहां कहां, आज़ादी तो तुम्हारे शहरों में है न, जहां इन्सान ने ग़ैर क़ुदरती हकूमतें क़ायम कर रखी हैं । जहां अपनी मर्ज़ी से कुछ कहने का हक़ भी किसीको हासिल नहीं, जहां आज़ादी राय मांगने वालों को जेलों में ठूंस दिया जाता है—जहां तुमने इन्सान के लिये जेलें और फांसियां तैय्यार कर रखी हैं । वहां आज़ादी है और यहां आज़ादी कहां—जहां जानवर भी कमरे में बंद नहीं किये जाते, जहां के पशु पक्षी आज़ाद हैं, जहां प्रकृति आज़ाद है, जहां इंसान का प्यार आज़ाद है । कहो तुम्हारी दुनियां में यह आज़ादी है ? तुम उसी

सभ्य संसार से आये हो जहां प्यार की तालीम देने पर ईसा को फांसी के तख्ते पर लटका दिया गया था, जहां सुक़रात को ज़हर पिला दिया गया, हसन और हुसैन को प्यासा मार दिया गया, महात्मा गांधी को गोलियों से हलाक कर दिया गया।

कलाकार : (सन्नाटा तोड़ते हुए) आप इक्के दुक्के वाक़यात से मुल्कों और कौमों का character judge (केरेक्टर जज) कर रहे हैं प्रोफ़ेसर साहब! यह नहीं देखते कि मजमुई तौर पर दुनियां ने कितनी तरक्क़ी कर ली है!

पुजारी : हां मजमुई तौर पर क्यों तरक्क़ी नहीं करली, इसीलिये तो हर बीस बरस के बाद तुम्हारी दुनियां में जंग की तोपें अम्न की सलामी उतारती हैं। जिनके शोलों में लाखों औरतों के सुहाग और करोड़ों बच्चों के मां बाप जल जाते हैं। इसीलिये तो भगवान की दी हुई धरती के टुकड़े टुकड़े कर के अलग अलग मुल्क बनाते हो और इंसान को एक टुकड़े से दुसरे टुकड़े में जाने के लिये परमिट लेने पड़ते हैं। इसीलिये शायद आज इस धरती के और टुकड़े कर रहे हो और फिर सदियों से रहने वालों को तलवारों की धार पर चला कर दूसरे देशों में Refugee, (रिफ्यूजी), शरणार्थी और महाजरीन बनाकर पटक देते हो। तुमने मजमुई तरक्क़ी क्यों नहीं कर ली, इसी-लिये तुम्हारे यहां आज सिर्फ़ दस आदमी पेट भर कर खाते हैं और हज़ारों भूखे, पेट पर पत्थर बांधकर, कुत्तों की तरह गलियों और सड़कों पर सो जाते हैं।

कलाकार : यह तो कोई दलील न हुई पुजारी जी! चूंकि वहां यह होता है इसलिये तमाम इंसान भाग कर इन पहाड़ों पर आ जाएं और फिर पत्थर के ज़माने के जाहिलों की तरह एक दूसरे से दूर दूर रह कर ज़िंदगी बसर करना शुरू कर दें। आप देखते नहीं वहां इंसान ने बड़े बड़े शहर बनाये हैं और यह बड़े बड़े शहर ही इस बात की

निशानी हैं कि वहां ज़्यादा से ज़्यादा आदमी एक दूसरे के साथ रह सकते हैं, एक दूसरे के सुख दुख में शरीक हो सकते हैं।

पुजारी : और यहीं तुम ग़लती पर हो, शायद तुम यह नहीं जानते कि शहर जितना बड़ा होता जाता है इंसान उसी क़दर इंसानियत से दूर होता जाता है, यहाँ तक कि शहर इतने बड़े हो गये हैं कि दुख दर्द में शरीक होना तो क्या आज एक हमसाया भी वहां दूसरे हमसाये को नहीं पहिचानता। वहां सब परदेसी हैं। वहां इंसान एक बहुत बड़ी मशीन का एक अदना-सा पुर्ज़ा बन कर रह गया है जिसके निजीपन की, जिसकी ज़ात या Individuality (इन्डिविजूएलिटी) की कोई हैसियत नहीं रह गई है। जो अपनी मर्ज़ी से न रो सकता है न गा सकता है। वहां इंसान एक ऐसे शैतानी चक्कर में फंस गया है कि उसे अपनी भावना या ज़ाती जज़्बात के मुत्तालिक़ एक क्षण भर भी सोचने की फ़ुरसत नहीं दी जाती। एक तेज़ी से चलते हुए मशीन के पुर्ज़े की तरह वह एक पल भर के लिये भी अपनी मर्ज़ी से नहीं रूक सकता। तुम्हारे शहरों की सभ्यता ने इंसानियत और इंसान की ज़ात का विक़ार Humanity (ह्यूमेनिटी) और Human Individual (ह्यूमन इन्डिविजूअल) की dignity (डिगनिटी) छीन ली है।

कलाकार : तो गोया आप इंसान की तेज़ी के सबसे बड़े निशान शहरों की सभ्यता पर हमला कर रहे हैं ? आप इंसान को वापस जंगलों में भेजकर उसे जंगली बनाना चाहते हैं ?

पुजारी : क्या जंगलों में रहने वाला सिर्फ़ जंगली ही बन सकता है ?

कलाकार : तो और क्या बनेगा ?

पुजारी : लेकिन शायद तुम भूल गये कि हमारे भारतवर्ष की पुरानी सभ्यता शहर की सभ्यता नहीं थी। हमारे बड़े से बड़े फ़िलोसफ़र,

कलाकार : बड़े खूबसूरत अल्फ़ाज़ हैं फ़िलोसफ़र साहब ! लेकिन इनमें लिपटी हुई है वही Back to nature (बैक टू नेचर) वाली पिटी हुई Theory (थ्योरी) यह Escapism (एस्केपिज़्म) और फ़रार की बातें हैं । और ज़ाहिर है कि आप जो ज़िन्दगी की जद्दोजहद से भागकर यहां एक मुर्दा सी शांति की तलाश में आए हैं तो आप यही बातें करेंगे । चलो अगर बहस के लिये यह मान भी लें कि वहां आज आम आदमी को तकलीफ़ें हैं, तो उसका मतलब यह तो नहीं हो जाता कि आप मैदान छोड़कर भाग जाएं, बल्कि सही इंसान का फ़र्ज़ है कि उन बुराईयों के खिलाफ़ लड़े, उन कमज़ोरियों का मुक़ाबला करे और आगे बढ़े। क्या आपकी गीता में यही नहीं कहा गया कि आदमी अपने कर्तव्य के लिये लड़ता रहे, अपने फ़र्ज़ के लिये जान भी दे दे । आपके कृष्ण ने मैदान से भागना तो नहीं सिखाया । और आप जो हर बीस बरस के बाद आने वाली जंग का ज़िक्र करते हैं तो उससे भी यही साबित होता है कि इंसान शैतानी ताक़तों के खिलाफ़ अभी तक लड़ रहा है, उसने अभी तक हार नहीं मानी, चुनांचे जब तक वह मायूस होकर हथियार नहीं डाल देता तब तक उसकी तरक्क़ी की उम्मीद जलती हुई शमा की तरह रौशन है और रहेगी। और यही बात साबित करती है कि वह तरक्क़ी कर रहा है, वह अपनी मंज़िल की तरफ़ बढ़ रहा है ।

गौरां : बापू अंधेरा हो रहा है, गाय नहीं दोहोगे क्या ?

बिशना : तू ही दोह ले न ।

गौरां : (रूठे अन्दाज़ से) मुझे रोटी काहे को पकानी है।

बिशना : देखा इस लड़की को, बस रूठ गई इतने में, अरे भई आता हूं।

[सब उठते हैं–गौरां मुसकराती झोंपड़ी में चली जाती है।]

चौधरी : अच्छा बाबू अब हम भी चलें।

Don't forget to read this book

लक्खो : घर पर चौधरानी डण्डा लिये खड़ी होगी।

पुजारी : (मंदिर की सीढ़ियों से) तुम कुछ भी कहो बाबू, मगर मैं तो यह जानता हूं कि इंसान अपने विनाश की तरफ़ तेज़ी से बढ़ रहा है। तुम समझते हो कि तुम्हारी साइन्स ने ज़र्रे का राज़ मालूम करके कोई बहुत बड़ा कारनामा किया है, लेकिन मैं समझता हूं कि इंसान ने अपने सर्वनाश का राज़ मालूम कर लिया है और एक दिन इसी एटम से तुम्हारी सारी तहज़ीब खुदकुशी कर लेगी।

कलाकार : फ़िलोसफ़र साहब ! यह एटम अगर हमारे दुश्मनों का सर्वनाश कर देगा तो हमारे राकटों को भी वह ताक़त अता करेगा कि इन्सान आसानी से तुम्हारे इस सारे तारा मण्डल की सैर करता फिरे, उस वक़्त चांद और सितारे भी उसके क़दमों में होंगे।

पुजारी : और यही तुम्हारी भूल है। इन्सान जब भी अपनी हद से आगे बढ़ने लगता है तो इस विशाल प्रकृति की वह अनदेखी महाशक्ति उसकी मूर्खता पर हंसती है और तब इन्सान अपने ही हाथों अपना सर्वनाश कर लेता है। महाभारत के वक़्त से यही रीति चली आई है।

कलाकार : आप हद से आगे बढ़ने की बात कहते हैं लेकिन मैं समझता हूं कि इन्सान की तरक़्क़ी की कोई हद नहीं है, वह तमाम हदों को पार करता चला जा रहा है।

पुजारी : अब मुझे तुम पर हंसी आती है बाबू, तुम क़ुदरत से सबक़ क्यों नहीं लेते, जहां हर चीज़ की एक हद है। रात का अंधेरा ख़त्म हो जाता है मगर दिन की रौशनी भी सदा नहीं रहती। पहाड़ों की ऊंचाईयां और समन्दर की गहराईयां भी एक हद पर जाकर ख़त्म हो जाती हैं। खुद मनुष्य भी हमेशा ज़िंदा नहीं रहता, वह भी एक दिन मर जाता है। ग़र्ज़ेकि हर चीज़ की एक हद होती है। तुम्हें पता नहीं कि आंधियां और तूफ़ान क्यों तुम्हारी साइन्स की सारी ताक़तों को नाकारा करके रख देते हैं ? अभी तक तुम्हें मौत का

राज़ मालूम न हो सका, तुम्हें सिर्फ़ यह पता है कि दिल धड़कता है तो इंसान जिंदा रहता है, लेकिन तुम यह नहीं जानते कि दिल को वह धड़कन कौन अता करता है और क्यों वह अचानक एक दिन बन्द हो जाती है। जाओ बाबू, यह बातें तुम्हारे बस की नहीं हैं, सिर्फ़ इतना याद रखो कि एक दिन तुम सबको अहंकार की यह बू छोड़कर मेरी ही तरह भगवान के चरणों में आना पड़ेगा। तुम्हें हदें तोड़ने का शौक़ है तो उसी अपरम्पार की शरण में आओ, वही तुम्हें सारे पापों से मुक्त करके अपनी ही तरह असीम और ला महदूद बना देंगे।

[पुजारी जी मंदिर में चले जाते हैं]

चौधरी : अरे ये पुजारी जी को क्या हो गया ?

कलाकार : कुछ नहीं ज़रा जज़बाती हो गये हैं, कोई बात नहीं। अच्छा.

[सबको हाथ जोड़कर नमस्ते करता है, सब जाते हैं]

सरजू, लो यह उठाओ (कन्वास दिखाकर) मगर ज़रा संभालकर।

सरजू : बाबू भला मैं इसे सम्भाल कर नहीं उठाऊंगा, तुमभी कैसी बातें करते हो बाबू !

कलाकार : क्यों, क्या यह तस्वीर तुम्हें इतनी अच्छी लगी है ?

सरजू : अच्छी (हंसता है) कैसी बातें करते हो बाबू तुमभी, मगर तुम्हेंभी क्या पता यह तस्वीर कितनी अच्छी है, तुम इसका मोल क्या जानो।

कलाकार : अच्छा बहुत क़ीमती है यह !

सरजू : क़ीमती, (हंसता है) बाबू तुम कुछ नहीं जानते, उसको देखा है जिसकी यह तस्वीर है ?

कलाकार : गोरां को ! (सरजू सर हिलाता है) देखा है।

सरजू : नहीं देखा बाबू, ज़रा गौर से देखो उसे, फिर पता चले कि वह क्या चीज़ है। तुम इतनी बड़ी बड़ी बातें और बहसें करते हो

इसीलिये तो कहता हूं कि तुमने गौरां को ठीक तरह नहीं देखा।

कलाकार : क्यों बातों से क्या होता है ?

सरजू : यही तो तुम नहीं समझ सकोगे बाबू, उसे गौर से देखो तो फिर भला बात कैसे हो सकती है, फिर तो ज़बान पर ताले पड़ जाते हैं जैसे। उसे देखकर तो सब बातें भूल जाती है, बस उसे देखता ही रह जाता है।

कलाकार : अच्छा यह बात है, तब तो मैं भी उसे गौर से देखूंगा। क्यों इसमें कोई बुराई तो नहीं ?

सरजू : वाह ! इसमें बुरी बात क्या है, ज़रूर देखो और फिर मुझे बताना कि तुम्हें अपनी यह सब बातें भूल गई थीं कि नहीं। बुलाऊं उसे– (आवाज़ देने की कोशिश करता है) ऐ....

कलाकार : नहीं, अरे इस तरह नहीं, फिर सही, तू जा अंदर खाना तैयार कर।

सरजू : बहुत अच्छा फिर सही।

कलाकार : हां मैं तुमसे बहुत खुश हूं, तुम बड़े काम के आदमी दिखाई देते हो।

सरजू : ऐं–मगर गौरां कहती है कि तुम किसी काम के नहीं। (कलाकार की तरफ़ इशारा करता है)

कलाकार : कौन मैं ?

सरजू : नहीं–नहीं–मैं....मैं....मुझे कहा करती है।

[सरजू अंदर चला जाता है]

कलाकार : खाना जल्दी बनाना।

सरजू : बस एक दम लो अभी।

[कलाकार टहलता है, सरजू दिया लाकर रख देता है, कलाकार मुड़कर तस्वीर के पास आता है और गुनगुनाता है]

कलाकार : Like hues and harmonies of evening

Like clouds in starlight widely spread
Like memory of music fled

(लाइक ह्यूज़ एण्ड हारमनीज़ आफ़ इवनिंग, लाइक क्लाउडस् इन स्टारलिट वाइडली स्प्रेड, लाइक मेमरी आफ़ म्यूज़िक फ़्लेड)

गौरां : (आकर) अरे तस्वीर से बातें कर रहे हो।

कलाकार : और क्या करें,

तकल्लुफ़ बरतरफ़, तुझसे तेरी तस्वीर अच्छी है।

गौरां : ठीक कहते हो बाबू। भला अच्छी क्यों न होगी—इतने अच्छे अच्छे कपड़े जो पहना रखे हैं उसे। अच्छा यह लो मैं तुम्हारे कपड़े वापस करने आई थी। (कपड़े जो हाथ में हैं डाक बंगले में रख आती है)

कलाकार : कपड़े वापस करने, क्यों ? वापस क्यों ?

गौरां : तो क्या उन्हें मैं रख लेती ?

कलाकार : मगर तुमसे वापस किसने मांगे हैं ?

गौरां : मगर हम अपने महमानों की चीज़ें नहीं लिया करते बाबू।

कलाकार : ठीक है इन पहाड़ों से तुमने सिर्फ़ देना ही सीखा है, कुछ लेना नहीं।

गौरां : नहीं बाबू हम पहाड़ी लोग तुम्हें क्या दे सकते हैं, तुम्हारे पास किस चीज़ की कमी है ?

कलाकार : तुम्हारी।

गौरां : (हैरत से) हैं।

कलाकार : हमारे पास सब कुछ है गौरां ! मगर तुम नहीं हो।

गौरां : मगर मैंने तो सुना है कि तुम्हारे शहरों में सब कुछ होता है फिर मेरी क्या ज़रुरत है ?

कलाकार : उन शहरों में सब कुछ है, मगर सिर्फ़ दिखाने के लिये, उनके अंदर आत्मा नहीं है, सच्चाई नहीं है, इसीलिये तो मैं कभी सोचता हूं कि काश तुम जैसी सच्ची आत्माएं शहर में जा सकतीं तो फिर

पुजारी जी को शहरों के खिलाफ़ इतना कुछ कहने की ज़रूरत न पड़ती।

गौरां : पुजारी जी की बातों का गुस्सा न करो बाबू, वह तुम्हारे शहरों ही से आये हैं न, इसीलिये महमान से भी इसी तरह झगड़ा करते हैं। अगर वह भी यहीं के होते तो इतनी बात तुम्हें कभी न कहते।

कलाकार : मगर मैं गुस्सा तो नहीं कर रहा- यह मेरे ही मन की शंकायें हैं जो पुजारी जी के मुंह से सुनीं। इन्हीं शंकाओं के कारण तो मैं हर साल शहरों से दूर देहातों, जगलों और पहाड़ों में घूमता रहता हूं। वह शंकायें सच्ची हैं या झूटी। इसी बात के जानने के लिये तो जब भी कभी किसी विद्वान से भेंट हुई, मैं शहरी सभ्यता- आज की तहज़ीब-के हक़ में बोलने लगता हूं ताकि उसके विरोध में जो कुछ कहना है वह कह दें और इस तरह मैं उस सच को पा सकूं जिसकी मुझे तलाश है। आज पुजारी जी ने जो कुछ कहा उसमें बहुत कुछ सच्चाई है, मगर मैं उनकी इस बात को नहीं मानता कि हमने जो क़दम आगे बढ़ाये हैं उन्हें पीछे हटा लें और ऐसे सुन्दर शहरों को छोड़ दें।

गौरां : तो क्या तुम्हारे शहर बड़े सुन्दर हैं?।

कलाकार : हां बाहर से बड़े सुंदर हैं, मगर काश उनमें तुम जैसी आत्माएं भी होतीं तो वह अंदर से भी सुंदर हो जाते। क्या तुम शहर नहीं चल सकतीं गौरां?

गौरां : क्यों ग़रीब का मज़ाक उड़ा रहे हो बाबू, मैं भला वहां कैसे जा सकती हूं?

कलाकर : ठीक है यह मैं पहले ही जानता था कि तुम टाल दोगी, इसीलिये कहा था कि **तुझ से तेरी तस्वीर अच्छी है।**

गौरां : क्यां?

कलाकार : इसलिये कि वह तुम्हारी तरह मेरे साथ चलने से इन्कार न

करेगी, खैर तुम नहीं तो तुम्हारी तस्वीरों से मैं अपने शहरों को जगमगा दूंगा। मैं तुम्हारी आखों में इन पहाड़ों की रूहानी अज़मतें भर कर ले जाऊंगा, और उनकी चमक से मेरे देश का Art (आर्ट) चमक उठेगा, वहां की सभ्यता चमक उठेगी। लेकिन तुम इन बातों को नहीं समझ सकोगी।

यारब वह न समझे हैं, न समझेंगे मेरी बात।
दे और दिल उनको, जो न दे मुझको ज़ुबाँ और॥

गौरां : अगर मुझे कोई बात नहीं आती तो फिर तुम सिखा क्यों नहीं देते बाबू! तुम तो जानते हो कि मैं कभी तुम्हारे शहरों में गई नहीं, इसलिये मुझे तुम्हारी इन बातों का क्या पता–मैं कुछ भी नहीं जानती।

कलाकार : तुम कुछ भी नहीं जानतीं लेकिन मैं कैसे जानता था। मैंने तुम्हें आज तक देखा नहीं था मगर फिर भी तुम्हें क्यों पहचानता थी। मेरी ज़िंदगी में इतनी लड़कियां आईं लेकिन फिर भी उन्हें छोड़कर क्यों तुम्हारी ही तरफ़ भागता चला आया हूं!

गौरां : तो क्या तुमने बहुत सी लड़कियों को देखा है?

कलाकार : हां लड़कियां कलाकार की ज़िंदगी का सबसे कमज़ोर हिस्सा होती हैं। कमज़ोर मगर बड़ा हसीन– और इसी हुस्न की तलाश में, मैं जब भी किसी लड़की के क़रीब गया हूं तो बहुत जल्द मुझे पता चल जाता रहा कि नहीं आत्मा की जिस सुंदरता को मैं वहां ढूंढ रहा था वह वहां न थी।

गौरां : मैं तुम्हारी बातें बिलकुल नहीं समझ सकती।

कलाकार : तू कुछ भी नहीं समझती, कुछ नहीं जानती, मगर मैं जानता हूं कि तू हुस्न है, सुन्दरता की वह देवी जिसे रोज़े अज़ल से सिर्फ़ मेरे लिये बनाया गया था, एक कलाकार के लिये बनाया गया था कि तू कलाकार की सबसे बड़ी कमज़ोरी बन जाए। जानती हो कि उसमें अगर यह कमज़ोरी न होती तो कलाकार

देवताओं से भी ऊंचा हो जाता। लेकिन उसे इस कमज़ोरी से प्यार हो गया है, तुमने उसे हरा दिया है। अगर मैं भगवान से पूछ सकता तो उस से पूछता कि उसने कलाकार के अंदर यह तलाश, यह जिज्ञासा क्यों भर दी है, उसका अंत कहां है ? वह सच्चा सौन्दर्य कौन सा है ? उसने प्रभात को इतना सुंदर बनाया है, पहाड़ों और समुन्द्रों को इतनी गंभीर सुंदरता बख्शी है, उसने चाँद और सितारे बनाये हैं, लेकिन ओ हसीन औरत तुझे उनसे भी ज़्यादा हसीन क्यों बना दिया ? क्यों हमेशा तू मनुष्य और प्रकृति के दरम्यान आकर खड़ी हो जाती है और अगर तू ही उस का शाहकार है तो उनकी तरह तेरे हुस्न को भी वह अमर क्यों न बना सका, फिर क्यों उसने तुझसे हार जानेवाले उसी कलाकार ही को यह ताक़त दी कि सिर्फ़ वही अपनी कला में ढाल कर तेरी सुंदरता को अमर कर सकता है, लेकिन उस ताक़त के होते हुए भी वह एक भिखारी की तरह तुझी को ढूंढता फिरता है और तुझे किसी भी सूरत में देखकर उसका यही जी चाहता है कि :—

> तेरी तस्वीर बनाता रहूँ मैं शामोसहर
> मैं तुझे गीत सुनाता रहूँ हल्के शीरीं
> आबशारों के, पहाड़ों के, चमनज़ारों के गीत

गौरां : तो फिर तुमने गीत तो एक भी न सुनाया मुझको।

कलाकार : तुम्हें मैं गीत क्या सुनाता, तुम खुद एक मुजस्सिम गीत हो, दीपक राग की एक तान, भैरवी का स्वर, मैं तुम्हारे सामने क्या गाऊंगा। हां, तुमसे कुछ सुनने की तमन्ना हर वक़्त रहती है, यहीं आकर तुम्हारी वह तस्वीर तुमसे हार जाती है। (सरजू आ जाता है)

गौरां : तो क्या तुम्हें गीत सुनने का बहुत शौक़ है ?

सरजू : शौक़ है—अरे बाबू तो खुद भी गीत लिखता है, तुम्हें क्या पता।

बाबू इसे सुनाओ न वह चांदनी वाला गीत, जो तुमने मुझे उस दिन सुनाया था।

गौरां : हां बाबू सुनाओ, वह कौन सा गीत है ?

सरजू : अरी सुनो तो दंग रह जाओ, (बाबू से) वह...वह (गाता है)

चंदा से बिछड़े जो चंदा की चांदनी तो झरनों की गोदी में रोये

गौरां : यह तुमने लिखा है बाबू, सुनाओ न मुझे भी।

कलाकार : नहीं इस तरह नहीं, हां अगर मुझे इस चांदनी रात में किसी झरने के किनारे बैठकर गाकर सुनाओ तो मैं बताऊंगा।

गौरां : तो मैंने तुम्हारी बात से कब इंकार किया है जो तुम इस तरह शर्तें रखते हो ?

कलाकार : तो अभी चलो, इस मीठी मीठी चांदनी में झरने पर चलते हैं।

गौरां : अभी... (एक लम्हा सोचती है) अच्छा चलो।

सरजू : ठहरो मैं अपनी बंसी ले आऊं।

कलाकार : नहीं सरजू, तुम घर पर ही रहो, मेरे आने तक खाना गरम रखना।

गौरां : और अगर बापू पूछें तो उनसे कह देना, गौरां बाबू से एक नया गीत सीखने गई है (दोनों जाते हैं)

सरजू : (टूटे दिल से) अच्छा ! (तस्वीर के पास जाकर टूटे दिल से गुन गुनाता है।)

चंदा से बिछड़े जो चंदा की चांदनी तो झरनों की गोदी में रोये

Please don't forget

[धीरे धीरे परदा आता है]

[परदा उठते ही लड़कियों के बातें करने का शोर]

१ लड़की : अरी वह तो पहले दिन से ही दीखता था कि एक दिन गौरां उस बाबू के साथ चली जाएगी।

२ लड़की : बंसी ने तो बहुत दिन हुए कहा था, पुजारी जी को भी शक हो गया था, लेकिन उस वक्त चौधरी ने उनकी बात पर कान ही न धरा।

३ लड़की : मगर अब सरजू बिचारे का क्या होगा?

१ लड़की : सरजू की फ़िक्र तुझे अभी से क्यों हो गई, गौरां अगर चली जाय तो उसकी सोचियो।

२ लड़की : मगर गौरां ने जब खुद कह दिया है तो उसे कौन रोक सकता है?

१ लड़की : उसे तो कोई नहीं रोक सकता मगर उस परदेसी पर गांव वाले एतबार कर लें तब न।

३ लड़की : और अगर एतबार न किया तो?

१ लड़की : तो क्या, उसका इम्तहान लेंगे, अगर उसका प्यार सच्चा हुआ तो उसे भगवान शंकर की दया से कोई आंच नहीं आएगी।

२ लड़की : और झूठा हुआ तो उसकी हड्डी पसली भी ढूंढने पर हाथ नहीं आएगी। (धीरे धीरे लड़कियां जाती हैं)

[सामने से चौधरी, पुजारी, बिशना, लक्खी,
सरजू, बंसी वगैरह आते हैं। बातें हो रही हैं]

पुजारी : मैंने तुम्हें उस दिन भी कहा था और आज फिर कहता हूं कि मुझे उस आदमी पर एतबार नहीं है, चौधरी तुम इस ब्याह को रोक दो।

चौधरी : मगर गौरां जब कहती है, उसे परदेसी से प्यार हो गया है तो?

सरजू : गौरां को उसने अच्छे अच्छे कपडे और गहने दिखा कर भरमा लिया है चौधरी, वह अच्छा आदमी नहीं है–धोखेबाज़ है।

चौधरी : क्यों बिशने तुम क्या कहते हो?

बिशना : मैं कुछ नहीं कहता–गौरां मेरी एक ही लड़की है, जिस तरह वह खुश रहे तुम वही करो।

चौधरी : मगर गौरां की खुशी तो परदेसी के संग जाने में है।

पुजारी : गौरां अभी नासमझ है, बच्ची है।

लखमी : मगर वह उससे प्यार तो करती है।

पुजारी : उसके प्यार करने से क्या होता है, वह परदेसी भी उसे सच्चा प्यार करता है या नहीं–यह तो देखो।

लक्खी : यह देखने वाले तो भगवान शंकर हैं, जो मनुष्य के हृदय में प्यार की हिलोर पैदा कर देते हैं।

पुजारी : मगर भगवान खुद तो तुम्हें कहने नहीं आएंगे कि फ़लां आदमी झूठ बोलता है–अगर वह धोखा देता हो तो?

चौधरी : लेकिन अगर वह सच्चा हुआ तो, क्या हम केवल शक के मारे उसके प्रेम से धोखा करें? इसका पाप किसके सर होगा? याद रखो कि धोखा देने से धोखा खा लेना बेहतर है।

पुजारी : फिर सोच लो चौधरी जल्दी न करो।

चौधरी : हर देश और जाति के कुछ उसूल होते हैं पुजारी जी, और वह जाति तब तक ही ज़िंदा रहती है जब तक उसके उसूल ज़िंदा रहें।

हम भले ही मिट जायं मगर मर्यादा नहीं मिटनी चाहिये। हमारे पुरखों ने न जाने कबसे इस देश में प्यार को पूजनीय बना रखा है, आज़ाद कर रखा है। प्यार के मुक़ाबले पर सर उठाने की हिम्मत इस देश में आज तक किसीने नहीं की।

बंसी : लेकिन बापू केवल मर्यादा के ही लिये तो हर आदमी पर विश्वास

नहीं किया जा सकता। इसका मतलब यह कि हम हमेशा धोखा ही खाते रहें।

चौधरी : यह बात नहीं बल्कि भगवान पर भरोसा रखो, उसकी क़ुदरत पर विश्वास करो, उसके नियम अटल हैं। वहां धोखा नहीं दिया जा सकता। क़ुदरत के इस विराट कारख़ाने में धोखा देनेवाले को पूरी सज़ा दी जाती है। उसका इंसाफ़ सच्चा है।

वंसी : हम सिर्फ़ भगवान पर भरोसा करें और अपनी बुद्धि से कुछ काम न लें?

चौधरी : तुम्हें जिस बुद्धि का मान है बेटा वह कितनी थोड़ी है। कल क्या होगा हम नहीं जानते। हमें आने वाले पल, आने वाले सांस का भी पता नहीं। हम कितने अल्पज्ञ हैं, कितने जाहिल हैं। इंसाफ़ की कुर्सी पर बैठना हमारा काम नहीं, यह उन्हीं का काम है जो अनादि और अनन्त काल के दृष्टा हैं। जिनके सामने अज़ल और अबद के वर्क़ खुले हुए हैं, इंसाफ करना उन्हीं का काम है। हम अल्प बुद्धि जाहिलों का काम है सिर्फ़ विश्वास कर लेना। इसी लिये हमारे पुरखों ने प्यार को पूजनीय बनाया था क्योंकि प्यार एक विश्वास का नाम है। इंसान की नेकी पर यक़ीन कर लेने का नाम मुहब्बत है, और यह विश्वास, यह यक़ीन ही मनुष्य को ज़िंदा रखता है। अगर अच्छे दिनों का विश्वास न हो तो बुरे दिन कभी काटे नहीं कट सकते। यह विश्वास ही अच्छाई को जीवित रखेगा।

पुजारी : मगर अंधविश्वास कर लेना भी तो बुद्धिमानों का काम नहीं है, भगवान यह भी तो नहीं चाहते।

चौधरी : भगवान क्या चाहते हैं, यह कौन जान सकता है?

लक्ली : भगवान क्या चाहते हैं, यह जानने का तरीक़ा तो सहल ही है, उसका इम्तहान ले लो।

सरजू : हां हां, उसका इम्तहान लो चौधरी, उसे कहो कि हरमुख की चोटी पर झण्डा गाड़ कर आए।

चौधरी : (घबरा कर) हरमुख की चोटी पर ! वहां आज तक कोई पहुंचा भी है ?

पुजारी : इसका तो सवाल ही पैदा नहीं होता, अगर उसका प्यार सच्चा है तो भगवान उसे अपने हाथों पर उठाकर वहां पहुंचा देंगे।

सरजू : नहीं तो मुझे कहो मैं गाड़ कर आता हूं।

पुजारी : देखा चौधरी, यह है सच्चे प्यार का जोश। कुछ इस बिचारे का ही ख्याल करो जिसने अपनी सारी जवानी गौरां के चरणों में डाल रखी है। विशना तो सब कुछ जानता है !

विशना : (उदासी से) मैं सब कुछ जानता हूं पुजारी जी, मगर क्या करूं इस लड़की को यह क्या हो गया। कल रात से अन्न को छुआ नहीं, बस मन्दिर में ही बैठी है, मैं क्या करूँ ?

पुजारी : क्या सरजू के प्यार पर किसीको शक है ?

चौधरी : उसके प्यार पर शक कौन कर सकता है ?

पुजारी : तो उसीसे पूछ लो, यदि भगवान के बाद कोई इस मामले का सही पंच हो सकता है, तो वह सरजू है जिसने खुद प्यार किया है। जो प्यार करता है, सिर्फ वही बता सकता है, सिर्फ वही जान सकता है कि दूसरे आदमी का प्यार सच्चा है कि नहीं।

चौधरी, लक्खी : यह तो ठीक है।

पुजारी : बस फिर सरजू ही से पूछ लो, अगर उसके प्यार की सच्चाई पर तुम्हें यक़ीन है तो इसी से न्याय करा लो, फिर और किसी इम्तहान की ज़रुरत ही नहीं।

सरजू : मैं न्याय-व्याय कुछ नहीं जानता, बस यही जानता हूँ कि वह बाबू धोखेबाज़ है।

चौधरी : विशने क्या कहते हो तुम ?

विशना : मैं कुछ नहीं जानता तुम गौरां से पूछ लो।

पुजारी : विशना क्या कह सकता है, वह बाप है और बाप लड़की के सामने कुछ नहीं कर सकता, बेटी हमेशा बाप को झुकाती आई है।

लखमी : यह तो है, लड़की की मर्ज़ी के सामने बाप कैसे रुकावट डाल सकता है ?

चौधरी : फिर तो इम्तहान के बग़ैर दूसरा कोई रास्ता ही नहीं। मगर मैं सोचता हूं कि हरमुख की चोटी तक पहुंचना बड़े जोखम की बात है, आगे जो पंचों की रोय।

लक्खी : बाबू से भी तो पूछ लो, क्या कहता है।

चौधरी : हां, उससे भी पूछ लेना चाहिये। जा बन्सी ज़रा बाबू को भी बुला ला। (बंसी डाक बंगले में जाता है)

पुजारी : बाबू से क्या पूछोगे ? अगर पंचों का फ़ैसला है तो उसे अपनी परीक्षा देनी ही होगी, और परीक्षा लेना हमारे पुरखों की परम्परा है। स्वयं भगवान राम ने देवी से परीक्षा नहीं मांगी थी ?

[बंसी के साथ कलाकार बाहर आता है, सिगरेट पीता हुआ]

कलाकार : (आदर से) नमस्ते चौधरी !

चौधरी : राम राम बाबू, बैठो बाबू ! गौरां की शादी के मामले पर विचार करने के लिये यह पंचायत बैठी है। हम यह जानना चाहते हैं कि क्या तुम सचमुच गौरां से इतना प्यार करते हो ?

कलाकार : चौधरी इसका जवाब मैं क्या दूं, (गौरां हाथ में थाली लिये मन्दिर से निकलती है और थड़े पर खड़ी हो बातें सुनती है) मेरे पास कोई ऐसी मशीन तो है नहीं कि मैं आप लोगों को अपने अंदर का फ़ोटो उतार कर दिखा दूं, फिर जहां तक सबूत का ताल्लुक़ है,

क्या गौरां का कहना काफ़ी नहीं? क्या सच्चे प्यार के बगैर कोई किसीके दिल में घर कर सकता है? फिर आपको यह पूछने की ज़रुरत ही क्यों महसूस हुई? अगर आप लोग इस बात को काफ़ी नहीं समझते तो बताईये मैं किस तरह आपकी तसल्ली कर सकता हूं?

चौधरी : तुमको परीक्षा देनी होगी।

कलाकार : कुछ उसका नाम भी तो लीजिए।

चौधरी : तुमको एक झण्डी दी जाएगी, उसे हरमुख की (उंगली से चोटी बता कर) उस चोटी पर गाड़ कर आना होगा।

[यह सुनकर गौरां काँप जाती है और उसके हाथ से थाली ज़मीन पर गिर जाती है]

कलाकार : वहां (उधर देखता है)

गौरां : (भाग कर चौधरी के पास आती है) वहां बहुत खतरा है चौधरी......तुम......

चौधरी : अगर तुम्हारा प्यार सच्चा है तो वही तुम्हारी रक्षा करेगा।

[गौरां परेशान है, पर चुप, चारों तरफ़ सन्नाटा]

पुजारी : क्यों, क्या यह इम्तहान दे सकते हो?

कलाकार : (पहले पुजारी की तरफ़, फिर चोटी की तरफ़ और फिर गौरां की तरफ़ देख कर, चौधरी से) हां, लाओ झंडा कहां है?

चौधरी : तुम जाने के लिये तैयार हो जाओ, हम झंडा लेकर आते हैं।

[आहिस्ता आहिस्ता सब जाते हैं। स्टेज पर गौरां, पुजारी और कलाकार रह जाते हैं।]

गौरां : यह तुमने क्या किया? वहां आज तक कोई नहीं पहुंचा।

कलाकार : तुमने सुना नहीं चौधरी ने क्या कहा, अगर तुम्हारा प्यार सच्चा है तो वही तुम्हारी रक्षा करेगा (सरजू को आवाज़ देकर) सरजू चलो मेरा बड़ा ट्रंक उतारो।

[सरजू और कलाकार डाक बंगले में जाते हैं।
पुजारी भी मंदिर में जाने के लिये मुड़ता है]

गौरां : (आंसुओं से रुंधे हुए गले से) पुजारी जी! पुजारी जी!! इस अनर्थ को रोको, इसको रोको।

पुजारी : मैं अनर्थ ही को रोक रहा हूं बेटी! तू बड़ी भोली है, इन शहरवालों को नहीं जानती। ये हर नई लड़की से इसी तरह प्यार की बातें करते हैं। तू नहीं जानती कि यह शख्स इससे पहले कितनी लड़कियों से इसी तरह प्रेम कर चुका होगा।

गौरां : मैं जानती हूं बाबा, वह मुझसे पहले कईयों से मिल चुका है, उसने मुझसे कुछ नहीं छुपाया, लेकिन आप यह बात नहीं जानते कि वह मुझहीको ढूंढता फिर रहा था, वह मुझे न जाने कबसे ढूंढ रहा था, वह मुझ ही को ढूंढता ढूंढता यहां तक आया है।

पुजारी : यह भी तेरी भूल है, वह तुझे नहीं तेरी सुंदरता को ढूंढ रहा था। तेरी जवानी को ढूंढ रहा था।

गौरां : लेकिन वह सुंदरता और जवानी जो मेरी है—जो मैं हूं।

पुजारी : लेकिन उस दिन क्या होगा जब तुम्हारी यह सुंदरता नहीं रहेगी, यह जवानी मर जाएगी। (गौरां सीढ़ियों पर बैठ कर रोने लगती है)

कलाकार : (बाहर आकर) मैं उसे कभी मरने नहीं दूंगा। मैं अपनी इस कला से उसकी सुंदरता और जवानी को हमेशा के लिये अमर कर जाऊंगा, हमेशा के लिये। उसे इस तरह अमर कर जाऊंगा कि आज से सैंकड़ों बरस बाद भी, जब मैं नहीं रहूंगा, जब आप नहीं रहेंगे, जब गौरां भी नहीं रहेगी, तब भी इसकी सुंदरता और जवानी मेरी तस्वीरों में इसी तरह ज़िंदा रहेगी।

पुजारी : अमृत के सीने में ज़हर की बूंदें क्यों टपका रहे हो बाबू! तुम रूप की पवित्रता को अपनी वासना से दाग़दार करना चाहते हो। मैं तुम्हें जानता हूं, तुम्हारी संस्कृति और तहज़ीब को जानता हूं।

क्या तुम अपने सीने पर हाथ रख कर कह सकते हो कि तुम सचमुच इससे वैसा ही प्यार करते हो जैसा वह समझ रही है ?

कलाकार : वह प्यार को क्या समझती है मैं नहीं जानता, लेकिन अपने मुत्तल्लिक़ यह जानता हूं कि जिस तरह पिछले पहर का रौशन सितारा किसी जागती हुई हसीन प्रभात की अथाह गहराईयों में अपने आपको गुम कर देता है, या जिस तरह शबनम का कोई मचला हुआ क़तरा किसी हसीन फूल की गोद में छुप जाने के लिये आकाश की अथाह गहराईयों को चीरता चला आता है, उसी तरह मैं गौरां के हुस्न की गहराईयों में डूबता चला जा रहा हूं। मैं कलाकार हूं और यह कला की प्रेरणा। मैं इसकी तस्वीरों से आर्ट की दुनियां में एक ज़लज़ला ले आऊंगा.

पुजारी : आर्ट की दुनियां में तो ज़लज़ला ले आओगे, लेकिन इस पर क्या बीतेगी जो तुम्हारे आर्ट वार्ट को कुछ नहीं समझती? इसके जीवन में जो भूचाल आ जाएगा उसका क्या इलाज है तुम्हारे पास? (तस्वीरों की तरफ़ जाते हुए) क्या यह तस्वीरें, जिनसे तुम लोगों की वासना भड़काना चाहते हो, कहां है इनमें आत्मा की वह गम्भीरता और शांति ? (अब तक तस्वीरों के पास पहुंच जाते हैं और उनको देखकर ख़ामोश हो दो क़दम पीछे हट जाते हैं, मानो उन पर कुछ असर हुआ हो।)

कलाकार : (फ़तह पर खुश होकर) क्यों? इनमें आत्मा की गम्भीरता और शान्ति है कि नहीं? सच्चाई की वह महानता और सादगी की वह मिठास जो गौरां में है वह इनमें है कि नहीं? आप ख़ामोश क्यों हो गये, जवाब दीजिये, सच्चाई की वह महानता और सादगी की वह मिठास जो गौरां में है, वह इनमें है कि नहीं?

पुजारी : मगर इससे कुछ फ़ायदा नहीं?

कलाकार : क्यों ?

पुजारी : क्योंकि छल और कपट से भरा हुआ तुम्हारा माया लोक इस पवित्र आत्मा के काबिल नहीं; तुम्हारे शहरों में इन तस्वीरों की ज़रूरत नहीं, वहां तो काम और ख्वाहिश को भड़काने वाली नंगी तस्वीरें चाहियें, तुम इसे गलत जगह पर लिये जा रहे हो।

कलाकार : ग़लत जगह पर नहीं, सही जगह पर लिये जा रहा हूं। वहां भड़की हुई ख्वाहिशें मौजूद हैं, इसलिये उन्हें इस आत्मा की शांति की जरूरत है और जिस चीज़ की जहां ज़रूरत है वही उसकी सही जगह होती है। मैं इस पारस के टुकड़े को इसलिये लिये जा रहा हूँ कि इसके स्पर्श से वहाँ की जंग आलूद मूर्तियाँ कुन्दन हो जायं। मैं अपने देश और सभ्यता के लिये गौरां के रूप में सच्चाई को लेकर जा रहा हूं, सादगी को लेकर जा रहा हूं और वह प्यार लेकर जा रहा हूं, जिसकी वहां ज़रूरत है।

पुजारी : तुम प्यार को कहां ले जा रहे हो? उस देश में जहां प्यार की इतनी इज्ज़त है कि हीर को रांझे से ज़बरदस्ती जुदा कर दिया गया। जहां जूलियट को कटार मारकर मर जाना पड़ा और सोहनी को टूटे हुए कच्चे घड़े पर बैठाकर चिनाब की लहरों में डाल दिया गया। क्या उसी देश में ले जाना चाहते हो इस भोली, निर्दोष और मासूम आत्मा को, जहां रामू चनणा, ससी पुन्नू सबके सब प्यार के लिये सिसकते सिसकते मर गये। जहां आज भी हुस्न और इश्क के दरम्यान सोने और चांदी की ऊंची दीवारें खड़ी हैं। वह इसे भी वहां मार डालेंगे बाबू, इसे भी मार डालेंगे। (गौरां उठ कर भाग जाती है) यह मुझसे पूछो मैंने शहर क्यों छोड़ा, मेरे प्यार के रास्ते में भी अमीरी और सोने की ऊंची ऊंची दीवारें खड़ी कर दी गई थीं, जिनसे मैं सर पटक पटक कर रह गया पर उन्हें फांद न सका।

कलाकार : चुनांचे आप कायरों की तरह भाग आए, मगर आप यह न जान सके कि प्यार के स्वर्ग का रास्ता आंसुओं की पगडंडी से होकर जाता है।

पुजारी : तुम रूप के गाहक हो—इसीलिये खूबसूरत लफ्ज़ों के रूप में उलझ जाते हो, लेकिन मैंने तुम्हारे उस आज़ाद देश में कभी प्यार के बूटे को फल लाते नहीं देखा। मैंने सिर्फ़ यही देखा है कि वहां प्यार का हर बाग़ अंत में आंसुओं की एक वादी बनकर रह गया है—ख़ाली और वीरान। किसी टूटे हुए सपने के शिकिस्ता टुकड़ों की तरह—ख़ाली और वीरान।

कलाकार : और प्यार का स्वर्ग अपने सिर्फ़ यहां पाया ?

पुजारी : हां।

कलाकार : और इसीलिये आज आप इस स्वर्ग को भी आंसुओं की एक वादी बना देना चाहते हैं—ख़ाली और वीरान। इसीलिये आप यहां भी प्यार की राह में रुकावट डालना चाहते हैं ?

पुजारी : तुम इसे प्यार की राह में रुकावट कहते हो, लेकिन मैं कहता हूं कि काश तुम्हें पता होता कि प्यार किसे कहते हैं। रूप से प्यार का नाम वासना है, प्यार नहीं। अगर तुम सचमुच भी गौरां से प्यार करते हो तब भी मैं तुम्हें उसे यहां से ले जाने से मना करता हूं; क्योंकि यह वह जगह है जहां के लोगों के दिलों में प्यार उसी तरह बसता है जिस तरह आसमानों में रोशनी। यहां के नर नारी एक दूसरे से मिलते हैं तो इस तरह, जिस तरह एक गाता हुआ चश्मा दूसरे चश्मे से मिल जाता है। उनके मिलन से यहां एक संगीत पैदा होता है— लेकिन तुम इससे ऐसा मिलन कर रहे हो जिससे संगीत नहीं, चीखें पैदा होंगी। तुम इसे ऐसे देश में ले जाना चाहते हो जहां की फ़िज़ाओं में विलाप और रोने की आवाज़ें

बिखरी हुई हैं, तुम प्यार को नहीं जानते, तुम प्यार को नहीं जानते।
(मंदिर में जाने लगता है)

कलाकार : मैं प्यार को जानता हूं या नहीं, यह मैं आप ही के उसूलों के मुताबिक आज ही साबित करने वाला हूं। मैं प्यार का इम्तहान दे रहा हूं और जब तक मैं नाकाम साबित नहीं होता आपको यह बात कहने का कोई हक़ नहीं। (डाक बंगले की तरफ़ मुड़ता है।)

पुजारी : भगवान......भगवान......(मंदिर में चला जाता है)

कलाकार : (आवाज़ देता है) सरजू ! (सरजू बाहर आता है) देखो तुम एक कुदाल और एक मज़बूत से रस्से का इन्तज़ाम करो।

सरजू : बहुत अच्छा।

कलाकार : अभी।

सरजू : अच्छा (जाने लगता है, कलाकार अंदर चला जाता है। सरजू सामने से गौरां को आते देख रुक जाता है) कहां से आ रही हो ?

गौरां : (रूंधे गले से) कोई मेरी बात नहीं सुनता, कोई नहीं मानता। चौधरी जी भी कुछ नहीं करते, सबही कहते हैं कि पंचों का न्याय परमेश्वर का न्याय होता है और पंच फ़ैसला कर चुके हैं। तुमभी कुछ नहीं कर सकते सरजू?

सरजू : मैं क्या कर सकता हूं ?

गौरां : तुम कुछ नहीं कर सकते। तुम मुझसे झूठ कहा करते थे कि तुम मेरी देवी की तरह पूजा करते हो।

सरजू : नहीं मैं सच कहता था।

गौरां : ठीक है, तुम सच कहते थे। तुम सिर्फ़ पूजा कर सकते हो और पूजा करने वाले प्यार की तड़प को नहीं समझ सकते।

सरजू : गौरां ! तुमने किसीके प्यार की तड़प देखी ही कब है ?

गौरां : देखी क्यों नहीं, जिसे प्यार की तड़प है वह मेरी आंखों के सामने

अपनी जान देने हरमुख की चोटी पर जा रहा है, लेकिन तुम सबकी आंखों पर पर्दा पड़ गया है, तुम कुछ नहीं देख सकते, तुम्हें अपने लालच ने अंधा कर दिया है, तुम सब उसकी जान लेना चाहते हो। मुझ से क्यों नहीं पूछते, मेरी परीक्षा क्यों नहीं लेते, मैं उसे प्यार करती हूं, मेरी परीक्षा लो।

सरजू : गौरां!

गौरां : हां, मुझे मार डालो–और याद रखो अगर उसे कुछ हो गया तो मेरी मौत का पाप भी तुम लोगों के सिर होगा।

सरजू : गौरां! (गौरां रोती हुई झोंपड़ी में भाग जाती है, सरजू दर्रे की तरफ़ जाता है, तभी सामने से चौधरी, लक्खी, लखमी, बंसी वग़ैरह आ जाते हैं।)

चौधरी : कहां जा रहे हो सरजू?

सरजू : तुम्हारी ही तरफ़ जा रहा था चौधरी! बाबू ने एक कुदाल और एक रस्से का इन्तज़ाम करने को कहा है।

चौधरी : अच्छा...मिल जाएगा। उससे कहो कि अगर वह तय्यार है तो उधर गांव में से जाता हुआ ही साथ ले जायगा।

[सरजू डाक बंगले में जाता है]

लक्खी : पुजारीजी चले गये क्या?

चौधरी : पता नहीं (आवाज़ देता है) पुजारी जी!

लक्खी : (आसमान की तरफ़ देखकर) बादल आते दिखाई देते हैं।

चौधरी : तब तो बेचारे के लिये बड़ी मुश्किल हो जायगी।

पुजारी : (आकर) मुश्किल नहीं हो जायगी, बल्कि भगवान पूरी तरह परीक्षा लेना चाहते हैं।

चौधरी : जैसी भगवान की इच्छा।

[कलाकार तैयार होकर बाहर आता है]

चौधरी : तैयार हो गये क्या बाबू?

कलाकार : भला आपका हुक्म टाल सकता था क्या? हां, मुझे रास्ता खोदने के लिये एक कुदाल और रस्से की ज़रुरत है।

चौधरी : वह तुम्हें मेरे घर से मिल जायगा, रास्ता उधर ही से होकर जाता है।

कलाकार : बहुत अच्छा।

चौधरी : लो यह झण्डा।

[झण्डा देता है, इतनेमें गौरां दुल्हन के कपड़े पहने बीच में आती है]

गौरां : मैं भी तुम्हारे साथ आऊंगी बाबू।

विशना : (आकर) गौरां!

गौरां : हां बाबा, अगर आप लोग इसे मारना ही चाहते हैं तो मैं भी इसके साथ ही मरूंगी।

चौधरी : बेटी! हम किसीका बुरा नहीं चाहते।

गौरां : तो और क्या चाहते हो चौधरी! वह बादल गिर कर आ रहे हैं, बारिश का ख़तरा है और एक परदेसी को, जिसने कभी सीधे पहाड़ों पर भी चढ़कर नहीं देखा, उसे (चोटी की तरफ़ इशारा करके) उस विकट चोटी पर भेज रहे हो—अपनी मौत का झंडा गाड़ने के लिये! मैं इसलिये उसके साथ जा रही हूं कि कल को संसार यह न कहे कि इस गांव वालों ने एक परदेसी को आंधी और बारिश में अकेला मरने के लिये हरमुख पर भेज दिया। चलो बाबू, मैं तुम्हारे साथ हूं। मैंने दुल्हन का भेष कर लिया है ताकि यह अरमान न रह जाय कि मरने से पहले तुम्हारी दुल्हन न बन सकी।

सरजू : (तेज़ी से आकर) नहीं, यह नहीं होगा, चौधरी क्यों भगवान के क़हर को बुलाते हो, पहले सिर्फ़ दो पत्थर गिरे थे आज सारा पहाड़ फट पड़ेगा। इनका प्यार सच्चा है। मैं गवाही देता हूं कि इनका प्यार सच्चा है। ब्याह कर दो, मैं गवाही देता हूँ...

पुजारी : लेकिन तुम्हीं ने तो कहा था...

सरजू : मैंने झूठ कहा था, मैंने अपने लालच के मारे कहा था, मैं झूठा हूं, मुझे सज़ा दो, मैं झूठा हूं...इनका व्याह कर दो, मैं गवाही देता हूं, इनका प्यार सच्चा है, व्याह कर दो (झण्डा छीन कर दरें में भाग जाता है।)

चौधरी : अब तुम्हारी गवाही सरजू ने दे दी है, जाओ बाबू व्याह के लिये तैयार हो जाओ।

[कलाकार चुप है और गौगां की तरफ़ इशारा करता है।]

चौधरी : तो पुजारी जी...

[धीरे धीरे सब मन्दिर में जाने लगते हैं। मन्दिर से घण्टे, घड़ियाल, शंख, शहनाई वग़ैरह वग़ैरह साज़ों की आवाज़ें आने लगती हैं]

विशला : सरजू कहां है ?

१ लड़का : वह देखिये वह जा रहा है, वहाँ।

बन्सी : (आवाज़ देता है) सरजू हो ! सरजू...(कोई जवाब नहीं)

चौधरी : रहने दे बन्सी, उससे नहीं देखा जायगा।

[सब मंदिर के अंदर चले जाते हैं। बादल गरजते हैं और बिजली चमकती है। दूर से बन्सरी की आवाज़ आती है। मंदिर के अंदर से मंत्रों की आवाज़ आती है]

[धीरे धीरे परदा गिरता है]

Please don't forget to read this book.

दूसरा अंक समाप्त।

तीसरा अंक

पहला सीन

कलाकार का स्टूडियो – वक्त शाम

[परदा खुलता है तो हम देखते हैं कि कलाकार के स्टूडियो में गौरां की व पहाड़ी इलाक़ों की दस तस्वीरें दीवार पर लटक रही हैं, दो चार नीचे रखीं हैं, दो चार स्केच बने रखे हैं। एक जगह ईज़िल पर कन्वास लगा हुआ रखा है। स्टेज ख़ाली पड़ा है। थोड़ी देर में नत्थू नौकर भागता हुआ बाहर वाले दरवाज़े से दाख़िल होता है और मकान के अन्दर चला जाता है, उसके हाथ में एक सेन्डल है। चन्द लम्हे बाद वही सेन्डल स्टेज पर आकर गिरता है और नत्थू भागता हुआ स्टेज पर आता है। गौरां तेज़ी से दाख़िल होती है]

गौरां : (गुस्से से) साठ बरस की उम्र हो गई, अक़्ल ज़रा नहीं आई, ज़रा सा काम दो – बिगाड़ देता है। निकल जाओ यहां से, दूर हो जाओ मेरे सामने से, सेन्डल सत्यानाश कर दी, गधा कहीं का।

कलाकार : (दाख़िल होकर) गौरां! यह क्या हो रहा है, आख़िर हुआ क्या है ? बात क्या है ? (नत्थू से) क्या बात है बाबा ?

गौरां : बाबा ! बाबा !! कह कर सर पर चढ़ा रखा है। बुड्ढा हुआ तो क्या, नौकर तो आख़िर नौकर ही है (सेन्डल दिखाती हुई) यह नया सेन्डल सत्यानाश कर दिया, मैं अब पार्टी में पहन कर क्या जाऊंगी ? इसका सर, ग़लत टाँका लगवा दिया, कहा था यहां, लगवा दिया यहां।

नत्थू : भला बाबू मैं क्या जानूँ, मैंने तो आज तक यह चीज़ें देखी भी नहीं थीं।

गौरां : (गुस्से से) बस तू ज़्यादा बक बक मत कर।

कलाकार : आख़िर इतना गुस्सा करने की क्या ज़रूरत है, तुम्हारे पास तो कई सेन्डल और भी रखे हैं, उनमें से पहन लो।

गौरां : हाँ हैं क्यों नहीं, मगर इस साड़ी के साथ तो यही जाता है।

कलाकार : तो अभी यह भी ठीक हो सकता है।

गौरां : नहीं, यह अब क्या ठीक होगा, मैं इसे अब न पहनूंगी। आज से यह मेरा कोई भी काम न किया करे, मैं मोहनी से करवा लूगीं। (आवाज़ देती है) मोहनी !

मोहनी : (अन्दर से) जी ! (दाख़िल होती है)

गौरां : जा इस सेन्डल को जल्दी ठीक करा के ले आ।

मोहनी : अच्छा बीबी (जाने लगती है)

कलाकार : (रोक कर) ठहरो मोहनी ! (सेन्डल लेकर नत्थू से कहता है) लो बाबा, जाओ उससे कहो यूँ टाँक दे। (नत्थू बाहर चला जाता है और मोहनी घर के अंदर चली जाती है।)

गौरां : सुबह से गये हुए अब आप आये हैं, कह कर भी न गये कि कहाँ जा रहे हैं। हम तो जैसे कोई हैं ही नहीं, हमसे तो जैसे कोई वास्ता ही नहीं।

कलाकार : नारंग बाबू के यहाँ से आदमी आया था-Sketches (स्केचेज़) मांगे थे, मैंने सोचा खुद ही दे आऊँ। रूपये की भी ज़रूरत थी (रूपया देता हुआ) यह लो पांच सौ रुपया।

गौरां : इतने Sketches (स्केचेज़) के सिर्फ़ पांच सौ ?

कलाकार : क्या यह कम हैं ?

गौरां : (तन्ज़िया तौर पर) हाँ यह तो बहुत ज़्यादा हो गये। (तस्वीरों की तरफ़ इशारा करके) लेकिन पचास हज़ार रूपया कम है जो इनके लिये मिल रहा है। इन लाडलियों को तो यहाँ से हटाना ही नहीं है, इनका तो चाहे एक लाख भी क्यों न मिले, वह तो जैसे कुछ है ही

नहीं। पर मैं भी बेवकूफ़ हूँ, बीसियों बार बे इज़्ज़ती हो चुकी है, मैं फिर भी न समझी। मैं कौन होती हूँ इनके बारे में कुछ कहने वाली। मैं तो कुछ कह ही नहीं सकती इनके बारे में।

कलाकार : (बात टालने के ख़्याल से) गौरां ! एक प्याला चाय मिल सकता है ?

गौरां : मिल क्यों नहीं सकता, मैंने खाने के लिये भी इन्तज़ार किया था, खाना उसी तरह रखा है।

कलाकार : तुमने खा लिया ?

गौरां : हाँ, तीन बजे तक राह देखती रही, फिर खा लिया।

कलाकार : अच्छा किया।

गौरां : आप तो जानते हैं मुझसे अकेले खाया नहीं जाता, यूँही दो चार निवाले ज़हरमार कर लिये। मोहनी से कहूँ कि खाना गर्म करके ले आये (आवाज़ देती है) मोहनी खाना ले आओ।

कलाकार : नहीं बस चाय ही काफ़ी है।

गौरां : (मोहनी से) अच्छा चाय ले आओ।

मोहनी (अन्दर से) अच्छा बीबी।

गौरां : रमेश आता ही होगा, कह गया था कि छः बजे आऊँगा। आज उसका Birthday (बर्थ डे) है। आपको तो शायद यह याद भी न होगा ?

कलाकार : याद है, इसीलिये तो यह (फ्रेम दिखाता है) फ्रेम भी लाया हूं। उसे यह Sketch (स्केच) बहुत पसन्द था, आज भेंट कर दूँगा। पर यह छः बजे क्यों ? इतनी जल्दी क्यों ?

गौरां : इसके बाद कहता था कि Full moon (फुल मून) में Picnic (पिकनिक) पर चलेंगे। कहता था Party (पार्टी) लेक वाले बंगले पर होगी, दूर जाना होगा। रास्ते में और लोगों को भी लेना

है। हम लोग पहले ही तय्यार हो जाते तो अच्छा था। आप जल्दी से कपड़े बदल लीजिये, तब तक चाय आती है।

कलाकार : (अपने कपड़ों की तरफ़ इशारा करके) कपड़े तो पहन रखे हैं, ठीक हैं न?

गौरां : (तन्ज़ से) हाँ! आप बड़े कलाकार ठहरे, आपको क्या परवाह कि लोग आप को इस लिबास में देख कर क्या कहेंगे।

कलाकार : लिबास ही तो सब कुछ नहीं हुआ करता गौरां!

गौरां : मैं जानती थी आप यही कहेंगे, आप को तो मेरे भी इस तरह के कपड़े पहनने बुरे लगते हैं।

कलाकार : मैंने तुम्हारे बारे में तो नहीं कहा।

गौरां : (तिनक कर) और किसके बारे में कहा था? जब भी मैंने कोई नई साड़ी ली आप ने तन्ज़ से मुसकुरा दिया। आप तो यही चाहते हैं कि मैं वही गंवारू कपड़े पहने रहूं। वही फ़रगल, वही रस्सी, वही घुट्टन्ना।

कलाकार : उन में तुम कितनी हसीन दिखाई देती थीं गौरां! मंगवाऊं? (मोहनी को आवाज़ देता है) मोहनी! बीबी के वह कपड़े उठा लाओ जो मेरी अलमारी में रखे हैं, लाल शाल में लिपटे हुए हैं, ऊपर के ख़ाने में हैं, सँभाल कर उठाना, बीच की चीजें न गिर जायं। याद है शादी के दिन तुमने कहा था "लो बाबू! मैंने दुल्हन का भेष बना लिया है ताकि यह अरमान न रह जाय कि इस जन्म में तुम्हारी दुल्हन न बन सकी।" मगर उसके बाद यह अरमान ही रहा कि तुम्हें फिर उस लिबास में देखूं (मोहनी कपड़े लेकर आती है) लो देखो (कपड़े खोलता है)

गौरां : (कपड़े हटाते हुए) हाँ, आपको तो यही प्यारे लगेंगे, मगर मैं क्या करूं मुझे तो यही पसन्द हैं। मैं तो यही चाहती हूँ कि आप भी

अच्छे अच्छे कपड़े पहन कर मेरे साथ चलें, पर आप न तो खुद अच्छे कपड़े पहनते हैं और न दूसरे को पहनने देते हैं।

कलाकार : मैंने तुम्हें तो कभी नहीं रोका?

गौरां : और रोकने के सर सींग होते हैं? मैंने जब भी बाल बनाये, आप ने कहा बिगाड़ दिये। आपने आज तक अच्छी तरह देखा भी है कि मैंने किस ढंग से बाल बनाये हैं? आपने नज़र उठा कर यह देखने की कोशिश की है कि मैंने क्या पहना है और मैं इस तमाम शृंगार में कैसी लगती हूँ।

कलाकार : (गौरां की तस्वीर को देखकर) हाँ। बहुत हसीन लगती हो, तम कितनी सुन्दर हो गौरां!

गौरां : मैं किसी दिन इस तस्वीर को बाहर फेंक दूंगी, यह तो मेरी सौत हो गई है।

कलाकार : (तस्वीर देखते हुए) तुम पहाड़ों की आत्मा हो गौरां!

गौरां : अगर आप मुझे यूँ चिढ़ायेंगे तो मैं इन्हें जला डालूंगी–मुझे तो ज़हर लगती हैं यह सब।

कलाकार : गौरां! यह तुम्हें क्या होता जा रहा है। जब तुम ऐसी बातें करती हो तो मुझे ऐसा महसूस होता है कि मेरी गौरां नहीं कोई और बोल रहा है। मेरी गौरां, यह गौरां कभी ऐसी बातें नहीं कर सकती। कभी कभी मैं सोचता हूँ कि तुम्हें वहाँ से लाकर मैंने कोई बड़ा पाप किया है। पुजारी जी ठीक कहते थे कि इस मिलन से चीखें पैदा होंगी। मुझे ऐसा लगता है कि तुम तो मेरे साथ चली आई मगर तुम्हारी आत्मा उन पहाड़ों में ही रह गई। जानती हो, रात को जब तुम सो जाती हो तो मैं घन्टों तुमको देखा करता हूँ। हुस्न की वही तस्वीर, प्रेम की वही प्रतिमा। उस वक्त तुम्हारे माथे पर बल नहीं होता, त्योरी चढ़ी नहीं होती।

जी चाहता है तुम्हारे क़दम चूम चूम लूँ मगर डर लगता ह कि तुम जाग उठोगी और फिर वही बातें होंगी, वही झगड़े। फिर शहर चला आता हूँ यहां (खिड़की के पास आता है) खड़ा हो जाता हूँ, दूर उन पहाड़ों को देखता रहता हूँ और उनसे चीख़ चीख़ कर कहता हूं कि मेरी गौरां मुझे वापिस कर दो, मेरी गौरां मुझे लौटा दो, तुमने उसे कहां छिपा रखा है, क्यों छिपा रखा है, क्यों ? क्यों ? पर नहीं यह पहाड़ों का कसूर नहीं है, कसूर है मेरा, मैंने तुम्हें पहाड़ों से चुरा लिया है यह मुझे उस पाप की सज़ा मिल रही है। मैंने सरजू को दुख दिया है, सरजू कितना अच्छा लड़का था, तुमसे कितना प्यार करता था। मैं उस दिन थोड़ी देर के लिये रूक गया, मैं चाहता था सरजू से कहूं तुम्हारी गौरां तुम्हें मुबारक हो, मैं उसकी तस्वीरें लिये जाता हूं। कितना अच्छा होता तुम्हारा व्याह सरजू से हो जाता, फिर गौरां—गौरां रहती।

गौरां : सरजू, सरजू, मेरे सामने उसका नाम न लिया कीजिये। आप समझते हैं कि मैं सरजू जैसे गंवार से शादी कर सकती थी, मैं उससे उसी तरह प्यार करती थी जिस तरह घर की गाय से या पाल्तू हिरन से।

कलाकार : गौरां! यह क्या कह रही हो। कहो यह झूठ है, यह ग़लत है।

गौरां : नहीं यह झूठ नहीं, सच है — मैंने सरजू को कभी अपने बराबर नहीं समझा था। वह मेरी जिन्दगी में उसी तरह था जिस तरह घर के लिये आंगन, या आंगन का पेड़-इससे ज़्यादा कुछ नहीं।

कलाकार : गौरां! मैंने कहा था कि मैं इस पारस के टुकड़े को लिये जा रहा हूँ ताकि इसके स्पर्श से शहर की ज़ंग आलूदः मूर्त्तियाँ कुन्दन हो जायं, मगर देखता हूँ कि उसका उल्टा हुआ। शहर की हवाओं ने तुम्हें छुआ और तुम्हारी आत्मा पर मनों ज़ंग की तहें जम गईं,

मैं उस ज़ंग को हटा देना चाहता हूँ। मैं देखता हूँ तुम्हें उस ज़ंग से प्यार हो गया है, तुम्हें इन कपड़ों से प्यार हो गया है जो ख़्वाहिशात को भड़काते हैं मगर शरीर में इतनी शक्ति नहीं छोड़ते कि उन ख़्वाहिशात को पूरा कर सके। तुम्हें इस Powder (पाऊडर) और Paint (पेन्ट) से प्यार हो गया है जो थोड़ा देर के लिये हुस्न को एक जिला दे देता है लेकिन तुम नहीं जानतीं कि वह अंदर ही अंदर चहरे की ख़ूबसूरती को खा जाता है, जिल्द की जो मलाहत है उसको चाट जाता है, रूप में जो नमक है उसे धो डालता है।

गौरां : मैं यह सब कुछ नहीं सुनना चाहती।

[जाने लगती है, कलाकार हाथ पकड़ कर रोक लेता है]

कलाकार : मैं जो कह रहा हूँ तुम्हें सुनना होगा। गौरां, तुम इस बनावट की दलदल में धंसती चली जा रही हो। मैं तुम्हें खींच कर बाहर निकालना चाहता हूँ, तुम असली रूप में आ जाओ गौरां! तुमने ज़ाहिरदारी की दीवारें चढ़ा कर मेरी गौरां को क़ैद कर रखा है, तुम खुद ही इन दीवारों को हटा दो नहीं तो मैं खुद ही एक दिन अ' हाथों से इन्हें तोड़ फोड़ दूँगा और अपनी गौरां को आज़ाद करा लूँगा।

गौरां : देखिये आप मेरा हाथ मरोड़ रहे हैं—मेरा हाथ छोड़ दीजिये।

कलाकार : (हाथ छोड़ कर) मैं तुम्हारा हाथ नहीं मरोड़ना चाहता, हाँ, मैं तुम्हारी आत्मा को झिंझोड़ कर आज़ाद कराना चाहता हूं। मुझे कभी कभी महसूस होने लगता है कि तुमने मेरी गौरां का गला घोंट दिया है। तुम पहाड़ों की आत्मा हो गौरां! तुम कहाँ हो, मैं तुम्हें ढूंढता हूं—तुम कहाँ हो? (गौरां रोने लगती है और बैठ जाती है) गौरां! मुझे माफ़ कर दो, मैं यह सब इसीलिये कहता हूं कि मैं तुमसे बेहद प्यार करता हूं।

गौरां : झूठ है, आप झूठ कहते हैं। आप मुझसे प्यार नहीं करते। आपको अपने आपसे प्यार है, अपने फ़न से प्यार है, मुझसे नहीं। मेरी हस्ती आप के लिये कोई मानी नहीं रखती। मैं क्या चाहती हूं आपको इसकी परवाह नहीं। आप चाहते हैं कि मैं Model (मॉडेल) बनकर बैठी रहूं और आप तस्वीरें बनाते रहें, और दुनिया कहे कि आप इतने बड़े कलाकार हैं। फिर आप तस्वीरों को बेचना भी नहीं चाहते। जब भी कभी Exhibition (एग्ज़ीबीशन) में भेजा—लिख दिया "बिकने के लिये नहीं" ताकि दुनिया कहे, आप मानवता की—Nation (नेशन) की कितनी सेवा कर रहे हैं। मैं पड़ूं चूल्हे या भाड़ में, आपको इसकी कोई चिन्ता नहीं।

कलाकार : गौरां !

गौरां : मर गई गौरां।

कलाकार : नहीं ! गौरां अभी जीवित है, गौरां नहीं मर सकती, वह अमर है। (तस्वीरों की तरफ़ देखता है) जब तक उसको यह तस्वीरें मौजूद हैं वह ज़िन्दा रहेगी।

गौरां : तस्वीरें ! तस्वीरें !! तस्वीरें !!! मैं आज ही इनको उठवा कर न फिकवा दूँ तो मेरा नाम गौरां नहीं।

कलाकार : गौरां ! (हार्न की आवाज़ आती है, कलाकार खिड़की की तरफ़ जाता है, मोहनी चाय लाकर रख जाती है) रमेश आ गया ! (बाहर देख कर) हाँ वही है। उठो गौरां मुंह धो डालो। वह हमें बहुत मानता है, तुम्हारी कितनी इज़्ज़त करता है। वह तुम्हें इस तरह देखेगा तो क्या कहेगा। उसे तकलीफ़ होगी।

गौरां : उसे तकलीफ़ होगी मगर आपको नहीं। आने दो उसे—देख ले वह भी कि मेरी इस घर में क्या इज़्ज़त है, आप मुझे कितना चाहते हैं। वह आपको देवता समझता है, कला का देवता, Art (आर्ट)

का देवता। आज वह भी देख ले कि उसका Art (आर्ट)का देवता कितना ज़ालिम है, कितना खुदगर्ज़ है।

रमेश : (बाहर से) क्यों भई अन्दर ही हो ?

कलाकार : (गौरां से) उठो गौरां (गौरां उठती है और आँसू पोछती खिड़की की तरफ़ जाती है, रमेश से कहता है) चले भी आओ रमेश।

रमेश : (दाखिल होकर) Hello! Hello (हेलो हेलो) क्या मामला है ? क्या बात है ? आज हमारा Birthday (बर्थ डे) है और यहाँ यह सन्नाटा।

कलाकार : Happy Birthday (हैपी बर्थ डे)

रमेश : Thank you (थैंक यू) मैं पार्टी में लेने के लिये आया हूँ। यह सन्नाटा कैसा ? (चाय की ट्रे की तरफ़ देखकर) चाय धरी है और पीने वाला कोई नहीं। क्या कुछ झगड़ा हुआ है ? क्यों भाभी क्या बात है, आखिर यह सन्नाटा क्यों ?

गौरां : (कलाकार की तरफ़ इशारा करके) इन्हीं से पूछो।

रमेश : क्यों भाई साहब, क्या बात है ?

कलाकार : कुछ भी तो नहीं, चाय पियो रमेश।

रमेश : चाय ! यह वक़्त तो कुछ और पीने का है, खैर यहाँ चाय ही सही। (गौरां की तरफ़ देखकर) इतनी नाराज़ हो भाभी कि चाय भी न बनाओगी, अच्छा हम ही बनाये लेते हैं। (अब गौरां आती है और चाय बनना शुरू करता है।)

कलाकार : (गौरां से) एक प्याला मेरे लिये भी। (गौरां उसकी तरफ़ देखती है और चाय बनाकर देती है)

रमेश : That is the limit (दैट इज़ दी लिमिट) आखिर हुआ क्या है ? बात क्या है ?

गौरां : यही तस्वीरें।

कलाकार : कहती हैं इन्हें बेच दो।

रमेश : कहती तो ठीक हैं। आखि़र वह बनाई किस लिये जाती हैं?

गौरां : बनाई जाती हैं आर्ट के लिये, कला के लिये, फ़न के लिये। तस्वीरें न हुईं मेरी सौतें होगईं, मैं कुछ भी नहीं, यह तस्वीरें सब कुछ हैं। मैं जाऊं जहन्नुम में, यह तस्वीरें यहाँ से नहीं जायंगी।

कलाकार : मैंने तो यह नहीं कहा गौरां!

गौरां : इन लफ़्ज़ों में नहीं कहा होगा मतलब तो यही था।

रमेश : भई हद होगई, इसमें भी कोई तुक है। जांयगी क्यों नहीं यह तस्वीरें, बस आज ही जा रही हैं। आप तो ख़ामख़ा घबरा रही हैं भाभी। भाई साहब समझते हैं मैं डींग मार रहा हूँ, गप्पें हाँक रहा हूँ (चेक की किताब जेब से निकालकर) चेक बुक जेब में डाले फिरता हूँ, मैं अभी लिखे देता हूँ। मैं चाहता हूँ यह तस्वीरें Lake (लेक) वाले बंगले की पार्टी की ज़ीनत बनें। लीजिये चेक लिखे देता हूँ (चेक लिखने लगता है)

कलाकार : मैं यह तस्वीरें नहीं बेचूंगा।

गौरां : सुन लिया तुमने।

रमेश : यह एक ही रही, बेचेंगे क्यों नहीं? आखि़र यह बनाई किस लिये जाती हैं? बेचने के लिये?

कलाकार : ऐसी तस्वीरें रोज़ रोज़ नहीं बनाई जातीं।

रमेश : ऐसी बातें छोड़िये। आप चाहें तो दिन में ऐसी बीस तस्वीरें बना दें। Humility is the greatest virtue of an artist (ह्यूमेलिटी इज़ दि ग्रेटेस्ट वरचू ऑफ़ एन आर्टिस्ट)। भाभी! Art for art sake (आर्ट फॉर आर्ट सेक) तो सुना था, लेकिन Art for artist sake (आर्ट फॉर आर्टिस्ट सेक) कभी नहीं सुना था।

फिर यहाँ तो कला स्वयं निवास करती है। कलाकार हैं, उनकी प्रेरणा भी है, फिर भला इनकी क्या ज़रुरत! भई खुदगर्ज़ी की भी कोई हद होती है। जाने दीजिये इन्हें, कोई वीराना आबाद हो जायगा इनसे, किसी गरीब का घर सज जायगा।

कलाकार : तुम्हें सजावट के लिये चाहियें तो ले जा सकते हो।

रमेश : Good ! (गुड)

कलाकार : पर यह नहीं, और बीसों रखी हैं। रमेश मैं उस Crowd (क्राउड) को जानता हूँ जो तुम्हारे यहाँ आता है। उसके नज़दीक यह तस्वीरें किस कीमत की हैं — सजावट — या ज़्यादा से ज़्यादा कितने में खरीदी हैं, किसने Paint (पेन्ट) की हैं। और बस, इससे ज़्यादा कुछ नहीं, उनका Interest (इन्ट्रेस्ट) वहीं खत्म हो जाता है और मुझे डर है कि खरीदने के बाद तुम्हारा Interest (इन्ट्रेस्ट) भी वहीं खत्म हो जायगा।

रमेश : मेरा Interest (इन्ट्रेस्ट) यहाँ खत्म नहीं होगा, आप इसकी तसल्ली रखें। मुझे वह नहीं चाहियें, मुझे (तस्वीरों की तरफ़ इशारा करके) यह चाहियें । मैंने सब दोस्तों से कह रखा है कि Art (आर्ट) के Master-piece, (मास्टर पीस) कला के शाहकार खरीद रहा हूँ । आप जानते हैं, लोग मेरा मज़ाक़ करेंगे। यह ज़रूर जायँगी, यह रहा चेक। (चेक देता है गौरां चेक ले लेती है)

कलाकार : गौरां ! चेक लौटा दो। मैं नहीं बेचूंगा।

रमेश : आख़िर क्यों !

कलाकार : यह Drawing rooms (ड्राइंग रूम्स) के लिये नहीं हैं रमेश ! इन्हें खरीदने की कोशिश न करो। तुम इन्हें नहीं खरीद रहे, तुम मुझे खरीदना चाहते हो, मेरे फ़न को, मेरी कला को खरीदना चाहते हो, सिर्फ़ नुमायश के लिये, दिखावे के लिये। तुम

अभी तक यह नहीं जानते कि यह Yellow (यलो) यहाँ क्यों लगाया गया है ? इस Blue (ब्लू) के यहाँ क्या मानी हैं ? मैं तुम्हारी तड़प को प्यार करता हूँ जो तुम्हारे दिल में कला के लिये है लेकिन इस दिखावे को नहीं, इस Showmanship (शो–मेनशिप) को नहीं। तुम्हारे पास पैसा है, कल को तुम और ज़्यादा दाम पर तस्वीरें लाओगे फिर इन तस्वीरों को किसी गोदाम में पटक दोगे, और मैं नहीं देख सकता कि मेरी गौरां किसी गोदाम मे डाल दी जाय। और फिर यह तस्वीरें मेरी भी तो नहीं, यह Nation (नेशन) की हैं, यह Nation (नेशन) की जो Art gallery (आर्ट गैलरी) बनेगी उसमें जायंगी ताकि मुल्क का हर फ़र्दोबशर इन्हें देख सके, इन के मस से अपनी ज़िन्दगियों को सुलझा सके, इन से कुछ ले सके, या उसे अपनी ज़िन्दगी में ला सके।

रमेश : वाह ! यह भी कोई बात है। Nation (नेशन) की हैं तो हम भी Nation (नेशन) के हैं–पहले Nation (नेशन) रहने के मकान तो बनवा ले फिर Art Gallery (आर्ट गैलरी) भी बन जायगी। फिर जब Art Gallery (आर्ट गैलरी) होगी तो क्या यह तस्वीरें हम न वहाँ भिजवा देंगे। लो मैं वायदा करता हूँ कि जब Nation (नेशन) की Art Gallery (आर्ट गैलरी) बनेगी तब बिला किसी मुआवज़े के वहाँ Present (प्रेज़ेन्ट) कर दूँगा, कहिये तो Agreement (एगरीमेंन्ट) लिख हूँ !

गौरां : (खुशी से) सच रमेश ?

रमेश : मैं झूठ नहीं कह रहा भाभी। मुझे तुम्हारी इन (गौरां की आखों की तरफ़ इशारा करके) आँखों की क़सम मैं सच कहता हूँ।

गौरां : अब आप को क्या ऐतराज़ है ?

रमेश : अब ना नूँ न कह सकेंगे । आप देखेंगे National Gallery (नेशनल गैलरी) क्या होगी आप ही की तस्वीरों से भरी होगी। तस्वीरें तो तस्वीरें आप के तो Sketches (स्केचेज़) भी वहाँ होंगे। आप इसकी चिन्ता न कीजिये। यह चेक रख लीजिये, इतमीनान रखिये बैंक में पैसा है। भाभी नत्थु से कहो इन्हें उतार कर Pack (पैक) करके रख ले, मुझे Mrs. Bhandari (मिसेज़ भण्डारी) को Pick up (पिक अप) करना है, करनल साहब तो यहाँ हैं नहीं, बस आप जल्दी से तय्यार हों जाईये। मैं लौटते वक़्त ऊपर नहीं आऊंगा। जब हार्न करूं आप चले आईये और तस्वीरें लेते आईये। (जाने लगाता है)

कलाकार : रमेश! पैसा तो तुम्हारे पास बहुत है न?

रमेश : (रुककर) इस तरह Art (आर्ट) भी मेरे पास बहुत हो जायगा, बस आप की कृपा चाहिये।

कलाकार : (गौरां से) तुम यहां चाहती हो। अच्छा! मैं हारा तुम दोनों जीते। पर रमेश मेरी एक बात मानो—आज यह तस्वीरें नहीं जायंगी, आज की रात इन्हें यहीं रहने दो।

रमेश : लेकिन मैं तो पार्टी में Announce (एनाउन्स) करना चाहता था।

कलाकार : तुम Announce (एनाउन्स) कर दो, लेकिन तुम यह तो नहीं चाहोगे कि यह इन Frames (फ्रेम्स) में जाय। इन पर Polish (पॉलिश) होना चाहिये शायद यह बदल्ने ही हों, इस तरह तो यह भद्दी माल्म होंगी। मैं कल शाम तक पहुंचा दूंगा।

गौरां : विछड़न की रात कभी न हो।

कलाकार : तुम हंसती हो?

गौरां : नहीं, नहीं, मैंने तो यूं ही कह दिया, लीजिये मैं ख़ामोश हूं।

कलाकार : क्यों रमेश ?

गौरां : (रमेश से) इसकी ज़िद्द तुम भी न करो, कल ही सही। इन्हें एक रात और रह लेने दो, बेचारी।

रमेश : अच्छा भाभी तुम्हारी खुशी।

कलाकार : इसी की खुशी के लिये सब कुछ कर रहा हूं।

गौरां : अच्छा यह एहसान मुझ पर ही रहा (आर्टिस्ट की तरफ़ देखकर) आपका भी और (रमेश की तरफ़ देखकर) तुम्हारा भी।

रमेश : Good ! (गुड) अच्छा तो मैं चला। आप तय्यार रहिये, मुझे इन्तज़ार न करना पड़े।

(रमेश चला जाता है, आर्टिस्ट घूम कर तस्वीरों को देखता है। गौरां रमेश के साथ दरवाज़े तक जाती है। आर्टिस्ट ख़ामोश बैठ जाता है, Horn (हॉर्न) की आवाज़ आती है, गौरां खिड़की से हाथ हिलाती है, जब घूमती है तब कहती है।)

गौरां : अब यह क्या ?

कलाकार : नहीं कुछ भी तो नहीं। यूँ ही सोच रहा था, आज मैं ग़रीब हो गया।

गौरां : ग़रीब हो गये, ऊँह ! (चेक निकाल कर दिखाती है) यह देखिये पचास हज़ार। अच्छे अच्छे कपड़े आयेंगे, आपके लिये उम्दा उम्दा कन्वास, रंग और ब्रुश लाऊंगी, आप अच्छी अच्छी तस्वीरें Paint (पेन्ट) करेंगे, फिर वह बिकेंगी, और हम अमीर हो जायंगे, हमारे बंगले होंगे, ठाठ होगा। यह पुराना खटारा जायगा, नई बढ़िया मोटर आयेगी। फिर लोग कहेंगे वह देखो, वह जा रहे हैं कलाकार और उनकी गौरां।

कालाकार : गौरां ! कला की दौलत पैसा नहीं, प्यार है। (गौरां झुक कर कलाकार के घुटनों पर सर रख देती है, वह प्यार से उसके बालों पर हाथ फेरता है)

Don't forget to read this book

गौरां : देखिये आप मेरे बाल खराब कर रहे हैं। अब उठिये, जल्दी से तय्यार हो जाईये, रमेश अभी आता ही होगा, (अन्दर जाने लगती है) मैं भी तय्यार होकर आई (रुक कर) वह नत्थु मुरदार अभी तक नहीं आया, बस जहाँ जायगा बैठ जायगा। गधा है, गधा।

कलाकार : गौरां!

गौरां : नहीं नहीं भूल गई, लो कान पकड़ती हूं। उसने आप को पाला है—बाबा—मैं तो आज से हर रोज़ सवेरे उठ के हाथ जोड़कर प्रणाम करुंगी।

कलाकार : गौरां! (नत्थू आता है)

गौरां : (घूंघट काढ़कर) आप आ गये नत्थुजी—बाबाजी—पायं लागूं।

नत्थू : हाँ हाँ बीबी यह क्या कर रही हो?

गौरां : (कलाकार से) देखिये नत्थूजी—बाबा—कितने अच्छे हैं। देखिये मेरी सेन्डल कितनी अच्छी बनवा लाये हैं। मैं ही बुरी हूँ, खामखाँ इतना कुछ बक गई। मुझे क्षमा कर दो। (नत्थू के पैरों को हाथ लगाती है)

नत्थू : (हटकर) ना बेटी! राम राम, तुम मेरी बेटी समान हो। (कलाकार की तरफ़ इशारा करके) जैसा यह वैसी तुम। यह छोटा था तो मेरी पीठ पर चढ़ बैठता था, कहता था घोड़ा बनो। मेरे मुँह में अंगोछा डाल लगाम बना लेता था और कहता था भागो, और मैं भागता था, ज़रा रुका कि इसने लात दी और कहा 'घोड़ा है कि गधा।' अब तो मुद्दत हो गई इसने कभी ऐसा नहीं कहा। आज तुमने कहा मुझे बड़ी खुशी हुई, वही समा सामने आगया। तुम बड़ी अच्छी हो बिटिया।

[गौरां एक लम्हा ठहर कर अन्दर चली जाती है]

कलाकार : बाबा! गौरां बड़ी भोली है, उसे कुछ होगया है। वह कभी कभी ऐसे ही बहुत कुछ कह जाती है जो उसे न कहना चाहिये। तुम

उसे माफ़ कर दो। लो उसकी जगह मैं तुमसे माफ़ी मांगता हूँ, उससे नाराज़ न हो बाबा (पांव छूता है)

नत्थू : अरे का पाप चढ़ाओ, राम राम, मैं नाराज़ कब हूँ। तुम मेरे बिटवा समान हो, वह तुम्हारी बहू है, मेरी बिटिया हुई, भला बिटिया से कोई नाराज़ हो सके है, क्या बात करो।

कलाकार : तुम कितने अच्छे हो बाबा! जी चाहता है तुम्हारे घुटनों से लिपट कर रो दूँ।

नत्थू : ना, ना, रोएँ तुम्हारे दुश्मन। तुम आज कैसी बातें कर रहे हो? (चाय की ट्रे की तरफ़ देखकर) यह चाय पड़ी पड़ी ठण्डी भी हो गई, लाओ मैं और गरम ले आऊँ।

[मोहनी को आवाज़ देता है, वह आती है और ट्रे ले जाती है]

कलाकार : नहीं बाबा तुम यहीं बैठो यहाँ—यहाँ। (नत्थू को पास पड़े स्टूल पर बिठाता है, फिर उसके घुटनों से लिपट जाता है।)

नत्थू : अरे यह क्या करते हो मालिक! (उठने लगता है)

कलाकार : (खुद उठकर, नत्थु को बिठाते हुऐ) नहीं बाबा, बैठे रहो। इसी तरह मैं तुम्हारी तस्वीर बनाऊँगा

नत्थू : क्यों मज़ाक़ करो हो बाबू! अब यह बुढ़ारा तस्वीर के लायक़ थोड़ा है, हाँ कभी जवानी में बनाई होती तो बात थी। जब तुम इसी तरह मेरे घुटनों से लिपट जाते थे, मैं अमरूद खाऊँगा और मैं तुम्हें कंधों पर उठा लेता था। याद है गांव के बग़ीचे में, और तुम अमरूद तोड़ लेते थे, पक्के पक्के खा लेते थे और कच्चे कच्चे मेरी टटरी पर मारते जाते थे। क्या वक़्त था वह भी, चलो बाबू गांव चलें।

कलाकार : हाँ बाबा! चलेंगे, अब शहर में जी नहीं लगता, दम घुटने लगता है (गौराँ आती है वह बाहर जाने के कपड़े पहने है)

गौराँ : अब यह क्या हो रहा है? देख लो बाबा फिर कहेंगे कि मैं ख़ामख़ाँ

बिगड़ती हूँ। रमेश अब आता ही होगा, और यह हैं कि अभी तय्यार होने की फ़िक्र तक नहीं।

कलाकार : मैं नहीं जा सकूंगा।

गौराँ : तुमने सुन लिया बाबा!

नत्थू : नहीं, नहीं बेटा! यह क्या बात हुई, जाओगे क्यों नहीं? लो मैं तुम्हारे कपड़े निकाले देता हूँ (चला जाता है)

कलाकार : गौराँ!

गौराँ : जी!

कलाकार : मैं वहाँ नहीं जा सकूंगा—आज नहीं।

गौराँ : पर क्यों?

कलाकार : तुम नहीं समझ सकोगी।

गौराँ : हाँ, मैं तो जाहिल हूँ, बेवकूफ़ हूँ। दो साल बराबर पढ़ती रही, रात दिन एक कर दिया ताकि आपके Level (लेविल) के नज़दीक आ सकूं, आपकी सोसायटी में घुल मिल सकूं, लेकिन आपको खुश न कर सकी।

कलाकार : नहीं गौरां!

गौरां : नहीं क्या। आप साफ़ साफ़ क्यों नहीं कहते कि आप समझते हैं कि मैं वही गौरां हूं—वही जो कहा करती थी मैं कुछ नहीं समझती, कुछ नहीं जानती। पर अब वह बात नहीं रही। मैं सब कुछ समझती हूँ, सब कुछ जानती हूं।

कलाकार : इसी बात का तो रोना है कि तुम सब कुछ समझती हो, फिर भी कुछ नहीं समझतीं, सब कुछ जानती हो पर कुछ भी नहीं जानतीं—जानती हो (तस्वीरों की तरफ़ इशारा करके) यहां आज इनकी आख़री रात है, बस आज ही की रात की तो मेहमान हैं यह, कल इनसे यह घर छूट जायगा, यह पराई हो जायंगी।

गौरां : पराई हो जायंगी, अच्छा हो जायगा, यहाँ पड़ी पड़ी क्या संवार रही थीं। इनके होते तो आप मेरी तरफ़ नज़र उठा कर देखते तक नहीं।

कलाकार : ऐसे न कहो, यह ज़ुल्म है। तुम तो सौतेली माँ की सी बातें करने लगीं, पर है भी तो ठीक। यह तुम्हारी जाई नहीं हैं न, हैं मेरी जाई, मैं इनकी माँ हूँ, तुम नहीं। पर यह रूप तो तुम्हारा ही है, तुम इनकी माँ क्यों न बन सकीं ? तुम माँ बन सकतीं तो फिर यह यहाँ से यूँ निकाली न जातीं, फिर तुम इन्हें हटा देने को न कहतीं—सजा के घर में रखतीं।

गौरां : सजा के घर में रखती—आग में न झोंक देती इन्हें।

कलाकार : गौरां !

गौरां : बस मेरे सामने इनका नाम न लीजिये, शुक्र होगा कल यह यहाँ से चली जायंगी, मैं तो प्रसाद चढ़ाऊंगी। अब आप पार्टी में जाना चाहते हैं कि नहीं–कहिये ?

कलाकार : मैंने कह दिया, मैं नहीं जाऊंगा।

गौरां : तो इसका यह मतलब हुआ कि मैं भी न जाऊं।

कलाकार : मैंने यह तो नहीं कहा।

गौरां : कहा नहीं, मगर आपका मतलब तो यही है।

कलाकार : जानना चाहती हो ?

गौरां : हां !

कलाकार : तो मैं नहीं चाहता कि तुम उन पार्टियों में जाओ जहाँ इन्सान की तज़लील होती हैं–जहाँ एक औरत अपना जगदम्बे का रूप खो देती है और एक वेश्या के रूप में आलों के हाथों बेपरदा की जाती है, नग्न की जाती है। जहाँ उसके लिबास की ही नहीं, आत्मा की भी धज्जियाँ उड़ा दी जाती हैं और उसे यूँ

तौला नापा जाता है जैसे कस्साब की दूकान पर पड़े हुए गोश्त को– यह रान है, यह सीना है, यह पुट्ठा है, यह मछलियाँ हैं।

गौरां : बस कीजिये बस, मैं और नहीं सुन सकती। मैं नहीं जानती थी कि आपके विचार इतने गिरे होंगे। मैं पहले ही जानती थी कि आप मुझे अपना गुलाम बना कर रखना चाहते हैं, अपनी दासी, अपनी लौंडी, जो आपके इशारों पर नाचे, आपके कहने से उठे, आपके कहने से बैठे, एक मॉडेल– जिसकी तस्वीरें आप बनाते रहें, और कुछ नहीं, मॉडेल– मॉडेल– लेकिन अब मैं मॉडेल न बनूँगी। मैं भी आप की तरह इन्सान हूँ, मेरा भी जी चाहता है कि सोसायटी मेरी इज़्ज़त करे।

कलाकार : (हिक़ारत से) सोसायटी ! इज़्ज़त ! !

गौरां : आप जलते हैं।

कलाकार : गौरां (ज़ोर से गुस्से में कहता है, गौरां सहम जाती है और बैठ कर रोने लगती है। कुछ लम्हे बाद कलाकार भी गौरां के पास बैठ जाता है) मुझे माफ़ कर दो गौरां ! मेरे प्यार में खुदग़र्ज़ी आ गई थी। तुम सच कहती हो मैं Possessive (पज़ेसिव) हो गया हूं। मैं चाहता हूं कि अपनी नज़रों की बाहों में तुम्हें जकड़े रखूं। तुम्हारे चारों तरफ़ अपने प्यार की वह मज़बूत फ़सीलें चढ़ा दूं जिन्हें किसी की निगाह तक न फाँद सके। पर यह नीच क़िस्म का प्यार है, नहीं मैं तुम्हें रोकूंगा नहीं, तुम जाओ, ज़रूर जाओ, मैंने ऐसे ही कह दिया था यह मेरी भूल थी, तुम इसे भूल जाओ, तुम जाओ। तुम्हारी खुशी ही मेरी खुशी है, तुम खुश होगी तो इसमें मुझे खुशी होगी। तुम ज़रूर जाओ (नीचे से हॉर्न की आवाज़ आती है) देखो रमेश आ गया (खिड़की से देखकर) हाँ वही है। उठो आँसू पोंछ डालो, आओ मैं तुम्हारे बालों में

फूल लगा दूँ। (फूल लगाता है) आज तुम कितनी हसीन दिखाई दे रही हो।

Like hues and harmonies of evening,
Like clouds in starlight widely spread,
Like memory of music fled
(लाइक ह्यूज़ एण्ड हारमनीज़ ऑफ़ ईवनिंग,
लाईक क्लाउड्ज़ इन स्टारलिट वाइडली स्प्रेड,
लाइक मेमरी ऑफ़ म्यूज़िक फ़्लेड)

नहीं तस्वीर से नहीं, तुमसे ही कह रहा हूँ (फिर हार्न की आवाज़ आती है) देखो वह फिर हार्न कर रहा है, तुम जाओ नहीं तो वह ऊपर आ जायगा और ख़्वामख़्वाह परेशान करने लगेगा। आओ तुम्हें Cloak (क्लोक) पहना दूँ (क्लोक पहनाता है) नहीं नहीं, मैं नाराज़ नहीं हूँ। मैं सच कहता हूँ मैं खुश हूँ, देखो मैं कितना खुश हूँ। लो यह उसकी तस्वीर, उसे दे देना (तस्वीर देता है) यह हम दोनों की तरफ़ से है। और वह टाई सेट कहाँ है जो तुमने उसके लिये ख़रीदा था? (गौरां लेने अन्दर जाना चाहती है, कलाकार रोकता है।) ठहरो, मैं ले आता हूँ, तुम उससे कह दो कि "आ रहे हैं" (कलाकार अन्दर जाता है, गौरां खिड़की पर जाकर हाथ के इशारे से समझाती है कि "आ रहे हैं")

कलाकार : (अन्दर से कहता है) नहीं मिल रहा, कहाँ धरा है? (एक लम्हे बाद) हाँ मिल गया (कलाकार एक डिब्बा हाथ में लिये बाहर आता है) लो! अब तुम जाओ, कह देना मैं नहीं आ सका, कोई ज़रुरी काम आ पड़ा था। नहीं, कह देना मेरी तबीयत ख़राब हो गई थी। (गौरां ग़ौर से देखती है) अच्छा न सही, कुछ और ही कह देना। कुछ भी कह देना। मेरा इस वक़्त न जाना ही अच्छा है, मगर

तुम ज़रूर जाओ नहीं तो उस बेचारे की पार्टी बिलकुल ख़राब हो जायगी।

गौरां : (एक क़दम चलकर) मैं जाऊं ?

कलाकार : हाँ, हाँ, जाओ।

गौरां : आप नाराज़ तो नहीं ?

कलाकार : नहीं।

गौरां : (जाते हुए मुड़कर) खाना खा लीजियेगा।

कलाकार : अच्छा ! (गौरां जाती है, कलाकार खिड़की की तरफ़ जाकर देखता है। मोटर के चलने की आवाज़ आती है। कलाकार खड़ा देखता रहता है)

नत्थू : (दाखिल होकर) लो कपड़े तय्यार हो गये हैं। (गौरां को न देखकर) बिटिया कहाँ गई ?

कलाकार : गौरां, चली गई।

नत्थू : चली गई, कहाँ ?

कलाकार : (खोया हुआ सा) चली गई, कहाँ ? कहाँ ? हाँ, पार्टी में, रमेश की पार्टी में, रमेश के साथ वह जा रही है, वह, (नत्थू खिड़की में से बाहर देखता है) वह देखो, गाड़ी घूम गई।

नत्थू : यह ठीक नहीं, बेटा !

कलाकार : हाँ, ठीक नहीं, ठीक नहीं, क्या ठीक नहीं ?

नत्थू : यह सब पार्टी वार्टी में यूँ जाना, यह ठीक नहीं। बिटिया बेचारी गांव की लड़की, फिर पहाड़ों की। इन लोगों से यूँ मिलना जुलना ठीक नहीं।

कलाकार : हूँ, तुम यहाँ बैठ जाओ। (कुर्सी पर बिठाता है)

नत्थू : हूँ क्या बेटा। तुम खुद न सोचोगे तो क्या होगा।

कलाकार : मैं क्या सोचूंगा, गौरां स्यानी है (साथ ही Canvas (केनवस) रखता है और रंग मिलाता जाता है)

नत्थू : स्यानी है, पढ़ी लिखी है, सब है, मगर तुम इन शहर वालों को नहीं जानते।

कलाकार : हूं, शहर वालों को नहीं जानते, पुजारी जी न भी यही कहा था, शहर वाले ! मैं भी तो शहर वाला हूं न, फिर।

नत्थू : तुम मेरी बात नहीं सुन रहे बेटा ! यह तुम क्या कर रहे हो ?

कलाकार : मैं तस्वीर बना रहा हूँ !

नत्थू : मेरी तस्वीर ! अरे बेटा !

कलाकार : तुम्हारी नहीं–उस बाप की जिसकी बिटिया नैहर छोड़ रही हो।

नत्थू : अरे बेटा !

कलाकार : अच्छा बाबा जब हम छोटे से थे तो तुम्हारी बेटी की शादी हुई थी, देवी, देवी दीदी, हम उसे देवी दीदी पुकारते थे। कितनी रौनक हुई थी, बरात आई ढोल–ढमक्के के साथ। हम सब खुशी से नाच ही तो रहे थे, मगर तुम रो रहे थे, किस क़दर रोए थे तुम। हमने पूछा क्यों ? तुमने कहा कुछ नहीं, यूँ ही। याद है बाबा ?

नत्थू : हाँ बेटा, मैं तो अन्धा हो गया था रो रो के।

कलाकार : मैं उस दिन न जान सका पर आज जान गया कि तुम क्यों रो रहे थे। आज पता चला कि एक बाप क्यों रोता है जब उसकी बेटी उससे जुदा होती है। महामुनि कण्व जैसे तपस्वी क्यों रो दिये थे जब उनकी शकुन्तला उनसे जुदा हुई।

नत्थू : ओ बेटा ! यह तो एक बाप का दिल ही जान सके कि उस पर क्या बीते जब बिटिया घर से बिदा हो।

कलाकार : ठीक कहते हो बाबा, पर उस बाप का क्या हाल होगा जिसकी दस बेटियां एक साथ विदा हो रही हों ?

नत्थु : हे भगवान !

कलाकार : यह मुझ से पुछो जिसकी यह दसों ही (तस्वीरों की तरफ़

इशारा) एक साथ जा रही हैं। दस–जिनकी माँ मैं हूँ और बाप भी। यह कल विदा हो जायंगी, मैं यूं सर पर हाथ रख कर बैठ जाऊंगा और इन दसों के दस डोले चले जायंगे, धीरे धीरे दूर चले जायंगे। यही तो तस्वीर बना रहा हूं। दस डोले–धीरे धीरे दूर, दूर, दूर चले जा रहे हैं। आओ देखो, (नत्थु उठता है) नहीं तुम बैठे रहो–जब पूरी हो जायगी फिर देख लेना। अब यूं ही बैठे रहो–ठीक वैसे ही जैसे उस दिन बैठे थे जब देवी दीदी का डोला जा रहा था, फूलों से सजा और तुम मोतियों की वर्षा कर रहे थे–लाखों मोती–टप टप–झर झर कल फूल ले आना, बहुत से फूल, इन्हें फूलों से लाद दूँगा। बेटियों को विदा के अवसर पर गहने कपड़े भी देते हैं। कल ले आऊँगा, यह सज धज के जायंगी।

नत्थू : बेटा !

कलाकार : (आवाज़ देता है) मोहनी ! ज़रा वह दीप तो उठा लाओ जो मैं कल लाया था, वह बड़ी अलमारी में रखे हैं, छोटे थाल में।

मोहनी : (अन्दर से) अच्छा जी।

कलाकार : (नत्थू को उठता देखकर) नहीं तुम बैठे रहो बाबा। (मोहनी से) उन्हें जला लाना। (नत्थू से) दुल्हन बिटिया अन्धेरे में नहीं रहती, यह अपशकुन होता है–होता है न बाबा ?

नत्थू : हाँ बेटा !

कलाकार : गौरां जब आयेगी, समझ जायेगी कि अब यह सचमुच जा रही हैं, वह खुश हो जायगी, वह यही चाहती है–यह यहां से चली जायं। पर है भी तो ठीक। बेटी है भी तो पराया धन। आज हमारी, कल पराई। दो वस्त्र, दो भूषण, दो आँसू, यही तो साथ ले जाती है। (मोहनी थाल में जलते हुए दीप लेकर आती है, कलाकार दीपों से तस्वीर सजाता है) तुम जाओ मोहनी (मोहनी जाती है–नत्थू उठता

है) तुम बैठे रहो बाबा, मैं बेटियों को खुद सजाऊंगा, अपने हाथों से। दो वस्त्र, दो भूषण, दो आँसू। देखो बाबा अब कैसी सुन्दर दिखाई दे रही हैं। दीप की लौ, मानो हाथ पांव में मेंहदी लगा दी हो। यह कटोरियां जैसे कानों के झूमके, यहाँ तक झूल रहे हैं।

मोहनी : (आकर) खाना तय्यार है, यहां ले आऊं ?

कलाकार : खाना, नहीं मैं नहीं खाऊंगा, मुझे भूख नहीं, तुम खा लो। बाबा के लिये रख देना।

नत्थू : यह क्या कहते हो बेटा ! कुछ खा लो दिन भर से ख़ाली पेट हो, ऐसी कैसी रात होय ख़ाली पेट नहीं रहना चाहिये।

कलाकार : बिटिया घर से विदा हो रही हो तो खाना किसे सूझता है, और यहाँ तो दस बेटियाँ एक साथ जा रही हैं, नहीं मुझे भूख नहीं। मेरी भूख तो इनके साथ चली गई।

[बाहर से गाने की आवाज़ आती है]

आवाज़ : (बाहर से) **बाबुल मोरा नैहर छूटो ही जाय** (कलाकार सुनता है)

कलाकार : सुनो बाबा सुनो, कोई गा रहा है "बाबुल मोरा नैहर छूटो ही जाय" यह बेटी के दिल की पुकार है। कितनी दुख भरी पुकार है यह, पर किसी ने माँ के दिल की पुकार न लिखी, यह न लिखा कि बाप के दिल पर क्या बिजलियाँ गिरती हैं (बिजली कड़कती है, बादल गरजते हैं और बांसरी बजती है। कलाकार परेशान होकर एकदम खिड़की की तरफ़ जाता है और चिल्ला कर कहता है) न जाओ सरजू !

नत्थू : क्या हुआ बेटा ?

मोहिनी : (बाहर आकर, घबराहट से) बाबू !

कलाकार : (सर पर हाथ रख कर बैठ जाता है) कुछ नहीं, (मोहनी से)

कुछ नहीं मोहनी तुम जाओ (नत्थू से) तुम बैठ जाओ बाबा। नहीं, जाओ तुम भी खाना खा लो — अच्छा नहीं, बस थोड़ी देर और बैठ जाओ मेरे पास, बस थोड़ी देर और। अकेले दम घुटता है।

नत्थू : यह तुम्हें क्या हो गया है बेटा ?

[फिर बादल गरजते हैं, बिजली चमकती है
और बांसरी की आवाज़ सुनाई देती है]

कलाकार : तुमने सुना बाबा, बादल गरज रहे हैं और दूर, दूर कोई बंसी बजा रहा है। उस दिन भी जब गौरां से मेरी शादी हुई इसी तरह बादल गरजे, बिजली चमकी और सरजू झंडी हाथ में लिये अहरबल की तरफ़ चला गया, बंसी बजाता हुआ– मैंने गौरां को उससे छीन लिया था न इसलिये। पर मैंने गौरां को उससे छीना नहीं — गौरां भी तो यही चाहती थी कि मेरी दुल्हन बने, यहाँ तक कि वह मेरे साथ मरने के लिये तय्यार हो गई। नहीं नहीं, मैंने उसे छीना नहीं, मैं तो उस दिन भी थोड़ी देर के लिये रूक गया, जी चाहा कि अपनी तस्वीरें उठा लूँ और वहाँ से चल दूँ। सरजू से कहूं तुम्हारी गौरां तुम्हें मुबारक हो, मैं उसे तुमसे छीनना नहीं चाहता, मेरी तस्वीरें मेरे लिये काफ़ी हैं, उन्हें तो कोई मुझ से छीन न सकेगा। पर आज, आज यह तस्वीरें भी छीनी जा रही हैं और गौराँ भी, और सारा वायुमण्डल मुझ पर हंस रहा है।

नत्थू : यह क्या कह रहे हो बेटा ! गौराँ को तुमसे कोई नहीं छीन सकता। यह तस्वीरें तो बेचनी ही थीं, मगर गौराँ को कौन छीन सकता है भला !

कलाकार : छीन सकता है। यह शहर, यह शहर का जादू, यह कपड़े, यह

पाउडर, यह पेन्ट, यह शहरी शानो शौकत, यह दिखावा, यह सारा वातावरण। जी चाहता है यहाँ से भाग जाऊं, गौरां को साथ ले के दूर, दूर, उन पहाड़ों में जा छिपूँ। पर वह पुजारी जी कहेंगे–तुमने वह पुजारीजी नहीं देखे–बड़े अच्छे हैं वह। यहीं शहरों में से किसी शहर में फ़िलोसफ़ी के प्रोफ़ेसर थे। शहरों से तंग आकर पहाड़ों में चले गये। मैंने उनसे कहा था कि आप बुज़दिलों की तरह भाग आये, आज वह मुझ से यही कहेंगे–क्यों तुम भी बुज़दिलों की तरह भाग आये। नहीं, नहीं, मैं नहीं भागूँगा। मैं इन शहरों से लड़ जाऊँगा, इन खुदगर्ज़ियों से भर पूर इस वातावरण से लड़ जाऊँगा। मैं कलाकार हूँ, मेरी कला मेरा शस्त्र है। यह अमोघ शक्ति है, यह प्यार की शक्ति है। यही मेरी शक्ति है। मैं हार नहीं सकता, मैं हारूँगा नहीं। क्यों बाबा! मैं गौरां को फिर से जीत लूँगा–जीत लूँगा न?

नत्थू : हाँ बेटा!

कलाकार : तुम बैठ जाओ बाबा! यहाँ, यूँ। तुम बड़े अच्छे हो बाबा, तुम मुझे कितना चाहते हो। पर गौरां को क्या हो गया है–पर यह मेरी ही भूल थी, मैंने ही उस कच्ची डाल को, उस सुन्दर, स्वच्छ, पवित्र और पुरातन धरती से उखाड़ यहाँ लाकर गाड़ दिया–जहाँ की मिट्टी अपवित्र है, हवा अपवित्र है, जल अपवित्र है, वायुमण्डल अपवित्र है। तभी तो उसकी शैली उसकी शीतलता, उस की मधुरता सब छिन्न भिन्न हो रहे हैं। पर मैं उन्हें छिन्न भिन्न नहीं होने दूंगा, मैं गौरां को छिन्न भिन्न नहीं होने दूंगा। वह मेरी कला की प्रेरणा है। उसे दुनियां की कोई शक्ति नष्ट भ्रष्ट नहीं कर सकती। वह गौरां है, वह गौरां ही रहेगी, हिमाचल की बेटी, पहाड़ों की आत्मा।

(खूब ज़ोर से बादल गरजते हैं, बिजली चमकती है और एक

बहुत ज़बरदस्त तूफ़ान आता है जिसकी वजह से तमाम बिजलियां बुझ जाती हैं और स्टेज पर अंधेरा हो जाता है, सिर्फ़ बिजली की चमक से कभी कभी रौशनी दिखाई देती है। कलाकार इसी चमक में तस्वीर बनाये जा रहा है और कहता जाता है)।

अब जितना जी चाहे गरज लो, मुझे तुम्हारी परवाह नहीं। मैं कला का उपासक हूं, मुझे तुम्हारी बिजलियाँ छू नहीं सकतीं, तुम्हारी आवाज़ें मुझे डरा नहीं सकतीं,। गरजो, जी भर कर गरजो। मैं तुम्हारी बिजलियाँ छीन कर अपने चित्रों में भर दूंगा।

(कुछ देर तूफ़ान जारी रहता है फिर धीरे धीरे थम जाता है और स्टेज पर रौशनी आजाती है। कलाकार जैसे थक सा गया हो, अंगड़ाई लेता है और ब्रुश रख देता है और कहता है।) आख़िर तूफ़ान थम गया। (घन्टा घर से बारह बजने के घन्टे सुनाई देते हैं। कलाकार ग़ौर से सुनता है और गिनता है)

एक, दो, तीन, चार, पांच, छः, सात, आठ, नौ, दस, ग्यारह, बारह। (नत्थू कुर्सी पर बैठा सो जाता है) यह क्या एक साथ घंटे बजने लगे, यह घन्टा घर की घड़ी ख़राब हो गई है, अभी शाम हुई, अभी बारह बज गये! तुम सो गये बाबा, और यह डोले भी जाते जाते कितनी दूर चले गये। सचमुच आधी रात हो गई। उठो बाबा! जा कर सो रहो, मैंने तुम्हें परेशान किया।

नत्थू : (आखें मलता हुआ उठा और चलते चलते) मैं बुड्ढा हो गया हूँ— जहाँ बैठा सो गया। तुम भी सो जाओ बेटा। रात कितनी बीत गई?

कलाकार : बारह बज गये।

नत्थू : (हैरत से) बारह बज गये! बिटिया नहीं आई?

कलाकार : बस आती ही होगी (हार्न की आवाज़ आती है,)

नत्थू : वह आगई बिटिया (खिड़की की तरफ़ जाता है और झांक कर)

वह इधर ही आ रही है। साथ कौन है? रमेश बाबू होंगे (दरवाज़ा खोलने के लिये बढ़ता है)

कलाकार : (रोक कर) ठहरो बाबा, मैं ख़ुद ही खोल दूँगा, तुम जाओ। (नत्थू रूका, और घर के अन्दर चला गया। कलाकार ने खिड़की से झांक कर देखा, फिर दरवाज़े के पास गया, उसे खोल दिया और फिर बन्द कर दिया, फिर खोल दिया बाहर से हंसी की आवाज़ आती है, कलाकार पीछे हटा और अन्दर घर में चला गया। गौरां हंसती हुई दाख़िल होती है – दरवाज़ा बन्द करने की कोशिश करती है मगर रमेश रोक देता है।)

गौरां : तुम बड़े नटखट हो, नहीं मैं तुम्हें अन्दर नहीं आने दूगीं। (रमेश ज़ोर से दरवाज़ा खोल कर दाख़िल होता है) तुम बड़े शैतान हो।

रमेश : बड़ा नहीं छोटा – बड़े साहब तो......

गौरां : आहिस्ता बोलो – वह सो रहे हैं।

रमेश : हाँ हाँ, कलाकार सो रहा है, कला जाग रही है, कितने जगा रही है।

गौरां : क्या कहा?

रमेश : कुछ नहीं। **"जाग रहे हैं पासबाँ, यार है ख़्वाबे नाज़ में"** देखिये न कला जाग रही है, कलाकार की पासबानी कर रही है जैसे सुहाग की रात दुल्हा दुल्हन की गोद में सर रख कर सो जाय और दुल्हन सजी सजाई, सोलह शृंगार सम्पूर्ण ज़रा सी आहट पाकर चौंक चौंक उठे कि दुल्हा की नींद उचाट न हो, पर यह बेचारी यह नहीं जानतीं कि दुल्हा वह नहीं हैं, वह तो उनके पितामह हैं–दुल्हा तो हम हैं।

गौरां : रमेश!

रमेश : झूठ है क्या। कल ही देख लेना, यह सजी सजाई दुल्हनें–यूँ छम

छमाती हुई, डोलों में बैठी, ठुमक ठुमक रमेश साहब के दौलत खाने, मेरा मतलब है गरीबखाने पर पहुंच जायंगी। साथ गुनगुनाती आयेंगी–यह गाती हुई–"**लो बाबुल घर अपना मैं तो चली परदेस**" (यह कहते कहते मरगोल में पहुंच जाता है और Easel (तख्ते) पर लगी हुई तस्वीर को देख कर कहता है) वाह! इधर देखिये मैंने झूठ थोड़े ही कहा था। हमारे कलाकार ने वही मन्ज़र नक्श कर के रख दिया है। दस डोले चले जा रहे हैं–दूर, दूर, और पितामह महाशय सर पर हाथ रखे बैठे हैं। भई खूब है।

गौरां : कितनी प्यारी है यह तस्वीर।

रमेश : यह और भी प्यारी हो जाती जो कहीं एक डोले में से आपकी छवि बाहर झांकती हुई दिखा देते।

गौरां : सच!

रमेश : तो क्या झूठ, यह एक ही तस्वीर पचास हज़ार की हो जाती।

गौरां : हटो, कविता कर रहे हो।

रमेश : काश मैं कवि होता, तो हज़ारों कवितायें तो आज ही लिख डालता।

गौरां : हूँ।

रमेश : सच! जब आप लेक वाले बंगले के बगीचे में चल रहीं थीं तो जी चाहता था कह दूं—Now heaven walks on earth—(नाऊ हैविन वाक्स ऑन अर्थ) बस ऐसी चलीं मानो राज हंसनी चल रही हो, और जब आप पार्टी में पहुंचीं तो क्या मिसेज़ श्रीवास्तव, क्या मिसेज़ भण्डारी, क्या कनकलता और क्या ऐकी, यूँ माँद पड़ गईं जैसे चाँद निकलते ही सितारे। हर मर्द की निगाह आपके साथ घूम रही थी, जैसे सूरज के साथ सूरजमुखी, और मोटा

ठप्पू काला कलूटा गनेश जब आपके साथ डांस करने लगा, बस यही जी चाहता था बे अख़्तयार कह दूँ :—

पहलूये हूर में लंगूर ख़ुदा की क़ुदरत।
ज़ाग़ की चोंच में अंगूर ख़ुदा की क़ुदरत॥

और अंगूर भी एक दाना नहीं, (गौरां की तरफ़ इशारा करके) पूरा एक खोशा। पर जब आप वह नाच नाचीं, तो क्या नाचीं—चाँद सितारे, ज़मीन आसमान सब आपके साथ घूम रहे थे, ज़िन्दगी मुतहरिक हो उठी, दरख़्तों की टहनियाँ झूमने लगीं, हवा चली और झील की सतह पर जलतरंग बजाती हुई गुज़र गई। लोगों की आँखें नाच रहीं थीं और आप उन आंखों में नाच रही थीं, मुझे तो बंगले की दीवारें तक झूमती दिखाई दीं।

[हल्का सा संगीत शुरू हुआ, गौरां धीरे धीरे पहाड़ी नाच नाचने लगी। फिर रमेश ने उसके हाथ थाम लिये और तब दोनों इंग्लिश ढंग से मिल कर नाचने लगे। कुछ देर बाद बादल गरजे और बिजली चमकी, गौरां को एक झटका सा लगा उसने अपनी तस्वीर की तरफ़ देखा जो चमक रही थी, लेकिन वह फिर नाचने लगी। दुबारा कुछ देर बाद फिर यही हुआ लेकिन रमेश ने उसे फिर साथ लेकर नाचना शुरू कर दिया। तीसरी मर्तबा ज़ोर से बादल गरजे और बिजली चमकी, छन्न से संगीत टूट गया और गौरां झटक कर रमेश से परे हट गई। रमेश ने पूछा]

रमेश : क्या हुआ ?

गौरां : (तस्वीर की तरफ़ इशारा करके) देखो, उधर देखो, वह तस्वीर, वह तस्वीर क्या कह रही है।

रमेश : (देखकर) तस्वीर ! तस्वीर ! कह रही है–रमेश से लिपट जाओ और इसी तरह नाचती रहो–ता क़यामत ।

[यह कह कर रमेश आगे बढ़ता है]

गौरां : (पीछे हटती हुई) यह मज़ाक नहीं है । देखो वह तस्वीर मेरी तरफ़ घूर घूर कर देख रही है । कह रही है गौरां ! तुम किधर जा रही हो, गौरां ! यह तुम्हें क्या होता जा रहा है, गौरां यह तुम्हें क्या होगया है, तुम पहाड़ों की आत्मा हो ।

रमेश : पहाड़ों की आत्मा My foot (माई फ़ुट) वह कह रही है तुम रमेश की आत्मा हो ।

गौरां : रमेश ! यह तुम क्या कह रहे हो ?

रमेश : ठीक ही तो कह रहा हूं तुम मेरी आत्मा हो, मेरी ज़िन्दगी हो, मेरा सब कुछ हो, तुम मेरी हो ।

गौरां : नहीं नहीं, यह झूठ है, यह ग़लत है । कहो यह झूठ है, कहो यह तुमने ऐसे ही कह दिया, कहो नशे में कह दिया ।

रमेश : नशे में ! हां नशे में, तुम्हारी जवानी के नशे में, तुम्हारी खूबसूरती के नशे में, तुम्हारे हुस्न के नशे में ।

[अपनी बाहों में लेने को आगे बढ़ता है]

गौरां : रमेश पीछे हट जाओ, दूर हो जाओ, मैं नहीं जानती थी तुम इतने बुरे हो ।

रमेश : बुरा हूँ । लेकिन उस वक़्त मैं बुरा न था जब तुम मेरे साथ पार्टियों में जाने के लिये बेताब हो उठती थीं । उस वक़्त मैं बुरा न था जब मेरे साथ नाचने के लिये बेक़रार हो जाती थीं । मैं बुरा न था जब मैं इन मामूली तस्वीरों के लिये पचास हज़ार का चेक दे रहा था ।

गौरां : मामूली तस्वीरें ! तुम इन्हें मामूली तस्वीरें कहते हो। तुम तो कहा करते थे यह दुनियां की सबसे बेहतरीन तस्वीरें हैं, शाहकार हैं, और पचास हज़ार तो क्या एक लाख भी हों तो इनके लिये कम हैं।

रमेश : हाँ कम हैं, इनके लिये नहीं—तुम्हारे लिये।

गौरां : रमेश !

रमेश : नहीं तो क्या, तुम समझती हो कि मैं यह पचास हज़ार इनके लिये दे रहा था। मुझे बेवकूफ़ समझा है तुमने, इन उल्टे सीधे रंगों में डुबोये हुए चिथड़ों को कौन पूछता है ? यह तो क़ीमत दी जा रही थी, आपकी, (गौरां की तरफ़ इशारा करता है) इस जिस्म की।

गौरां : रमेश ! (सर पकड़ कर बैठ जाती है)

रमेश : उठो गौरां ! बेवकूफ़ न बनो। ज़िन्दगी ऐसे मौके बार बार नहीं देती। अपनी जवानी, अपनी खूबसूरती एक आर्टिस्ट की Whims & fancies (विम्स एण्ड फैन्सीज़) पर कुरबान न करो। फिर ऐसा कलाकार जो तुमसे ज़्यादा अपने आर्ट से, अपने फ़न से, अपनी कला से प्यार करता है, जिसके लिये तुम एक मॉडेल हो और कुछ नहीं – मॉडेल – मॉडेल – मॉडेल।

गौरां : मॉडेल !

रमेश ! हाँ ! मॉडेल और कुछ नहीं। लेकिन मेरे पास तुम एक रानी की सी जिन्दगी गुज़ारोगी, दुनियां की तमाम खुशियाँ तुम्हारी होंगी, जहाँन के तमाम ऐश तुम्हारे क़दमों पर निछावर होंगे।

गौरां : दुनियां, खुशियाँ, ऐश ! नहीं नहीं, मुझे कुछ नहीं चाहिये, मैं मॉडेल बनूंगी, मैं उनकी लौंडी बनूंगी, पर तुम्हारी रानी नहीं बनूंगी। हाँ हाँ ! मैं रानी नहीं बनूंगी। मैं गौरां बनूंगी, वही गौरां, उनकी गौरां, यह गौरां (तस्वीर को बताती है)

रमेश : यह गौरां ?

गौरां : हाँ यह गौरां ! पहाड़ों की बेटी, पहाड़ों की आत्मा, एक कलाकार की प्रेरणा। मुझे पैसा नहीं चाहिये, दौलत नहीं चाहिये, ज़ेवर नहीं चाहिये, कुछ नहीं चाहिये। निकल जाओ, निकल जाओ यहां से। (रमेश सहमसा गया, धीरे धीरे दरवाज़े की तरफ़ जाता है) ठहरो, वह तुम्हरा चेक, उस पाप को अपने साथ लेते जाओ (चेक निकाल कर फाड़ देती है और रमेश के मुंह पर फेंकती है) तुम इन तस्वीरों को नहीं मेरी आत्मा को खरीदना चाहते थे, मुझे खरीदना चाहते थे। निकल जाओ यहाँ से, नहीं तो तुम जानते हो मैं पहाड़ों की बेटी हूँ।

रमेश : (पीछे हटता हुआ कहता है) आज तुम यह चेक फाड़ कर फेंक रही हो, कल तुम इसके टुकड़े मेरे दरवाज़े से चुनोगी क्योंकि कला बिना पैसों के पनप नहीं सकती। तुम्हारे कलाकार को पैसों की ज़रूरत होगी, पैसा मेरे पास है, पैसा मैं हूँ। फिर कला बिकेगी, कलाकार बिकेगा, उसकी प्रेरणा बिकेगी, तुम बिकोगी।

गौरां : मैं नहीं बिकुँगी, कला नहीं बिकेगी, कलाकार भी नहीं बिकेगा। कलाकार को पैसे की नहीं प्यार की ज़रुरत है और मैं उनकी झोली प्यार से भर भर दूगीं और फिर उन्हें किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं रहेगी। निकल जाओ यहाँ से, निकल जाओ (रमेश भाग जाता है। गौरां ज़ोर से दरवाज़ा बन्द करती है, उसकी निगाह तस्वीर पर पड़ती है, वह भाग कर तस्वीर के सामने आती है और कहती है) गौरां! (हाथ जोड़ कर रोते हुए) मुझे क्षमा कर दो गौरां! मैं तुमसे दूर हट गई थी। तुम उनसे कहो कि मैं वही हूँ जो तुम हो। मेरे ज़ाहिरी लिबास पर न जाओ, मुझे अब इसकी ज़रूरत नहीं। मुझे ज़ेवर नहीं चाहिये, मुझे पैसा नहीं चाहिये, मुझे कुछ नहीं चाहिये,

मुझे उनके चरणों में जगह चाहिये, उनसे कहो मैं उनकी हूँ, वही गौरां, यह गौरां, (तस्वीर की तरफ़ इशारा करती है।)

कलाकार : (आकर) गौरां ! गौरां !!

गौरां : बाबू ! (गौरां पहले हाथ जोड़ती है फिर कलाकार के चरणों पर गिर जाती है, कलाकार उसको उठा लेता है और फिर दोनों उस तस्वीर को देखते हैं। अन्दर से श्लोकों की ध्वनि आती है, फिर धीरे परदा गिरता है)

श्लोक :

आत्मा त्वं गिरजा मतिः सहचराः प्राणाः शरीरं गृहं ।
पूजा ते विषयोपभोगरचना निद्रा समाधिस्थितिः ।
संचारः पदयोः प्रदक्षिणविधिः स्तोत्राणि सर्वा गिरो ।
यद्यत्कर्म करोमि तत्तदखिलं शंभो तवाराधनम् ।
करचरणकृतं वाक्कायजं कर्मजं वा ।
श्रवणनयनजं वा मानसं वाऽपराधम् ।
विहितमविहितं वा सर्वमेतत्क्षमस्व ।
जय जय करुणाब्धे श्रीमहादेव शंभो ।

* ओ ३ म् *

KLAKAR is a one of the best books.

—: समाप्त :—

Therefore all boys must read it. Because we learn very much from it

' कलाकार ' मेरी दृष्टि में—

" हम बड़े भारी कलाकार हैं, जीवन के अंग-प्रत्यंग को हम कला की ही दृष्टि से निहारते हैं, हर वस्तु में कला की विद्यमानता देखने के लिये उत्सुक रहते हैं किन्तु अपनी आलोचना सुनकर हमें क्रोध आ जाता है और तब हम नहीं सोचते कि आलोचक की आलोचना में भी कोई कला है जो हमें आत्म-निरीक्षण की ओर ले जाती है। " —विद्याधर

पृथ्वी थियेटर्स के छठे नाट्यप्रयोग ' **कलाकार** ' ने आज के शहरी विकल मानव मन को स्पर्श किया है,—बिलकुल नये ढँग से।

पश्चिमी सभ्यता के दिखावटी आडम्बर भरे सम्मोहन के पीछे छिपा हुआ पाप का पिशाच, आज संसार के सत्यम् को, शिवम् को और सुन्दरम् को जबरन् गला घोट कर मार रहा है। एक झूठी कुहेलिका का माया-जाल मानव के आत्मिक सौन्दर्य्य और मानसिक शान्ति-हरिणी को फाँसकर, अपनी लालसा-पूर्ति के लिये मानव-संस्कृति का प्राण-हरण कर रहा है। ' कलाकार ' के कलाकारों ने अमृत के अभिलाषियों को बड़े स्पष्ट और प्रकाशमान कथानक की ' सर्च्च लाइट ' द्वारा जहाँ उस पाप-मारीच का असली रूप दिखा दिया है, वहाँ बड़ी बहस और हृदय-मस्तिष्क के एक द्वन्द्व के उपरान्त इस परम सत्य की घोषणा भी कर दी है कि आत्मा का वाणी-वेद सुनकर आडम्बर भरी माया से ऊपर उठना ही मानव के लिये क्षुद्र से महान् बनने का मार्ग है।

' कलाकार ' नाटक के दर्शक या पुस्तक के पाठक अपनी वर्तमान अवस्था पर कुछ देर सोचने के लिये बाध्य होंगे।

" ज्ञान-नौका के बिना मानव का विस्तार नहीं " यही चेतावनी भारत का ऋषि, सृष्टि के आदि से लेकर आज तक मानव को ऊपर हाथ उठाकर देता आ रहा है। इसीलिये यह ऋषि कवि है—कलाकार है। इसने आत्मा की आवाज़ को ही 'वेद' का नाम दिया है और प्रकृति की पुकार को—मनकी हठ

को-एक गन्दा गाना सिद्ध किया है। आत्मा की आवाज़ मानव को सहारा देकर गौरी-शंकर की ऊँची चोटी पर ले जाती है, जहाँ मृत्यु पर विजय मिलती है और प्रकृति की पुकार देह को ही सब कुछ समझकर, इसलिये उसे कीमती कफ़न में लपेटकर ज़मीन के अन्दर घंसने की प्रेरणा दे रही है कि आत्मा-परमात्मा कुछ नहीं, जो कुछ है मानव है-उसका अंहकार है या है विषय-विलास लीला- यानी 'पैराडाइज़' के बदले क़ब्रगाह।

'कलाकार' नाटक के रचयिता ने इसीलिये जीवन चित्र के दो रुख़ अंकित किये हैं। सामने का रुख़ वह है जहाँ सादगी है और सच्चाई के भीतर प्रेम-भगवान् क्रीड़ा कर रहे हैं। वहाँ आत्मा शिवम् है, मानव-बुद्धि उनकी पत्नी गिरिजा है। मानवके प्राण ही शिव-सहचर हैं, और शरीर ही शिव मंदिर है। इस शरीर मन्दिर की प्रगति ही मानो उस देवता की प्रदक्षिणा है। वहाँ के विषय देवभोग बन गये हैं। उपभोग नवीन शय्या-रचना स्वरूप है। निद्रा ईश्वरीय ध्यान या समाधि हो गई है, और मानव बातचीत ही जैसे देवता को जाग्रत प्रसन्न करने वाली स्तुति है।

किन्तु ग़ज़ब! इस दार्शनिकता को समझेंगे कितने लोग? पृथ्वी थियेटर्स ने 'दीवार,' 'पठान,' 'ग़द्दार' और 'आहुति' द्वारा क्या ऐसे योग्य दर्शक पैदा कर लिये हैं, कि 'कलाकार' के इस दिव्य सन्देश को ग्रहण कर सकें? या ग्रहण करके पचा सकें? अगर पृथ्वीराज इस प्रयोग में सफल हो गये, तब तो निश्चय ही उनकी जय है! लेकिन मुझे शक है। हालाँ कि उन्होंने नाटक के संवादों को इसी ढंग से सजाया है कि जहाँ हिन्दुओं की हिन्दी है, वहाँ मुसलमानों की अरबी-फ़ारसी है, और पश्चिमी विचारों को प्रस्फुटित करने वाली अँगरेज़ी भी है।

और एक कमज़ोरी भी है और वह यह कि इस बार नाटककारों ने रस-परिपाक करने में, अपने पिछले नाटकों की सी सफलता नहीं पाई। उनका कलाकार, उनका सरजू, उनकी 'गौरां' कुछ ऐसे अधूरे अटपटे बन गये हैं जिनका आदि तो है बड़े कलात्मक ढंग से किन्तु अन्त एकाएक-अप्राकृतिक सा हो गया है कि उन्हें दर्शक की सहानुभूति नहीं मिलती।

हाँ नाटककारों ने नाटक का अन्त सँभाल दिया है और इससे दर्शक या पाठक को असन्तोष नहीं होने पावेगा। और वह यह कि भोग में रोग है, मृत्यु है, और सन्तोष में आराम है, अमृत है। इस मध्यबिन्दु को मद्दे नज़र रखकर मानव जहाँ तक आगे बढ़ आया है, उसके बाद की यात्रा जारी रखे। सुफल की प्राप्ति होगी। क्योंकि कर्मयोग ही कल्याण है।

किन्तु यह अन्त भी प्रतीकात्मक या 'सिम्बोलिक' सा होकर रह गया है। अंगरेज़ी के महान् कवि और नाटककार 'ऑस्कर वाइल्ड' के 'दि पिक्चर ऑव डोरियन ग्रे' नामके उपन्यास में भी एक कलाकार है और एक है उसका दार्शनिक मित्र लार्ड हेनरी। दोनों ही अपने गुणों के माहिर हैं। वहाँ दोनों का चरित्र-चित्रण बड़ा स्पष्ट हुआ है। दोनों ने ही मानव-जीवन और वर्तमान समाज पर अपनी-अपनी सम्मतियाँ दी हैं। 'कलाकार' के चित्रकार और पूजारी, जब उन्हीं की तरह वर्तमान सभ्यता और वर्तमान समाज पर अपने विचार प्रकट करने लगे, तो मेरी आँखों के सामने ऑस्कर वाइल्ड के ही उक्त दोनों चरित्र सजीव होकर आ खड़े हुए। किन्तु 'कलाकार' और 'दि पिक्चर ऑव डोरियन ग्रे' में कोई साम्य नहीं है।

इतना कहकर मैं पृथ्वी थियेटर्स के कलाकारों को निरुत्साहित नहीं करना चाहता हूं। अभी वे साधना के पथ पर हैं, सिद्धि-प्राप्ति के मार्ग पर वे अग्रसर हो रहे हैं और बिना किसी बड़े आश्रय के। अगर हमारी हार्दिक शुभकामनाएं तथा पूर्ण सहयोग **पृथ्वीराज** के पीछे रहा, तो निश्चय ही **पृथ्वी थियेटर्स** राष्ट्र का महान् गौरव होकर रहेगा। वह एक स्थायी सम्पत्ति होगी भारत की। यह ध्रुव सत्य है।

बम्बई
सितम्बर '५१

नरोत्तम व्यास

विश्व का श्रेष्ठ कलाकार पृथ्वीराज

पृथ्वीराज भारत ही का नहीं, विश्व का श्रेष्ठ कलाकार है। दुःख की बात इतनी ही है कि उसकी कला का पूर्ण विकास नहीं हो रहा है, परन्तु इसके लिये यह कलाकार ज़िम्मेदार नहीं है, देश ज़िम्मेदार है। देश ने कला को विलास और मनोरंजन का माध्यम बनाया हुआ है, वह उसके जीवन को प्रेरणा देने की वस्तु नहीं है, इसी से देश के कलाकार को कला के विकास की बात पीछे सोचनी पड़ती है, पहिले उस में मनोरंजन और विलास का ध्यान रखना पड़ता है। इसी से जिस कलाकार में कला का सम्पूर्ण उद्गम है वह भी अपनी कला का पूर्ण विकास नहीं कर पाता।

पृथ्वीराज में कला के मूलभूत तत्त्व विराजमान हैं। वह भावुक दृष्टि से विश्व के जीवन को देखता है, विश्व की सम्पदा के प्रति वह उदासीन है, उसमें महत्त्वाकांक्षा नहीं है, अपनी ही उत्पन्न करने वाली वेदना से खेलना उसका सर्व प्रिय मनोरंजन है। उसके नेत्रों में एक ऐसी जिज्ञासा है जो केवल तत्त्ववेत्ताओं के नेत्रों में पाई जाती है। वह विश्व के प्रत्येक मनुष्य को शंका की दृष्टि से देखता है, और विश्व के प्रपंच में उसे कोई फांस न ले इसके लिये वह भरसक चौकन्ना रहता है। इन्हीं सब कारणों ने उसे विश्व का श्रेष्ठ कलाकार बनाया है।

जब वह अभिनय करता है तभी उसका व्यक्तित्व व्यक्त होता है। अपने वास्तविक जीवन में वह सदा खोया हुआ व्यक्ति है। अभिनय में वह अपने से पृथक हो जाता है। जिस पात्र का वह प्रतिनिधित्व करता है, उसके मूल अवयव उसमें आजुटते हैं और वह केवल भाव, भाषा और अभिव्यञ्जना ही में नहीं, व्यक्ति की इकाई के रूप में भी पात्र का प्रतिनिधित्व करता है।

आज कला का टेकनिक बहुत कुछ भौतिक हो गया है। रजत पट ने ख़ास तौर पर उसे भौतिक रूप दिया है। रजत पट पर सच्चा अभिनय धारावाहिक रूप में नहीं किया जाता, उसमें अभिनय अनेक प्रकार के यान्त्रिक और औपचारिक जगड्वाल जंजाल में फंस जाता है। इसीसे कला-

कार की कला जड़ मशीन की भांति जिसमें अनेक पुर्जे प्रथक् भिन्न भिन्न कार्य करते हैं, कार्य करती है। आज दुनियां के महानतम कलाकार इसी यान्त्रिक और औपचारिक विवशता के कारण पराधीन बने हुए हैं। परन्तु पृथ्वीराज ऐसा कलाकार नहीं है। वह यान्त्रिक विवशता में बद्ध नहीं है, न उसकी कला यांत्रिक है। वह अपने जीवन केन्द्र में शुद्ध कलाकार है। इसी से वह अपने व्यक्ति में इस क़दर रमा हुआ है कि स्टेज और स्क्रीन को छोड़कर वास्तविक पथ्वीराज के आप कभी दर्शन ही नहीं कर सकते।

आज हमारा देश भूखा है, भूख में कला प्यारी नहीं लगती, भोग प्यारे लगते हैं–भोग इन्द्रियों के विषय हैं। उनसे इन्द्रियां पनपती हैं। परन्तु कला से आत्मा का शृंगार होता है, इस लिये कला के लिये शुद्ध सतोगुण चाहिये, जग मग करता हुआ सतोगुण।

कला और विज्ञान ये दोनों मानव जीवन की परंपरागत सम्पत्ति हैं। जिस देश में कला और विज्ञान विकसित हैं, वही देश सम्पत्तिवान है। भारत में कभी सम्पत्ति का अटूट भण्डार था, उसकी कला और विज्ञान की सम्पत्ति अटूट थी, तब यह भूखा देश न था। भूख की वेदना उसने देखी भी न थी। परन्तु आज वह बात नहीं है। फिर भी देश की सम्पदा को क़ायम रखना होगा। देश की कला को उजागर करना होगा। पृथ्वीराज की कला उसकी अपनी वस्तु नहीं है। देश की सम्पत्ति है। देश की उस सम्पत्ति की रक्षा करनी चाहिये। उसे प्रगतिशील बनाये रखने के लिये उसमें प्राण देने चाहिये।

यह सच है कि आज हमारा देश भूखा है, परन्तु यह भी सच है कि देश के सब लोग भूखे नहीं हैं। जो भूखे नहीं हैं, वे पृथ्वीराज की कला को जीवन ज्योति दान कर सकते हैं। परन्तु ऐसा करते वे दीखते नहीं।

देश के श्रीमन्त सेठ साहूकार कला के साथ विलास करने के अभ्यस्त हैं। वे उस से आत्मा की भूख नहीं मिटाना चाहते–उसकी ख़रीद फ़रोख्त करके उसके ब्याज बट्टे से अपनी जेबें भरना चाहते हैं। पृथ्वीराज कहता है ए धनी मानी साहूकारो ! यह मेरी कला तुम्हारी आत्मा को जीवन के रहस्य

दिखाती है, ज़रा सा तेल दो जिससे दीपक जलाकर उसका सौष्ठव तुम्हें दिखा दूं ! तो देश के धनी मानी साहूकार कहते हैं। ठहरो, ठहरो, हम एक लिमिटेड कंपनी॰ बनाकर तुम्हारे तेल के लिये पैसे जुटाते हैं। हमारी कम्पनी रजिस्टर्ड हो जाने दो, हमारा आफ़िस खुल जाने दो। तब हम तुम्हें पैसे देंगे, तुम तेल भी ख़रीदना, रोटी भी ख़रीदना और हमें भी ख़रीदना— तुम्हारी कला तब तक हमारी प्रतीक्षा करती रहे।

परन्तु कभी कला ने, न कलाकार ने किसी की प्रतीक्षा की है ? अनुकूल वातावरण न पाकर जैसे कला मुर्झा कर सूख जाती है उसी भांति कलाकार भी जीवन की इतिश्री कर देता है। इस से कलाकार की तो इतनी ही हानि होती है कि वह नहीं रहता— परन्तु यह उस की अपनी हानि नहीं है, देश की हानि है, देश का दुर्भाग्य है।

देश को प्यार करने वाले ऐसे पुरुष प्रत्येक काल में होते रहे हैं जिन्हों ने कला के दिव्य आलोक से जीवन को सजाने के लिये जीवन— धन सब कुछ स्वाहा कर दिया है। ऐसे ही महापुरुषों के प्रभाव से ऐलोरा में, एजेन्टा में, आबू के मन्दिरों में, ताज में, और ऐसे ही स्थानों में हम कला के अमर रूप का दर्शन पाते हैं। आज भी ऐसे पुरुषों का अभाव नहीं होना चाहिए। उन पुरुषों को आज आकर पृथ्वीराज जैसे अमर कलाकारों को हाथ बढ़ाकर सहाय देना चाहिए। उन्हें ऐसी व्यवस्था करनी चाहिए कि ऐसे कलाकारों की कला का लाभ देश के सब अबाल वृद्ध ले सकें।

पृथ्वीराज के पास ख़रीदे हुऐ या किराए के सहकारी नहीं हैं। उस की अपनी शिष्य मण्डली है। मैंने देखा है, पृथ्वीराज और उस मण्डली का सम्बन्ध पारिवारिक पवित्रता और एकता में बद्ध है। वह परिवार के प्रधान की भांति स्वयं भूखा रहकर उनका पेट भरने की चिन्ता में परेशान रहता है।

मैंने जो देखा है वही कहता हूं, बम्बई आते ही मैंने सुना कि महान् कलाकार पृथ्वीराज मज़दूरी कर रहा है। मज़दूरी के पैसों की उसे ऐसी सख़्त ज़रूरत है कि उसे जो मज़दूरी दे उसी के आगे हाथ पसारना पड़ता है। क्योंकि उस की कला जंज़ीरों से बंधी हुई है, उसे अपनी कला के परि-

वार को इस मज़दूरी के पैसों से पालना पड़ता है। मेरे मन में प्रश्न हुआ क्या ये मज़दूरी देनेवाले उसके आदर्शों का पालन करते हैं? क्या ये उसकी कला की रक्षा कर सकते हैं, उसके मान को अक्षुण रख सकते हैं? मैं मज़दूरी देनेवालों से यह कभी आशा नहीं कर सकता—मैं स्वयं भी एक ऐसा ही मज़दूर हूं, और भुक्तभोगी हूं। मैंने कलाकार से मुलाक़ात की। देखा—अपनी दोनों टांगों को एक ऊंची कुर्सी पर रखे हुये वह अपनी शारीरिक वेदना पर पर्दा डाले—शूटिंग में व्यस्त है। एक के बाद एक आदेश और सूचनाऐं वह देता जा रहा है। और पास जाकर देखा—दोनों टांगें सूज गई हैं, पैरो में घाव हो गये हैं, उनमें पट्टियां बंधी हैं। छू कर देखा—दोनों टांगें बर्फ़ के समान ठण्डी और पत्थर की भांति सख्त़ थीं।

मैंने पूछा—क्या आप चल फिर सकते हैं? वह हंसा—उसने मेरे प्रश्न की उपेक्षा की—तभी मैंने देखा वह उठकर बड़े बड़े क़दम बढ़ाता हुआ एक अभिनेत्री को कुछ आदेश देने के लिये चला गया।

और इसके बाद ही स्टेज पर हास्य—अभिनय, उछल कूद—वीर शृंगार, करुणा और शान्त रस की बौछारें बरसती देखीं।

क्या कलाकार आत्मघात कर रहा है? मैं कहता हूं, हाँ, हाँ, वह आत्मघात कर रहा है। किसके लिये? कला के लिये, और इसकी ज़िम्मेदारी किस पर है, सारे देश पर। सट्टे और चोरबाज़ारी की कमाई से जिन्होंने सतखण्डी अटालिकाऐं खड़ी की हैं, वे क्यों नहीं उस कलाकार के आत्मघात की ओर नज़र उठाकर देखते? निरर्थक विलास के समुद्र में जिनका पैसा पानी की भांति बह रहा है, क्या उनके हृदय में इस कलाकार के लिये हमदर्दी है? चीख़ है, वेदना है?

यदि हाँ, तो उन्हें इस कलाकार के जीवन को आशीर्वाद की वर्षा से वृद्धिंगत करना चाहिये, हाथ बढ़ाकर उसे सहाय देना चाहिये। उसकी कला को अपनी घन छाया में पनपने की व्यवस्था करनी चाहिये। ऐसा यदि देश के श्रीमन्त सेठ साहूकार करेंगे तो वे अपनी ही कमाई को धन्य करेंगे।

बम्बई
१५ जुलाई १९५१

(आचार्य) **चतुरसेन शास्त्री**

साहित्य प्रेमी बन्धुवर्य !

हमारे यहां स्टेज पर खेलने योग्य नाटकों की कितनी कमी है—इसे प्रत्येक साहित्य रसिक अनुभव करता है। आदरणीय **श्री पृथ्वीराज जी** ने इस अभाव की पूर्ति के लिये जो परिश्रम, तप और त्याग किया है वह अद्वितीय है। वह आज भारतवर्ष के सुप्रसिद्ध, अत्यन्त ही सफल, कलाकार हैं, जिन्हें स्क्रीन और स्टेज पर समान अधिकार है। प्रत्येक कला प्रेमी उन पर उचित गर्व करता है। कला की रक्षा और सेवा तथा विकास-विस्तार में उन्होंने जो कार्य किया है वह युगान्तरकारी है और अत्यन्त ही प्रशंसनीय तथा अनुकरणीय है। वह लाखों रुपयों की हानि सहकर भी अपने आदर्श पर दृढ़ हैं और अपने उद्देश्य की ओर उत्साह के साथ अग्रसर हो रहे हैं। आज उत्तर से दक्षिण तक और पूर्व से पश्चिम तक देश में चारों ओर उनका यश और कीर्ति फैल रही है।

अब **पृथ्वी थियेटर** ने अपना प्रकाशन भी नियमित रूप से आरंभ कर दिया है। तीन पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं "आहुति" और "I go South with Prithviraj and his Prithvi Theatres." तथा "कलाकार"। हम चाहते हैं कि अपने शेष ड्रामे भी शीघ्र ही प्रकाशित कर दें। किन्तु हमारी इस इच्छा की पूर्ति आपके सहयोग पर ही निर्भर है। आशा है कि वह हमें अवश्य ही प्राप्त होगा।

पृथ्वी थियेटर्स-प्रकाशन

"आहुति"

आहुति–लेखक श्री लालचन्द्र 'बिस्मिल', प्रकाशक पृथ्वी थियेटर्स प्रकाशन, रायल ऑपेरा हाऊस, बम्बई नं. ४, पृष्ठ १६ + १६८; कागज़ छपाई बढ़िया। मूल्य ४।) रु.

श्री पृथ्वीराज कपूर चित्र-पट संसार के प्रसिद्ध कलाकार हैं। वे 'विक्रमादित्य' का सफल अभिनय करके अमर ख्याति लाभ कर चुके हैं। किन्तु चित्र-सृष्टि की अपेक्षा उन्हें रंगमंच पर प्रत्यक्ष अपने कला प्रदर्शन में विशेष रुचि रही है। इसी कारण वे पिछले कुछ वर्षों से अपने फ़िल्म–कलाकार के नाते कमाये हुए लाखों रुपये खर्च कर 'पृथ्वी-थिएटर्स' के द्वारा इस कला की सेवा में लगे हुए हैं। उन्होंने अब तक शकुंतला, दीवार, गद्दार और पठान के बाद यह पांचवां नाटक 'आहुति' के नाम से प्रकाशित किया है। यह नाटक पंजाब विभाजन के पश्चात् होने वाली रोमांचक घटनाओं का निदर्शन कराता है। इसमें लगभग ३० पात्रों द्वारा ऐसी मार्मिक घटनाओं का प्रदर्शन किया गया है, जिसे पढ़ते पढ़ते ही पाठकों की आंखों से आंसू बरसने लग जाते हैं। ऐसी दशा में प्रत्यक्ष रंगमंच पर अभिनीत होते देखकर तो दर्शकों की जो दशा होती होगी उसकी सहज ही कल्पना की जा सकती है।

इसमें पंजाब के दो धनिक परिवारों के परस्पर सम्बन्ध की चर्चा करते हुए अंग्रेज़–भक्त रायसाहब के द्वारा देश प्रेमी रामकृष्ण नामक सज्जन के साथ उनकी अपहृता कन्या के वापस आने और रायसाहब के पुत्र से पहले ही उसकी सगाई होजाने पर भी बाद में लोक-भय से इन्कार कर देने एवं अंत में दोनों लड़के-लड़कियों के आत्महत्या कर लेने की घटना का बड़ी ही कुशलता से चित्रण किया गया है। पढ़ते समय पाठक यही अनुभव करता है मानों वह ये सब घटनाएँ प्रत्यक्ष स्वाभाविक रूप में अपने सामने ही होते देख रहा है।

नाटक की इस सफलता का एक कारण यह भी है कि इसमें कथाकार

बिस्मिल एवं कलाकार **पृथ्वीराज** दोनों ने स्वानुभूति एवं तादात्म भाव रखकर इसका निर्माण किया है। पुस्तक के अंत में श्री० पं. नरोत्तमजी व्यास की 'प्रशस्ति,' श्री आचार्य चतुरसेन लिखित 'दो शब्द' एवं श्री० जगदीश चन्द्र चतुर्वेदी का 'आहुति एक युग संदेश' शीर्षक आलोचनात्मक लेख, दिये गये हैं; जिनसे कलाकार पृथ्वीराज एवं उनकी कला का सम्यक् परिचय प्राप्त हो सकता है। नालन्दा-प्रकाशन के श्री द्वारका प्रसाद जी 'सेवक' के प्रोत्साहन एवं तत्वावधान में प्रकाशित होने से यह पुस्तक एक उत्तम कलाकृति के रूप में सामने आयी है। इस नाटक की भाषा अपने विषय के अनुरूप एवं पंजाबी पात्रों के मुख से शोभा देने वाली होते हुए भी अन्य हिन्दी भाषाभाषी प्रान्तों की जनता के लिए कुछ अटपटी-सी हो गई है। इसी प्रकार इसमें यत्रतत्र पिता-पुत्री आदि में होने वाले विनोद भी कुछ मर्यादा से परे के प्रतीत होते हैं। साथ ही पूरा नाटक केवल तीन ही दृश्यों या अंकों में समाप्त कर दिया जाने से इसमें विशेष पर्दे आदि की आवश्यकता नहीं होती। हिन्दी में कदाचित यह अपने ढंग का पहला ही नमूना है। और जैसा कि पुस्तक के आवरण-पृष्ठ पर एक जगह लिखा गया है, श्री पृथ्वीराज कपूर ही ऐसे एक भाग्यशाली अभिनेता हैं, जिन्हें इस नाटक को लगातार ६०० बार अभिनीत करने का सौभाग्य प्राप्त हो सका है। अभी पृथ्वी-थिएटर्स का यह पहला ही नाटक प्रकाशित हुआ है, आशा है शेष चारों नाटक भी शीघ्र प्रकाशित होंगे। हम इस उत्तम पुस्तक का सहर्ष स्वागत करते हैं। मूल्य कुछ अधिक है।

(ज्योतिषाचार्य) **श्री सूर्य नारायण व्यास**

"विक्रम"

पृथ्वी थियेटर्स की नवीन कृति 'कलाकार'

आज के अभारतीय फ़िल्मी क्षेत्र में **पृथ्वीराज कपूर** उन कलाकारों में से हैं जो युग पर एक स्थायी छाप डाल रहे हैं। कला की दृष्टि से उनका-सा अभिनेता, उनके अभिनय विशेष के क्षेत्र में, अभी तक नहीं हुआ; किन्तु उनकी इससे भी बड़ी महत्त्वपूर्ण देन है भारत की खोयी हुई नाट्य-कला का पुनरुत्थान। आज के युग में पृथ्वीराज कपूर ने अथक श्रम, पूंजी और लगन के साथ भारत की नाट्य-कला का पुनरुत्थान और विकास किया है। देश व्यापी दौरों से उन्होंने जनता में रंगमंच की प्रेरणा जाग्रत की है। और, अब वह दिन दूर नहीं है जब भारत में भी विलायत के समान, फ़िल्मों से अधिक लोकप्रिय नाटक होंगे। पृथ्वीराज कपूर के **पृथ्वी थियेटर्स** की सबसे बड़ी विशेषता यह रही है कि उसने अपने 'दीवार', 'पठान', 'गद्दार' और 'आहुति' नाटकों द्वारा भारत में देश भक्ति पूर्ण राजनैतिक चेतना भरी है और नयनाभिराम 'शकुन्तला' से पौराणिक भारत के अतीत गौरव को चित्रित किया है। इस सेवा और श्रम से जहां पृथ्वीराज को कीर्ति की अमरता मिली है वहां उन्हें आज के वणिकवादी युग में काफ़ी नुक़सान भी हुआ है। नाटकों की लगन से, वे फ़िल्मों में काम कर दूसरे अभिनेताओं के समान लाखों रुपये नहीं कमा सके और 'पृथ्वी थियेटर्स' में ही अपना थोड़-बहुत धन भी खपा डाला। यही नहीं, उन्हें इस से भी बड़ी क़ीमत देनी पड़ी है भारत के फ़िल्म–जगत में। 'पृथ्वी थिएटर्स' के नाटकों द्वारा साम्प्रदायिकता के विरुद्ध प्रचार होने से पृथ्वीराज कपूर और उनके पुत्र राज कपूर पाकिस्तान के शत्रु मान लिये गये हैं। जिन फ़िल्मों में उनका अभिनय हो, उनपर पाकिस्तान में एक प्रकार का प्रतिबन्ध है। और, इस प्रतिबन्ध के कारण भारत के स्वार्थी फ़िल्म–निर्माता इन बेजोड़ कलाकारों को अपनी फ़िल्मों में लेते हुए हिचकते हैं। पृथ्वीराज को तो, शान्ताराम को छोड़कर अन्य किसीने लेने की हिम्मत ही नहीं की है। यह है इस वणिकवादी भारत में सेवा और साधना का फल।

आगामी ८ सितम्बर १९५१ से पृथ्वीराज अपना नया नाटक पेश कर रहे हैं। नाटक का नाम है '**कलाकार**'। इस नाटक में आधुनिक वणिकवाद और शोषित कलाकार के जीवन-मरण के संघर्ष की कहानी है। नये युग के इस नये नाटक का अभिवादन करते हुए हमें हर्ष होता है।

— शाखाल
"**नवभारत टाइम्स**"

'**कलाकार**' सम्पूर्ण ड्रामा छपकर तयार है। सजिल्द का मूल्य है ३) रु.